Resource: Gateway Simplified Text (Hindi)

License Information

Gateway Simplified Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Simplified Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Simplified Text (Hindi)

John 1:1

1 जगत की उत्पत्ति से पहले ही वचन अस्तित्व में था। वचन
परमेश्वर के साथ था। वचन ही परमेश्वर था।

2 जगत के अस्तित्व में आने से पहले ही वह, अर्थात् वचन,
परमेश्वर के साथ था।

3 परमे्श्वर ने उसके द्वारा सब वस्तुओं की रचना की। परमेश्वर
ने उसके साथ मिलकर इस जगत की हर एक वस्तु की रचना
की।

4 वचन अनन्त जीवन देता है, और वह अनन्त जीवन {परमेश्वर
की भली और सच्ची} ज्योति है जिसे वह मनुष्यों पर {प्रकट
करता है}।

5 परमेश्वर ने {अपनी भली और सच्ची} ज्योति को इस दुष्ट
संसार पर भी प्रकट किया, और इस दुष्ट संसार ने उसे ग्रहण
नहीं किया।

6 परमेश्वर ने यूहन्ना नामक एक व्यक्ति को भेजा {जिसे यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले के नाम से भी जाना जाता था}।

7 वह {यीशु} के बारे में, {जो} ज्योति है, लोगों पर प्रचार करने
के लिए आया था। {उसने इस बात का प्रचार किया} ताकि हर
एक जन उसकी {गवाही} के माध्यम से उस ज्योति पर भरोसा
करे।

8 यूहन्ना स्वयं तो वह ज्योति नहीं था, परन्तु वह इसलिए आया
था ताकि लोगों को उस ज्योति के विषय में बताए।

9 वह सच्ची ज्योति {यीशु} था, जिसने परमेश्वर की सच्चाई और
भलाई को हर एक जन पर प्रकट किया। वह ज्योति {वही था}
जो संसार में आने वाली थी।

10 वचन संसार में था, और उसने जगत की रचना की। फिर
भी, संसार के लोगों ने उसे नहीं पहचाना।

11 वह वचन उसके अपने लोगों, {यहूदियों,} के पास आया,
परन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

12 परन्तु हर उस जन को जिसने उसे ग्रहण किया और उस
पर भरोसा किया उसने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार
प्रदान किया।

13 परमेश्वर की ये सन्तानें आत्मिक रूप से सामान्य मानवीय
जन्म के माध्यम से पैदा नहीं हुए थे, और न मानवीय इच्छा के
द्वारा, और न उनके पिताओं की इच्छा के द्वारा आत्मिक रूप
से नहीं जन्मी थीं। बल्कि, वे परमेश्वर के द्वारा आत्मिक रूप से
जन्मी थीं।

14 वचन एक वास्तविक मानव बन गया और अस्थाई रूप से
यहाँ पर जीवनयापन किया {जहाँ पर हम जीवन व्यतीत करते
हैं}। हम ने उसे उसकी महिमामय प्रकृति का प्रदर्शन करते
हुए देखा है। {अर्थात} उस अद्वितीय पुत्र की महिमामय प्रकृति
जो पिता के पास से आया है। वह परमेश्वर के दयालु कार्यों
और सच्ची शिक्षाओं पर पूरी तरह से अधिकारी है।

15 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला लोगों को वचन के विषय में बता
रहा था। और {जो उसके आसपास थे उन पर} वह चिल्लाया,
“मैंने तुम को बताया था कि मेरे बाद कोई आएगा {और यह
कि} वह मुझ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वह मुझ से
बहुत पहले अस्तित्व में था।”

16 {हम जानते हैं कि वचन ने पूरी तरह से परमेश्वर के दयालु
कार्यों और सच्ची शिक्षाओं को धारण किया है} क्योंकि जो पूरी
तरह से अधिकारी था उसके कारण से हम सब को लाभ
पहुंचा, और एक के बाद एक भले कार्यों {से लाभ मिला है}।

17 {ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी
व्यवस्था {इस्राएलियों को} दी थी। परन्तु परमेश्वर के दयालु
कार्य और सच्चा सन्देश यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण अस्तित्व में
आए।

18 कभी भी किसी भी जन ने परमेश्वर को नहीं देखा है। परन्तु
वह अद्वितीय यीशु ही परमेश्वर है। वह परमेश्वर पिता की
समीपता में है, और उसने स्वयं पिता को प्रकट भी किया है।

19 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यही गवाही दी थी जब यहूदी
अगुवों ने यरूशलेम नगर से कुछ याजकों और लेवियों को
उससे यह पूछने के लिए भेजा था कि "तू कौन है?"

20 {उस समय} यूहन्ना ने दृढ़तापूर्वक मान लिया कि—"मैं
मसीह नहीं हूँ!"

21 तब उन्होंने उससे पूछा, "{यदि ऐसा है तो,} फिर तू है कौन?
क्या तू एलिय्याह है?" उसने कहा, "नहीं।" उन्होंने फिर से
पूछा, "क्या तू वही भविष्यद्वक्ता है {जिसके बारे में परमेश्वर ने
कहा था कि वह आएगा}?" यूहन्ना ने उत्तर दिया, "नहीं।"

22 अतः इन याजकों और लेवियों ने एक बार फिर यूहन्ना से
पूछा, "तू है कौन? {हमें बता} ताकि हम उन अगुवों को
जिन्होंने हमें भेजा है खबर दें {कि तू क्या कहता है}। तू कौन
होने का दावा करता है?"

23 यूहन्ना उनसे बोला, "मैं वह व्यक्ति हूँ जो इस सुनसान जगह
में इसलिए पुकारता है कि जब प्रभु आए तो प्रभु को ग्रहण
करने के लिए तुम को तैयार करूँ। {मैं वही हूँ जिसके बारे में}
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने पहले ही बता दिया था।"

24 ये याजक और लेवी जिनको यूहन्ना के पास यरूशलेम के
अगुवों ने भेजा था फरीसी थे।

25 उन्होंने उससे पूछा, "यदि तू न मसीह है और न एलिय्याह है
और न कोई भविष्यद्वक्ता ही है, तो फिर तू लोगों को बपतिस्मा
क्यों दे रहा है?"

26 यूहन्ना ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं तो लोगों को पानी से बपतिस्मा
दे रहा हूँ, परन्तु इस समय तुम्हारे मध्य में कोई जन ऐसा भी है
जिसे तुम नहीं जानते।

27 वह मेरे बाद आता है, परन्तु मैं इतना लायक भी नहीं हूँ कि
उसकी जूतियों का फीता खोलूँ।"

28 यह घटनाएँ यरदन नदी के पार {पूर्वी दिशा में} स्थित
बैतनिय्याह गाँव में घटित हुई थीं। {यही वह स्थान है} जहाँ
यूहन्ना लोगों को बपतिस्मा दे रहा था।

29 इन बातों के घटित होने के अगले दिन, यूहन्ना ने यीशु को
अपनी ओर आते देखा। तब उसने लोगों से कहा, "देखो! {वह
है} परमेश्वर का मेम्ना! वह इस संसार में रहने वाले लोगों के
पापों की क्षमा के लिए अपने आप को बलिदान कर देगा।

30 यही वह व्यक्ति है जिसके विषय में मैंने कहा था कि 'कोई
है जो मेरे बाद आएगा और जो मुझ से बढ़कर महत्वपूर्ण है,
क्योंकि वह मुझ से {बहुत पहले अस्तित्व में था}।'

31 {पहले तो} मैं नहीं जानता था कि वह कौन था। फिर भी, मैं
लोगों को इसी उद्देश्य से पानी से बपतिस्मा दे रहा था कि उसे
इस्राएल के लोगों पर प्रकट करूँ।"

32 और यूहन्ना ने घोषणा की, "मैंने परमेश्वर की आत्मा को एक
कबूतर के समान प्रकट होते हुए स्वर्ग से नीचे उतरते देखा।
फिर वह आत्मा यीशु पर ठहर गया।

33 {पहले तो} मैं नहीं जानता था कि वह कौन था, परन्तु
परमेश्वर ने मुझे {लोगों को} पानी से बपतिस्मा देने के लिए
भेजा और मुझ से कहा, 'जिस व्यक्ति पर तू मेरी आत्मा उतरते
और ठहरते देखे वही वह व्यक्ति है जो पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा देगा।'

34 मैंने यह देखा है, और मैं तुम पर यह घोषणा करता हूँ कि
यह व्यक्ति, यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।"

35 इन बातों के घटित होने के अगले दिन, यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला फिर से अपने दो शिष्यों के साथ था।

36 जब उसने यीशु को पास से गुजरते देखा, तो उसने कहा,
"देखो! {यही है} परमेश्वर का मेम्ना!"

37 तब यूहन्ना के दोनों शिष्यों ने सुना जो उसने कहा था और वे
यीशु के पीछे हो लिए।

38 जब यीशु पीछे मुड़ा और उनको अपने पीछे आते हुए देखा,
तो उसने उनसे पूछा, "तुम किसकी खोज में हो?" उन्होंने
उससे कहा, "हे रब्बी ({यहूदियों की अरामी भाषा में} जिसका
अर्थ 'गुरु' होता है), तू कहाँ पर ठहरा हुआ है?"

39 उसने प्रतिउत्तर दिया, "मेरे साथ आओ, और तुम देखने
पाओगे!" अतः वे आए और देखा जहाँ यीशु ठहरा हुआ था।
उस दिन वे उसके साथ ही रुक गए क्योंकि देर हो रही थी।
(यह लगभग 4:00 बजे अपराह्न का समय था)।

40 जिन्होंने उस बात को सुना था जो यूहन्ना ने कही थी और
यीशु के पीछे हो लिए थे उन दोनों चेलों में से एक अन्द्रियास
था। {वह} शमौन पतरस का भाई {था}।

41 अन्द्रियास पहले {गया और} अपने भाई शमौन से मिला।
{जब वह उसके पास आया,} तो उसने कहा, "हमें मसीह मिल
गया है!" (यूनानी भाषा में मसीह का अर्थ "ख्रीस्त" होता है।)

42 अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास लेकर गया। जब यीशु
ने पतरस पर दृष्टि डाली, तो उसने कहा, "तू शमौन है। तेरे
पिता का नाम यूहन्ना है। {अब से} तेरा नाम कैफ़ा {भी} होगा।"
({कैफा एक अरामी शब्द है जो कि} यूनानी में "पतरस" है
{और उसका अर्थ "चट्टान" होता है}।)

43 इन बातों के घटित होने के अगले दिन यीशु ने उस क्षेत्र को
छोड़ देने का निर्णय लिया। वह गलील प्रान्त में चला गया और
उसे फिलिप्पुस नाम का एक व्यक्ति मिला। यीशु ने उससे
कहा, "आकर मेरा चेला हो जा।"

44 फिलिप्पुस {गलील में स्थित} बैतसैदा नगर का रहने वाला
था। {यही वह नगर है} जहाँ के निवासी अन्द्रियास और पतरस
थे।

45 {तब} फिलिप्पुस {गया और} उसे नतनएल मिला। {जब
वह उसके पास आया,} तो उसने कहा, "हमें मसीह मिल गया
है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में {जो परमेश्वर ने
इस्राएलियों को दी थी} लिखा था और {जिसके बारे में}
भविष्यद्वक्ताओं {ने कहा था कि वह आएगा}। यीशु ही {वह
मसीह} है। उसके पिता का नाम यूसुफ है। वह नासरत नगर
का रहने वाला है।"

46 नतनएल ने प्रतिउत्तर दिया, "नासरत का रहने वाला? निश्चय
ही उस नगर से कुछ भी अच्छी वस्तु नहीं निकल सकती है!"
फिलिप्पुस ने प्रतिउत्तर दिया, "चल और स्वयं ही देख ले!"

47 जब यीशु ने नतनएल को अपने समीप आते देखा, तो उसने
उससे कहा, "देखो! {यहाँ} एक सच्चा इस्राएली है! वह कभी
भी किसी जन को धोखा नहीं देता है!"

48 नतनएल ने उससे पूछा, "तू कैसे जानता है कि मैं किस
प्रकार का व्यक्ति हूँ?" यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "इससे पहले
कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा था, जिस समय तू
अंजीर के पेड़ के नीचे {अकेला ही} बैठा हुआ था।"

49 तब नतनएल ने घोषणा की, "हे गुरु, तू अवश्य ही परमेश्वर
का पुत्र है! तू इस्राएल का महाराजा है {जिसकी हम प्रतीक्षा
कर रहे हैं}!"

50 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "क्या तू मुझ पर केवल इसलिए
विश्वास करता है क्योंकि मैंने तुझ से कहा कि मैंने तुझे अंजीर
के पेड़ के नीचे देखा था? तू मुझे ऐसे काम करते हुए देखेगा
जो उससे भी बहुत बढ़कर हैं!"

51 फिर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: {जिस
प्रकार का दर्शन तेरे पूर्वज याकूब ने बहुत समय पहले देखा
था,} तू स्वर्ग को खुला हुआ देखेगा, और तू परमेश्वर के
स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मुझ, मनुष्य के पुत्र पर उतरते
देखेगा।"

John 2:1

1 दो दिन बाद, काना में, जो गलील प्रान्त में एक नगर है, वहाँ
पर एक विवाह था और यीशु की माता वहाँ पर थी।

John 2:1

2 और किसी जन ने यीशु और उसके चेलों को भी उस विवाह
में आमंत्रित किया हुआ था।

3 {मेजबानों ने विवाह में आए हुए लोगों को दाखरस परोसा
और} वे उनका सारा दाखरस पी गए। {इसलिए} यीशु की
माता ने उससे कहा, "उनके पास दाखरस समाप्त हो गया है।
{कृपया इस बारे में कुछ कर।}"

4 तब यीशु ने उससे कहा, "हे महोदया, इसका मुझ से या तुझ
से क्या लेना-देना है? मेरा {वह चुना हुआ} समय कि अपनी
{सेवा} {को आरम्भ करूँ} अभी नहीं आया है।"

5 यीशु की माता सेवकों से बोली, "जो कुछ भी वह तुम से करने
के लिए बोले वही करना।"

6 (वहाँ पत्थर के छः {खाली} मर्तबान रखे हुए थे। उनमें पानी
रखा जाता था {ताकि लोग} यहूदियों के धार्मिक शुद्धिकरण
के नियमों {के अनुसार स्वयं को शुद्ध कर सकें}। प्रत्येक
मर्तबान में 80 से लेकर 120 लीटर तक {पानी} समा सकता
था।)

7 यीशु सेवकों से बोला, "मर्तबानों को पानी से भर दो।" अतः
उन्होंने मर्तबानों को ऊपर तक पूरी तरह से भर दिया।

8 फिर उसने उनसे कहा, "अब, किसी मर्तबान में से थोड़ा
पानी निकालो और उसे विवाह भोज के प्रधान के पास लेकर
जाओ।" अतः सेवकों ने वैसा ही किया।

9 तब विवाह भोज के प्रधान ने उस पानी को चखा, जो कि अब
दाखरस बन गया था। (वह नहीं जानता था कि वह दाखरस
कहाँ से आया था, यद्यपि वे सेवक जानते थे जिन्होंने पानी
निकाला था।) और उसने दुल्हे को {अपने पास} बुलाया।

10 फिर वह दुल्हे से बोला, "हर कोई पहले उत्तम दाखरस
परोसता है और बाद में ओछा दाखरस परोसता है, जब
मेहमान नशे में बहुत चूर हो जाते हैं {और भिन्नता नहीं बता
पाते}। हालाँकि, तूने अब तक उत्तम दाखरस को बचाया हुआ
है।"

11 वह उन चमत्कारिक चिन्हों में से प्रथम चिन्ह था जो यीशु ने
किया था। यह उसने काना नगर में किया था, जो गलील प्रान्त
में स्थित है। वहाँ उसने प्रदर्शित किया कि वह कितना महान
है। अतः उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

12 इस चमत्कार को करने के कुछ समय बाद, यीशु और
उसकी माता और उसके भाई, उसके चेलों के साथ,
कफरनहूम नगर को नीचे गए। और वे कुछ दिन के लिए वहाँ
ठहरे रहे।

13 अब यह यहूदी फसह का पर्व मनाने का समय आ ही गया
था, इसलिए यीशु यरूशलेम नगर को गया।

14 वहाँ मंदिर {के आँगन} में उसने {वहाँ बलिदान चढ़ाने वालों
को} पशु, भेड़, और कबूतर बेचने वाले मनुष्यों को देखा।
उसने {मंदिर की मुद्रा से} मुद्रा बदलने वाले मनुष्यों को मेज़
लगाए बैठे {हुए भी देखा}।

15 इसलिए यीशु ने लट वाली कुछ चमड़े की पट्टियों से एक
कोड़ा बनाया, और उसने उन सब लोगों को पशुओं और भेड़ों
{समेत} मंदिर से बाहर निकालने के लिए उसका उपयोग
किया। उसने मुद्रा बदलने वालों के सिक्कों को भी भूमि पर
बिखेर दिया और उनकी मेजों को पलट दिया।

16 जो कबूतर बेच रहे थे उनसे वह बोला, "इन कबूतरों को
यहाँ से बाहर ले जाओ! मेरे पिता के घर को बाजार में
परिवर्तित मत करो!"

17 {इस घटना ने} उसके चेलों को उस विषय में स्मरण दिलाया
जो किसी ने {बहुत समय पहले पवित्रशास्त्र में} लिखा था, "{हे
परमेश्वर,} मैं तेरे मंदिर से इतना प्रेम करता हूँ, कि मैं इसके
लिए मिट भी जाऊँगा।"

18 तब यहूदी अगुवों ने यीशु से प्रश्न करते हुए प्रतिक्रिया दी, "तू
हमारे लिए कौन सा चमत्कार कर सकता है {कि साबित हो
कि तेरे पास इन कामों को करने का परमेश्वर की ओर से
अधिकार है} जिनको तू कर रहा है?"

19 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "यदि तुम इस मंदिर को नष्ट
कर दो, तब मैं तीन दिन में इसे पुनर्निर्मित कर दूँगा।"

20 तो यहूदी अगुवों ने कहा, "इस मंदिर का निर्माण होने में 46 वर्ष लगे। {क्या तू यह कह रहा है कि} तू इस सम्पूर्ण मंदिर को केवल तीन दिन में पुनर्निर्मित करने जा रहा है?"

21 हालाँकि, जिस मंदिर के बारे में यीशु कह रहा था वह उसकी अपनी देह थी, {न कि मंदिर का भवन}।

22 {इस कथन के} परिणामस्वरूप, उसके चेलों ने इन बातों को स्मरण किया जो उसने परमेश्वर द्वारा यीशु को मृतकों में से जीवित करने के बाद कही थीं। तब उन्होंने जो पवित्रशास्त्र कहता था और जो स्वयं यीशु ने कहा था दोनों पर विश्वास किया।

23 बाद में, जब फसह का पर्व मनाने के समय यीशु यरूशलेम में था, तो पर्व के {दिनों के} दौरान, बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया क्योंकि उन्होंने उन चमत्कारों को देखा था जो वह लगातार कर रहा था।

24 फिर भी, क्योंकि यीशु जानता था कि सब लोग किसके समान थे, इसलिए उसने उन पर भरोसा नहीं किया।

25 यीशु {ने इसलिए भी उन पर भरोसा नहीं किया} क्योंकि उसे किसी जन की आवश्यकता नहीं थी कि उसे मनुष्यों के विषय में बताए। {ऐसा इसलिए है} क्योंकि वह जानता था कि लोग क्या {सोचते हैं और क्या चाहते हैं}।

John 3:1

1 अब वहाँ नीकुदेमुस नाम का एक व्यक्ति था। वह फरीसी {नामक एक कठोर यहूदी धार्मिक समूह} का सदस्य था। वह सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद का सदस्य भी था।

2 वह रात में यीशु के पास आया। उसने यीशु से कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ऐसा गुरु है जो परमेश्वर की ओर से आया है। {हम यह इसलिए जानते हैं} क्योंकि कोई भी जन इन चमत्कारों को जिनको तू कर रहा है तब तक नहीं कर सकता जब तक कि परमेश्वर उसकी सहायता न कर रहा हो।"

3 यीशु ने नीकेदिमुस को प्रतिउत्तर दिया और कहा, "मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: नए सिरे जन्म लिए बिना कोई भी जन प्रवेश नहीं कर सकता जहाँ परमेश्वर राज्य करता है।"

4 तब नीकुदेमुस ने उससे कहा, "जब कोई व्यक्ति बूढ़ा हो जाए तो कैसे फिर से जन्म ले सकता है? और कोई भी जन अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करके दूसरी बार जन्म नहीं ले सकता है!"

5 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: कोई भी जन उस स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता जहाँ परमेश्वर राज्य करता है जब तक कि वह पानी और आत्मा के द्वारा फिर से न जन्मे।

6 यदि कोई मानव किसी व्यक्ति को जन्म देता है, {तो वह व्यक्ति} भी एक मानव होता है। परन्तु जो {परमेश्वर की} आत्मा के कार्य के द्वारा {फिर से} जन्म लिए हुए हैं वे एक नई आत्मिक प्रकृति को पाते हैं {जिसका निर्माण परमेश्वर उनके भीतर ही करता है}।

7 इसलिए चकित न हो क्योंकि मैंने तुझे बोला कि तुझे फिर से जन्म लेना अवश्य है।

8 पवित्र आत्मा हवा के समान है जो जहाँ कहीं भी बहना चाहती है उधर बहती है। यद्यपि तू हवा की ध्वनि को सुन तो सकता है, परन्तु तू जानता नहीं कि हवा कहाँ से आई या वह कहाँ जा रही है। {जैसे तू इन बातों को नहीं समझता,} वैसे ही तू उस हर एक जन को {भी नहीं समझता} जो {परमेश्वर की} आत्मा के कार्य के द्वारा {फिर से} जन्म लिए हुए है।

9 नीकुदेमुस ने उसे उत्तर दिया, "यह कैसे सम्भव है?"

10 यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू इस्राएलियों के मध्य में एक महत्वपूर्ण धार्मिक गुरु है, इसलिए जो मैं कह रहा हूँ वह तुझे समझ लेना चाहिए!

11 मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: मेरे चेले और मैं उन बातों को ही कहते हैं जिनको हम जानते हैं कि वे सच्ची हैं, और हम तुझ से वह बातें कह रहे हैं जिनको हम ने देखा है। तौभी तुम लोग {जिनसे हम इन बातों को कहते हैं} उसे अस्वीकार करते हो जो हम कह रहे हैं।

12 चूँकि जब मैं तुम को उन बातों के बारे में बताता हूँ जो इस पृथ्वी पर घटित होती हैं तो जो मैं कहता हूँ तुम लोग उस पर भरोसा नहीं करते, तो जब मैं तुम को उन बातों के बारे में बताऊँ जो स्वर्ग में घटित होती हैं तो जो मैं कहता हूँ तुम निश्चित रूप से उस पर भरोसा नहीं करोगे!

13 मैं, मनुष्य का पुत्र, ही एकमात्र वह जन हूँ जो स्वर्ग तक गया
है, और मैं ही एकमात्र वह जन हूँ जो स्वर्ग से नीचे {पृथ्वी पर}
आया है।

14 {बहुत समय पहले, जब इस्राएली लोग जंगल में भटक रहे
थे}, मूसा ने {एक खम्भे पर विषैले} सर्प {की पीतल की
आकृति को} ऊँचे पर चढ़ाया था, {और जितनों ने उस पर दृष्टि
डाली वे साँपों से बच गए}। उसी रीति से, लोगों को मुझ, मनुष्य
के पुत्र, को भी {क्रूस पर} ऊँचे पर चढ़ाना अवश्य है।

15 {वे मुझे ऊँचे पर चढ़ा देंगे} ताकि जो कोई भी ऊपर देखे
और मुझ पर भरोसा करे वह {स्वर्ग में मेरे साथ} सर्वदा जीवित
रहेगा।

16 {ऐसा इसलिए है} क्योंकि परमेश्वर ने संसार के लोगों से इसी
रीति से प्रेम किया, इसीलिए उसने अपने अद्वितीय पुत्र को दे
दिया ताकि जो कोई भी जन उसके पुत्र पर भरोसा करता है
वह मरेगा नहीं परन्तु सर्वदा जीवित रहेगा।

17 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि परमेश्वर ने मुझे, अर्थात अपने
पुत्र को, संसार में इसलिए नहीं भेजा ताकि संसार के लोगों को
दोषी ठहराए। बजाए इसके, {परमेश्वर ने मुझे इसलिए भेजा}
ताकि संसार के लोगों को मेरे द्वारा बचा ले।

18 परमेश्वर किसी भी ऐसे जन को दोषी नहीं ठहराता जो
उसके पुत्र पर भरोसा करता है। परन्तु परमेश्वर ने उन सब को
पहले से ही दोषी ठहरा दिया है जो उसके पुत्र पर भरोसा नहीं
करते हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र के नाम पर
भरोसा नहीं किया।

19 अब परमेश्वर का न्यायिक शासन निम्न प्रकार से है: {वह
जो} ज्योति है उसने संसार में प्रवेश किया, परन्तु लोगों ने
उसके बजाए बुराई से इसलिए प्रेम किया, क्योंकि वे बुरे काम
करते हैं।

20 {वे अंधकार से इसलिए प्रेम करते हैं} क्योंकि हर वह व्यक्ति
जो लगातार बुरे काम करता रहता है {उससे घृणा करता है
जो} ज्योति है और कभी भी उसके पास नहीं आएगा। {वे
ज्योति से बचते हैं} ताकि ज्योति उन कामों को उजागर न कर
दे जो वे करते हैं।

21 परन्तु वह व्यक्ति जो लगातार सच्चे कामों को करता रहता
है उसके पास आता है जो ज्योति है ताकि ज्योति सब को वह
दिखाए जो वह करता है {और जिससे कि सब लोग जान लें}
कि उन कामों को करने में परमेश्वर उसकी सहायता कर रहा
था।"

22 उन बातों के घटित होने के बाद, यीशु और उसके चेलों ने
यहूदिया प्रान्त में प्रवेश किया। वह अपने चेलों के साथ वहाँ
थोड़े समय तक रुका रहा और बहुत से लोगों को बपतिस्मा
दिया।

23 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी लोगों को ऐनोन नगर के पास
बपतिस्मा दे रहा था, जो सामरिया प्रान्त में सालेम नगर के
निकट स्थित है। {वह वहाँ लोगों को इसलिए बपतिस्मा दे रहा
था} क्योंकि वहाँ उस स्थान में बहुत पानी था, और बपतिस्मा
लेने के लिए लोग यूहन्ना के पास आते जा रहे थे।

24 {यूहन्ना ऐसा इसलिए कर पाया} क्योंकि यूहन्ना के शत्रुओं ने
अभी तक उसे बंदीगृह में नहीं डाला था।

25 फिर यूहन्ना के कुछ चेले एक यहूदी पुरुष के साथ यहूदियों
के धार्मिक शुद्धिकरण के नियम के बारे में बहस करने लगे।

26 जो बहस कर रहे थे वे यूहन्ना के पास आए और कहा, "हे
गुरु, वहाँ एक व्यक्ति था जो तेरे साथ उस समय था जब तू
लोगों को यरदन नदी के दूसरी तरफ बपतिस्मा दे रहा था।
तूने गवाही दी थी कि वह कौन था। देख! अब वह भी लोगों को
बपतिस्मा दे रहा है, और बहुत से लोग निकल कर उसके पास
जा रहे हैं!"

27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, "कोई भी तब तक कुछ भी ग्रहण नहीं
कर सकता जब तक कि परमेश्वर वह उसे न दे।

28 निश्चय ही तुम मेरे यह कहने के गवाह हो कि मैं मसीह नहीं
हूँ, परन्तु मैं वह हूँ जिसे परमेश्वर ने मसीह के आगे भेजा है।

29 दुल्हन तो दुल्हे की ही होती है। मैं दुल्हे के मित्र के समान
हूँ। मैं खड़ा होकर उसकी सुनता हूँ और मैं बहुत प्रसन्न हूँ
क्योंकि मैं दुल्हे की वाणी सुनता हूँ। इसलिए, {क्योंकि दुल्हन
दुल्हे के पास जा रही है}, मैं अत्यन्त आनन्दित हूँ।

30 {यीशु को, जो दुल्हा है,} अधिक प्रभावशाली बनना है, और
मुझे, {जो दुल्हे का मित्र है,} कम प्रभावशाली बनना है।

31 यीशु स्वर्ग से आया है, और वह हर एक जन और हर एक
वस्तु से बढ़कर है। {मेरी तरह} जो पृथ्वी के हैं वे केवल {किसी
ऐसे व्यक्ति के सीमित दृष्टिकोण के साथ} बोल सकते हैं जो
पृथ्वी का है। जो स्वर्ग से आया है वह पृथ्वी पर के हर एक जन
और हर एक वस्तु से बढ़कर है।

32 यीशु लोगों को उन बातों के बारे में बताता है जो उसने {स्वर्ग
में} देखीं और सुनीं, परन्तु जो वह बताता है उसे थोड़े लोग ही
ग्रहण करते हैं।

33 {हालाँकि,} जो यीशु कहता है उस पर जो कोई भी विश्वास
करता है वह यह सत्यापित करता है कि परमेश्वर सच्चा है।

34 {ऐसा इसलिए है} क्योंकि यह यीशु जिसे परमेश्वर ने भेजा
है परमेश्वर की बातों को बोलता है। {हम जानते हैं कि वह
परमेश्वर की बातों को बोलता है} क्योंकि वास्तव में परमेश्वर
उसे अपना आत्मा असीमित रूप से देता है।

35 परमेश्वर पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसे सारी वस्तुओं
पर अधिकार दिया है।

36 जो कोई भी परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है वह {उसके
साथ स्वर्ग में} सर्वदा जीवित रहेगा। जो कोई भी परमेश्वर के
पुत्र की आज्ञा का पालन नहीं करता उसे कभी भी अनन्त
जीवन प्राप्त नहीं होगा। बजाए इसके, परमेश्वर उसके साथ
लगातार क्रोधित बना रहेगा।"

John 4:1

1 बाद में, फरीसी {नामक धार्मिक समूह} ने सुना कि यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले की तुलना में यीशु तो चेलों में अधिक
बढ़ौत्तरी कर रहा है और यह कि जितने लोगों को यूहन्ना
बपतिस्मा दे रहा था उसकी तुलना में वह अधिक लोगों को
बपतिस्मा दे रहा है। यीशु को भी मालूम हुआ कि फरीसियों ने
यह सुना है।

2 (वास्तव में यीशु ने किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया, परन्तु
उसके चेले लोगों को बपतिस्मा दे रहे थे।)

3 {जब उसे मालूम हुआ कि फरीसी उसके बारे में जान गए
थे,} तो यीशु ने यहूदिया प्रान्त को छोड़ दिया और एक बार
फिर से गलील प्रान्त में लौट गया।

4 अब {गलील प्रान्त जाने के लिए} उसे सामरिया प्रान्त से
होकर गुजरना था।

5 तो आगे, वे सामरिया प्रान्त के सूखार नामक एक नगर में
पहुँचे। सूखार भूमि के उस टुकड़े के समीप था जिसे याकूब ने
{बहुत समय पहले} अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6 (याकूब का कुआँ भी उसी जगह पर था।) {सूखार पहुँचने}
के बाद, अपनी लम्बी यात्रा के कारण यीशु बहुत थका हुआ
था, इसलिए {विश्राम के लिए} वह याकूब के कुएँ के बगल में
बैठ गया। यह लगभग दोपहर का समय था।

7 एक सामरी स्त्री {कुएँ पर} निकल आई {कि रस्सी से बाल्टी
को डाल कर} कुछ पानी ऊपर खींच ले। यीशु ने उससे कहा,
"कृपया पीने के लिए मुझे थोड़ा पानी दे।"

8 {उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि उसके चेलों ने {उसे
अकेला छोड़} दिया था और भोजन खरीदने के लिए नगर में
गए हुए थे।

9 और उस सामरी स्त्री ने यीशु से कहा, "मैं चकित हूँ कि तू,
एक यहूदी, मुझ, सामरिया की स्त्री से, पानी पिलाने के लिए
कह रहा है।" ({उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि यहूदी लोग
आमतौर पर सामरियों से कोई भी लेना-देना नहीं रखते थे।)

10 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "यदि तू उस वरदान को
जानती जो परमेश्वर तुझे देना चाहता है, और यदि तू जानती
कि मैं कौन हूँ जो तुझ से पानी पिलाने के लिए निवेदन कर रहा
है, तो तू मुझ से पिलाने के लिए विनती करती, और मैं तुझे
जीवन का पानी देता।"

11 उस स्त्री ने प्रतिउत्तर दिया, "हे महोदय, तेरे पास तो बाल्टी
भी नहीं है {जिससे कुएँ से पानी भरकर बाहर निकाला जाता
है,} और यह कुआँ गहरा है। {चूँकि तू इस कुएँ से पानी बाहर
नहीं निकाल सकता,} तो तुझे यह जीवन का पानी कहाँ से
मिला?

12 निश्चय ही तू हमारे पिता याकूब से बढ़कर नहीं है। उसने
{इस कुएँ को खोदा} और इसे हमें दे दिया। उसने, और उसके
पुत्रों ने, और उसके मवेशियों ने भी इसमें से पानी पिया।"

13 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हर एक जन जो इस कुएँ का
पानी पीता है वह फिर से प्यासा होगा।

14 परन्तु जो कोई भी उस पानी को पिएगा जो मैं उसे दूँगा फिर
कभी प्यासा नहीं होगा। बजाए इसके, जो पानी मैं उसे दूँगा
वह उसके भीतर पानी का सोता बना जाएगा {जो उसे भरपूर
कर देगा} और उसे {स्वर्ग में} सर्वदा तक जीवित रखेगा।"

15 उस स्त्री ने यीशु से कहा, "हे महोदय, कृपया इस पानी में
से थोड़ा मुझे भी दे ताकि मैं फिर कभी प्यासी न होऊँ या फिर
से इस कुएँ पर पानी भरने के लिए आना न पड़े।"

16 यीशु उससे बोला, "जा अपने पति के पास जा और उसको
यहाँ ले आ।"

17 उस स्त्री ने उसे उत्तर दिया, "मेरा कोई पति नहीं है।" यीशु
उससे बोला, "तू ठीक कह रही है कि मेरा कोई पति नहीं है,

18 क्योंकि तेरे एक नहीं, परन्तु पाँच पति थे, और वर्तमान में तू
{जिसके साथ रह रही है} वह भी तेरा पति नहीं है। जो तूने
{पति नहीं होने के बारे में} कहा है वह सत्य है।"

19 उस स्त्री ने यीशु से कहा, "हे महोदय, मुझे लगता है कि तू
कोई भविष्यद्वक्ता है।

20 हमारे पूर्वजों ने यहीं इस पहाड़ पर परमेश्वर की आराधना
की थी, परन्तु तुम यहूदी कहते हो कि हमें यरूशलेम में
{तुम्हारे मंदिर में} परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।"

21 यीशु उससे बोला, "हे महोदया, जब मैं कहता हूँ कि ऐसा
समय आ रहा है जब न तो यहाँ इस पहाड़ पर और न
यरूशलेम में तुम परमेश्वर की आराधना करने पाओगे तो मेरा
विश्वास कर।

22 {यहाँ सामरिया में} तुम लोग उस परमेश्वर की आराधना
करते हो जिसे तुम नहीं जानते। हम यहूदी उस परमेश्वर की
आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं। {यह इसलिए सत्य है}
क्योंकि {तुम्हारे पापों से} उद्धार पाने के मार्ग यहूदियों में से ही
आता है।

23 फिर भी, ऐसा समय आ रहा है और अब आ पहुँचा है जब
जो लोग परमेश्वर की सच्ची आराधना करते हैं वे पिता की
आराधना आत्मिक रूप से और सच्चाई से करेंगे। {ऐसा
इसलिए है} क्योंकि अपनी आराधना के लिए पिता सच में ऐसे
लोगों की ही खोज में है।

24 परमेश्वर एक आत्मिक अस्तित्व है, और जो उसकी
आराधना करते हैं उन्हें उसकी आराधना आत्मिक रूप से
और सच्चाई से करनी चाहिए।"

25 उस स्त्री ने यीशु से कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह आने वाला
है। (वही जिसे यूनानी में "ख्रीस्त" कहते हैं।) जब वह आएगा,
तो वह हमें सब बातें बता देगा {जो हमें जानने की आवश्यकता
है}।"

26 यीशु उससे बोला, "मैं, जो तुझ से अभी बातें कर रहा हूँ, मैं
ही मसीह हूँ!"

27 उसी क्षण, उसके चेले नगर में से वापस आ गए। वे विस्मित
थे क्योंकि यीशु {अकेला ही} किसी स्त्री से बातें कर रहा था
{जिसे वह जानता नहीं था}। हालाँकि, किसी ने भी उससे
पूछने का साहस नहीं किया कि "तू उससे क्या चाहता था?" या
"तू उससे ऐसे ही बातें क्यों कर रहा था?"

28 उसी समय उस स्त्री ने अपने पानी के मर्तबान को वहीं पर
छोड़ दिया और नगर में लौट गई। उसने नगर के पुरुषों से
कहा,

29 "आओ और इस व्यक्ति से मिलो जिसने मुझे बहुत ऐसी
सारी बातें बताई हैं जिनको मैंने किया था! यह मसीह तो नहीं
हो सकता, क्या यह हो सकता है?"

30 उन लोगों ने नगर को छोड़ दिया और यीशु के पास आए।

31 {जिस समय वह स्त्री गई हुई थी,} यीशु के चेलों ने, {जो
अभी-अभी भोजन लेकर लौटे थे,} उससे खाने के लिए
अनुरोध किया। उन्होंने कहा, "हे गुरु, कृपया कुछ खा ले!"

John 4:1

32 यीशु उनसे बोला, “मेरे पास ऐसा भोजन है जिसके बारे में
तुम कुछ नहीं जानते!”

33 इसलिए वे एक-दूसरे से कहने लगे, “निश्चय ही कोई अन्य
व्यक्ति उसके खाने के लिए कुछ नहीं लाया है, क्या वे लाए
हैं?”

34 यीशु उनसे बोला, “जो मुझे जीवित रखता है वह यह है: यह
वही करना है जो मेरा पिता—जिसने मुझे भेजा है—चाहता है
और यह मेरे पिता के काम को पूरा करना है।

35 {वर्ष के इस समय में} आमतौर पर तुम कहते हो, ‘अभी तो
चार महीने बचे हुए हैं, और फिर हम फसल की कटाई करेंगे।’
जो मैं तुम से कह रहा हूँ उसे सुनो। देखो और ध्यान दो कि ये
लोग ऐसे खेतों के समान हैं जो अब कटनी के लिए तैयार हैं!

36 जो इन फसलों को काटता है वह मजदूरी पाता है और फल
जमा करता है, ये ऐसे लोग हैं जो {स्वर्ग में} सर्वदा का जीवन
प्राप्त करते हैं। वे जो बीज बोते हैं और वे जो कटाई करते हैं
उनके लिए इसका परिणाम यह होगा कि वे मिलकर आनन्द
करेंगे।

37 जो मैं कहने जा रहा हूँ वह सत्य है: एक व्यक्ति बीजों को
बोता है, और दूसरा व्यक्ति फसलों की कटाई करता है।

38 मैंने तुम को जो मेरे चेले हो एक ऐसी फसल की कटनी को
जमा करने के लिए भेजा है जिसे तुम ने नहीं लगाया था। दूसरों
ने {फसल लगाने में} कड़ी मेहनत की, परन्तु अब तुम भी
उनके साथ उनके काम में जुड़ गए हो।”

39 अब बहुत से सामरियों ने जो सूखार नगर में रहते थे जो उस
स्त्री ने उनको बताया था उसके कारण यीशु पर भरोसा किया।
उसने कहा, “उसने मुझे ऐसी बहुत सी बातें बताईं जो मैंने की
थीं।”

40 जब सामरिया के लोग यीशु के पास आए, तो उन्होंने उनके
साथ रुकने के लिए उससे विनती की। अतः वह वहाँ उनके
साथ दो दिन के लिए और रुक गया।

41 उनमें से बहुतों ने यीशु पर उन बातों के कारण भरोसा किया
जिनकी उसने उन पर घोषणा की थी।

42 उन नगरवासियों ने उस स्त्री से कहा, “अब हम भी यीशु पर
विश्वास करते हैं, परन्तु उन बातों के कारण नहीं जो तूने हमें
उसके बारे में बताई थीं। {हम विश्वास इसलिए करते हैं}
क्योंकि हम ने स्वयं ही उसके सन्देश को सुन लिया है। अब
हम जानते हैं कि सच में यही वह व्यक्ति है जो इस संसार के
विश्वासियों को {उनके पापों से} बचाता है।”

43 उसके {सामरियों के साथ} दो दिनों तक रुकने के बाद,
यीशु ने सूखार नगर को छोड़ दिया और गलील प्रान्त में प्रवेश
किया।

44 (यीशु गलील में इसलिए जाना चाहता था क्योंकि उसने
स्वयं ही पुष्टि की थी कि भविष्यद्वक्ता उस स्थान में सम्मान नहीं
पाता जहाँ वह पला-बढ़ा हो {और उसने प्रसिद्धि का चाह न
की हो}।)

45 चूँकि यह सत्य है, जब वह गलील प्रान्त में पहुँचा तो वहाँ के
बहुत से लोगों ने सामान्य रूप से उसका स्वागत किया क्योंकि
उन्होंने उन सब अद्‌भुत कामों को देखा था जिनको उसने
हाल ही के फसह के पर्व में यरूशलेम में किया था, जिसमें वे
भी गए थे।

46 आगे, गलील प्रान्त के काना नगर में यीशु फिर से वापस
चला गया। {यही वह नगर था} जहाँ उसने पानी को दाखरस
में परिवर्तित किया था। वहाँ राजा का एक अधिकारी था जो
कफरनहूम नगर के समीप रहता था और उसके एक पुत्र था
जो बहुत बीमार था।

47 जब उस अधिकारी ने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में
वापस आ गया है, तो वह काना में यीशु के पास गया और
उससे नीचे कफरनहूम में आने और उसके पुत्र को चंगा करने
की विनती की, क्योंकि शीघ्र ही उसका पुत्र मर जाएगा।

48 तब यीशु ने उससे कहा, “तुम लोग {मसीह के रूप में} मुझ
पर केवल तब ही विश्वास करोगे यदि तुम अद्‌भुत चमत्कार
{करते हुए मुझे} देखोगे!”

49 उस राजा के अधिकारी ने उससे कहा, “हे महोदय, कृपया
मेरे पुत्र के मरने से पहले नीचे कफरनहूम में मेरे घर आ!”

John 5:1

50 यीशु उससे बोला, “घर जा। तेरा पुत्र जीवित रहेगा।” उस
व्यक्ति ने उस बात पर भरोसा किया जो यीशु ने उससे बोली
थी, और उसने वापस घर जाने के लिए प्रस्थान किया।

51 जब वह अधिकारी कफरनहूम में से होकर अपने घर की
ओर यात्रा कर रहा था, तो {सड़क पर ही} उसके सेवक उससे
आ मिले। उन्होंने उसे बताया, “तेरी सन्तान जीवित रहने वाली
है।”

52 उसने अपने सेवकों से पूछा, “किस समय पर मेरे पुत्र ने
बेहतर होना आरम्भ किया था?” उन्होंने उसे उत्तर दिया, “कल
1:00 बजे अपराह्न को उसका बुखार उतर गया था।”

53 और उस लड़के के पिता ने जान लिया कि उसके पुत्र में
उसी समय सुधार हुआ था जब यीशु ने उससे कहा था कि
उसका पुत्र जीवित रहेगा। अतः इसी व्यक्ति ने, जितने उसके
घर में रहते थे उन सब के साथ, यीशु पर भरोसा किया।

54 वह दूसरा बड़ा चमत्कार था जो यीशु मसीह ने किया। {इसे
उसने उस समय के दौरान किया जब} वह यहूदिया प्रान्त को
छोड़ने के बाद गलील के प्रान्त में आया था।

John 5:1

1 इन बातों के घटित होने के बाद, यहूदियों के एक और पर्व
का समय आया, और यीशु {पर्व मनाने के लिए} ऊपर
यरूशलेम नगर को चला गया।

2 यरूशलेम में {वहाँ एक स्थान है} जो भेड़-फाटक कहलाता
था, {जो नगर के भीतर जाने वाले फाटकों में से एक था}। उस
फाटक के बगल में एक कुंड है जिसे लोग यहूदियों द्वारा
उपयोग की जाने वाली भाषा में बैतहसदा कहते थे। उस कुंड
के आगे छत वाले पाँच ओसारे हैं।

3 इन ओसारों पर बहुत से लोग पड़े रहते थे। वे ऐसे लोग थे जो
बीमार, देखने में अक्षम, चलने में अक्षम, या हिलने-डुलने में
अक्षम थे।

4 [{वे वहाँ इसलिए पड़े हुए थे} क्योंकि परमेश्वर की ओर से
एक स्वर्गदूत कभी-कभी नीचे आता था और पानी में हलचल
मचा देता था। स्वर्गदूत के हलचल मचाने के बाद पानी में
उतरने वाला पहला व्यक्ति जो कोई भी होता था, तो चाहे उसे
जो कोई भी बीमारी या दुर्बलता पीड़ित कर रही थी, वह ठीक
हो जाता था।]

5 बैतहसदा नामक कुंड के पास एक मनुष्य पड़ा हुआ था जो
38 वर्ष से बीमार था।

6 यीशु ने इस मनुष्य को कुंड के पास पड़े हुए देखा, और वह
जानता था कि वह वहाँ बहुत समय से पड़ा हुआ है। उसने उस
मनुष्य से पूछा, “क्या तू चाहता है कि तेरा स्वास्थ्य बेहतर हो
जाए?”

7 उस बीमार मनुष्य ने उसे उत्तर दिया, “हे महोदय, मेरे पास
ऐसा कोई जन नहीं है कि जब स्वर्गदूत पानी को हिलाए तो वह
मुझे कुंड में उतार सके। जिस समय तक मैं स्वयं को कुंड में
उतार सकूँ, कोई अन्य पहले ही कुंड में उतर गया और मुझ
से पहले {चंगा हो गया}, {इसलिए मैं चंगा नहीं हो सकता}।”

8 यीशु उससे बोला, “खड़ा हो! अपनी चटाई उठा {जिस पर तू
लेटा हुआ है} और चल फिर!”

9 तब यीशु ने उस मनुष्य को तुरन्त चंगा किया, और उस
मनुष्य ने उस चटाई को उठा लिया {जिस पर वह लेटा हुआ
था} और चलने फिरने लगा। (अब यह {यहूदियों के
विश्रामदिन पर घटित हुआ था} जिसे सब्त के दिन के रूप में
जाना जाता है।

10 क्योंकि {यह यहूदियों का विश्रामदिन था}, इसलिए यहूदी
अगुवों ने उस मनुष्य से जिसे यीशु ने चंगा किया था कहा,
“आज विश्रामदिन है। तुझे {आज के दिन} अपनी चटाई
उठाने की अनुमति नहीं है {क्योंकि यह तो काम है}।”

11 उस मनुष्य ने जिसे यीशु ने चंगा किया था उनको उत्तर
दिया, “जिस मनुष्य ने मुझे चंगा किया था उसी ने मुझ से कहा
कि इस चटाई को उठा {जिस पर मैं लेटा हुआ था} और चल
फिर।’”

12 यहूदी अगुवों ने उससे पूछा, “किसने तुझ से कहा कि
अपनी चटाई उठा और चल फिर?”

13 हालाँकि, वह मनुष्य जिसे यीशु ने चंगा किया था यह नहीं
जानता था कि उसे किसने चंगा किया, क्योंकि यीशु ने बिना
किसी का ध्यान पड़े उस मनुष्य को छोड़ दिया था, क्योंकि वह
क्षेत्र भीड़-भाड़ वाला था।

14 बाद में, यीशु को वह मनुष्य मंदिर में मिला जिसे उसने चंगा
किया था और उससे कहा, "देख, अब तू ठीक हो गया है!
इसके बाद पाप मत करना, ताकि तेरे साथ {तेरी पिछली
बीमारी से बढ़कर} अधिक बुरा न हो।"

15 वह मनुष्य चला गया और यहूदी अगुवों को बता दिया कि
जिस मनुष्य ने उसे स्वस्थ किया वह यीशु था।

16 इसलिए यहूदी अगुवों ने यीशु को सताना आरम्भ कर दिया
क्योंकि वह यहूदियों के विश्रामदिन में लोगों को चमत्कारिक
रूप से चंगा कर रहा था।

17 यीशु ने उनको यह उत्तर दिया, "परमेश्वर, मेरा पिता आज
भी काम कर रहा है, इसलिए मैं भी काम कर रहा हूँ।"

18 {उसके ऐसा कहने के} परिणामस्वरूप, यहूदी अगुवे यीशु
की हत्या करने का {जितना प्रयास उन्होंने पहले किया था
उसकी तुलना में} और भी अधिक प्रयास करने लगे थे। {वे
उसकी हत्या इसलिए करना चाहते थे} क्योंकि वह न केवल
उनके विश्रामदिन के नियमों की अवज्ञा कर रहा था परन्तु
इसलिए भी क्योंकि वह यह कहने के द्वारा कि वह परमेश्वर के
बराबर है दावा कर रहा था कि परमेश्वर उसका पिता भी था।

19 {इन आरोपों} के कारण यीशु ने यहूदी अगुवों को प्रतिउत्तर
दिया, "मैं तुम {लोगों} से सच कह रहा हूँ: मैं, पुत्र, अपने
अधिकार से कुछ भी नहीं कर सकता। मैं केवल वहीं कर
सकता हूँ जो मैं देखता हूँ कि परमेश्वर, पिता, कर रहा है। जो
कुछ भी पिता करता है, वही मैं, अर्थात पुत्र, भी करता है।

20 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि पिता मुझ, अर्थात पुत्र, से प्रेम
करता है, और जो वह कर रहा है वह मुझे सब कुछ बता देता
है। पिता मुझे उन चमत्कारिक कामों के बारे में भी बताएगा
जो उन चमत्कारों से भी बढ़कर होंगे (जो मैंने पहले से किए
हैं) ताकि तुम उनके द्वारा विस्मित हो सको।

21 {ऐसा इसलिए होगा} क्योंकि मैं, अर्थात पुत्र, जिस किसी को
चाहता हूँ अनन्त जीवन प्रदान करता हूँ उसी प्रकार से जैसे
पिता उन्हें फिर से जीवित करता है जो मर गए हैं और उन्हें
फिर से जीवन प्रदान करता है।

22 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि पिता किसी का भी न्याय नहीं
करता। बजाए इसके, उसने लोगों का न्याय करने का सारा
अधिकार मुझे, अर्थात पुत्र, को दे दिया है।

23 {पिता ने ऐसा इसलिए किया} जिससे कि हर एक जन मेरा,
अर्थात पुत्र का, उसी प्रकार से सम्मान करे जैसे वे पिता का
सम्मान करते हैं। जो कोई भी मेरा सम्मान नहीं करता है वह
मेरे पिता का सम्मान भी नहीं कर सकता, जिसने मुझे भेजा है।

24 मैं तुम लोगों से सच कह रहा हूँ: जो कोई भी मेरी शिक्षाओं
को मानता और ग्रहण करता है और परमेश्वर पर जिसने मुझे
भेजा भरोसा करता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सर्वदा जीवित
रहेगा, और परमेश्वर उसका न्याय दोषी के जैसे नहीं करेगा।
बजाए इसके, वह व्यक्ति आत्मिक रूप से मरा हुआ होने से
आत्मिक रूप से जीवित होने में चला गया है।

25 मैं तुम लोगों से सच कह रहा हूँ: एक ऐसा समय आ रहा है
और, बल्कि, यहाँ पहले से ही है कि इस समय जो मर चुके हैं
वे मेरी वाणी सुनेंगे, अर्थात परमेश्वर के पुत्र की वाणी, और जो
मुझे सुनते हैं वे जीएँगे।

26 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि जिस प्रकार से पिता लोगों
को जीवित करने में सक्षम है, उसी रीति से उसने मुझे, अर्थात
पुत्र को भी लोगों को जीवित करने की योग्यता प्रदान की है।

27 पिता ने मुझे सम्पूर्ण मानवजाति का न्याय करने का
अधिकार इसलिए प्रदान किया है, क्योंकि मैं मनुष्य का पुत्र हूँ।

28 चकित न हो {कि परमेश्वर ने ऐसा किया है}, क्योंकि ऐसा
समय आएगा जब हर एक जन जो मर गये हैं वे मेरी वाणी को
सुनेंगे।

29 तब वे अपनी कब्रों से बाहर निकल आएँगे। जिन्होंने भलाई
की है परमेश्वर उनको जिलाएगा कि उनको अनन्त जीवन दे।
परन्तु जिन्होंने बुराई की है परमेश्वर उनको इसलिए जिलाएगा
कि उनको दोषी ठहराए और उनको सदा के लिए दंड दे।

30 मैं स्वयं से कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। जो मैं {अपने पिता
से} सुनता हूँ उसके अनुसार मैं न्याय करता हूँ, और मैं
न्यायसंगत तरीके से न्याय करता हूँ। {मैं न्यायपूर्वक न्याय
इसलिए करता हूँ} क्योंकि मैं उसे करने का प्रयास नहीं करता
हूँ जो मैं चाहता हूँ। बजाए इसके, मैं वही करता हूँ जो मेरा
पिता, जिसने मुझे भेजा है, चाहता है।

31 यदि स्वयं के विषय में साक्षी देने के लिए मैं अकेला व्यक्ति
ही होता, तो {मूसा की व्यवस्था के अनुसार} मेरी साक्षी भरोसे
के योग्य नहीं होती।

32 फिर भी, कोई अन्य जन भी है जो मेरे विषय में गवाही देता
है, और मैं जानता हूँ कि जो गवाही वह मेरे विषय में देता है वह
भरोसे के योग्य है

33 तुम यहूदी अगुवों ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास
सन्देशवाहकों को भेजा, और उसने तुम को मेरे विषय में सत्य
बताया।

34 हालाँकि, मेरे लिए गवाह बनने हेतु मुझे किसी जन की
आवश्यकता नहीं है। फिर भी, मैं यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के
विषय में यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि परमेश्वर तुम्हारा
उद्धार करे।

35 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने जलते और चमकते हुए दीपक
के समान {तुम पर परमेश्वर के सत्य की घोषणा की}। कुछ
समय के लिए तुम उस ज्योति में आनन्द मनाने के इच्छुक थे
{जो वह सत्य था जिसकी उसने घोषणा की थी}।

36 हालाँकि, जो गवाही मैं अपने विषय में देता हूँ वह उस
गवाही से भी बढ़कर है जो यूहन्ना मेरे विषय में देता है। {ऐसा
इसलिए है} क्योंकि यह गवाही वे चमत्कारिक काम हैं जिनको
करने के लिए परमेश्वर पिता ने मुझे अनुमति प्रदान की है। ये
काम जिनको मैं कर रहा हूँ प्रमाण हैं कि पिता ने ही मुझे भेजा
है।

37 इसके अलावा, मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है वही वह जन
है जिसने मेरे विषय में गवाही दी है। तुम में से किसी ने भी
कभी न तो उसे बोलते सुना है या देखा है कि वह किसके
समान दिखता है।

38 तुम भी पिता की शिक्षाओं का पालन नहीं करते हो। {मैं
जानता हूँ कि यह इसलिए सत्य है} क्योंकि तुम मुझ पर भरोसा
नहीं करते, अर्थात उस व्यक्ति पर जिसे उसने भेजा है!

39 तुम सावधानीपूर्वक पवित्रशास्त्र को इसलिए पढ़ते हो
क्योंकि तुम विश्वास करते हो कि उनको पढ़ने के द्वारा तुम
{स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहने के योग्य ठहरोगे। और यही
वे पवित्रशास्त्र हैं जो घोषणा करते हैं कि मैं कौन हूँ।

40 तौभी तुम मेरे चेले बनने से अभी भी इन्कार करते हो ताकि
तुम {स्वर्ग में सदा तक} जीवित रहो।

41 मैं किसी की भी ओर से सम्मान ग्रहण नहीं करता।

42 हालाँकि, मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर से बिलकुल भी प्रेम
नहीं करते।

43 मैं अपने पिता के अधिकार के साथ आया हूँ, परन्तु तौभी
तुम मुझे स्वीकार नहीं करते। यदि कोई अन्य जन अपने स्वयं
के अधिकार के साथ तुम्हारे पास आए, तो तुम उसे स्वीकार
कर लोगे।

44 तुम सम्भवतः उस समय मुझ पर भरोसा नहीं कर सकते
जब तुम एकमात्र परमेश्वर के द्वारा तुम्हारा सम्मान करने की
इच्छा करने के बजाए तुम एक-दूसरे का ही सम्मान कर रहे
हो!

45 यह मत सोचो कि मैं वही हूँ जो अपने पिता के सामने तुम
पर दोष लगाएगा। मूसा, एक ऐसा व्यक्ति जिस पर तुम को
आशा है कि वह तुम्हारा बचाव करेगा, वास्तव में वही वह
व्यक्ति है जो तुम पर दोष लगाएगा।

46 {वह तुम पर इसलिए दोष लगाएगा} क्योंकि यदि तुम ने
मूसा पर भरोसा किया होता, परन्तु तुम ने नहीं किया, तब तुम
मुझ पर इसलिए भरोसा करोगे, क्योंकि मूसा ने {व्यवस्था में}
मेरे बारे में वर्णन किया है।

47 चूँकि जो मूसा ने लिखा तुम उस पर भी भरोसा नहीं करते,
तो सम्भवतः तुम उस पर भरोसा नहीं कर सकते जो मैंने तुम
से कहा है!"

John 6:1

1 इन बातों के घटित होने के बाद, यीशु गलील की झील की
विपरीत दिशा में पार होकर चला गया, जिसे कुछ लोग
तिबिरियास की झील भी कहते हैं।

2 एक बड़ी भीड़ उसके पीछे इसलिए हो ली क्योंकि उन्होंने
उन चमत्कारिक कामों को देखा था जिनको वह कर रहा था,
अर्थात, उन लोगों को चंगा करना जो बहुत बीमार थे।

3 यीशु एक खड़ी पहाड़ी पर चढ़ गया और वहाँ अपने चेलों के
साथ बैठ गया।

4 (अब उस समय पर यहूदियों का फसह का पर्व होने वाला
था।)

5 तब यीशु ने आँखों को उठाया और देखा कि लोगों की एक
बड़ी भीड़ उसकी ओर आ रही थी। उसने फिलिप्पुस से पूछा,
"हम रोटी कहाँ से खरीदेंगे ताकि इन सब लोगों को खिलाएँ?"

6 (उसने फिलिप्पुस से यह प्रश्न इसलिए पूछा ताकि उसके
विश्वास की जाँच करे, क्योंकि यीशु पहले से जानता था कि वह
उस समस्या के बारे में क्या करने जा रहा है।)

7 फिलिप्पुस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "यदि हमारे पास इतना
धन हो जिसे कोई व्यक्ति 200 दिन काम करके कमा सकता
है, तो वह भी इस भीड़ के प्रत्येक व्यक्ति को खाने के लिए
छोटा सा टुकड़ा देने के लिए रोटी खरीदने हेतु पर्याप्त धन नहीं
होगा।"

8 उसका एक अन्य चेला, शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास,
यीशु से बोला,

9 "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच छोटी रोटियाँ
और दो छोटी मछली हैं। तौभी, ये थोड़ी सी रोटियाँ और
मछली इन सारे लोगों को खिलाने के लिए निश्चय ही पर्याप्त
नहीं हैं!"

10 यीशु ने अपने चेलों से बोला लोगों को इकठ्ठा करके
बैठाओ। इस प्रकार से लगभग 5, 000 पुरुष बैठ गए। (वहाँ
उस स्थान में {उनके बैठने के लिए} बहुत सारी घास थी।)

11 तब यीशु ने उन जौ की छोटी रोटियों को लिया, और उसने
भोजन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। {फिर} उसने
{और उसके चेलों ने} उन लोगों को खाने के लिए रोटियाँ दीं
जो {घास पर} बैठे हुए थे। उसी प्रकार से उसने दो मछली के
साथ भी किया। लोगों ने उतनी मछली और रोटियाँ खाईं
जितनी वे खाना चाहते थे।

12 जबकि हर एक व्यक्ति ने तब तक खाया जब तक कि वे
तृप्त नहीं हो गए, तो यीशु ने अपने चेलों से सब बचे हुए, बिना
खाए हुए जौ की रोटी के टुकड़ों को इकट्ठा करने के लिए बोला
ताकि उनमें से कोई भी बर्बाद न हो।

13 इस प्रकार से उसके चेलों ने उन टुकड़ों को इकट्ठा कर
लिया, और उन्होंने उन टूटे हुए टुकड़ों से बारह बड़ी टोकरियाँ
भर लीं जिनको लोगों ने उन जौ की पाँच छोटी रोटियों में से
बचा दिया था।

14 {इसके} कारण, जब लोगों ने इस चमत्कारिक चिन्ह को
देखा जिसे यीशु ने {उनके सामने} किया था, तो उन्होंने कहा,
"निश्चय ही यह वही भविष्यद्वक्ता है जिसे संसार में भेजने की
{परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की} थी!"

15 जब यीशु ने जान लिया कि ये लोग इसलिए उसे पकड़ने की
योजना बना रहे थे ताकि उनका राजा बनने के लिए उस पर
दबाव डालें, तो वह फिर से उन्हें छोड़कर एकदम अकेला
रहने के लिए पहाड़ी पर चला गया।

16 जब शाम हुई, तो यीशु के चेले पहाड़ी से उतरकर गलील
की झील के पास चले गए।

17 {वे} नाव पर चढ़ गए और झील के दूसरी तरफ कफरनहूम
नगर जाने के लिए जलयात्रा को आरम्भ किया। (अब पहले ही
अंधेरा हो चुका था, और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आया
था।)

18 क्योंकि हवा तेज चल रही थी, जिससे समुद्र बहुत अशांत हो
रहा था।

19 यीशु के चेलों के नाव को लगभग साढ़े चार या साढ़े पाँच
किलोमीटर दूर झील में खे चुकने के बाद, उन्होंने यीशु को

John 6:1

पानी पर चलते हुए और नाव के पास आते देखा। वे डरे गए थे!

20 यीशु उनसे बोला, "यह मैं हूँ, यीशु! डरना बंद करो!"

21 वे उसे नाव पर चढ़ाकर बहुत आनन्दित थे। जैसे ही वह उनके साथ नाव में चढ़ा, उनकी नाव उस स्थान पर पहुँच गई जहाँ वे जा रहे थे।

22 यीशु के भीड़ को खिलाने के अगले दिन, लोगों की भीड़ को जो झील के दूसरी तरफ रुक गई थी मालूम हुआ कि वहाँ {एक दिन पहले} केवल एक ही नाव थी। {उनको यह भी मालूम हुआ} कि यीशु अपने चेलों के साथ नाव पर नहीं गया था।

23 (दूसरी नावों पर तिबिरियास नगर से लोग आए थे। {उन्होंने अपनी नावों को} उस स्थान के पास रख छोड़ा था जहाँ प्रभु यीशु द्वारा इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करने के बाद भीड़ ने रोटी खाई थी।)

24 अतः जब भीड़ को मालूम हुआ कि वहाँ न यीशु और न ही उसके चेले थे, तो वे उन नावों पर चढ़ गए और यीशु को ढूँढ़ने के लिए कफरनहूम नगर की ओर जलयात्रा की।

25 उस भीड़ को यीशु कफरनहूम में गलील की झील के उस तरफ मिला जो उसकी विपरीत दिशा में है {जहाँ उसने उनको भोजन खिलाया था}। उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, {हम जानते हैं कि तू किसी नाव से तो नहीं आया है,} तो तू यहाँ कफरनहूम में कब पहुँचा?"

26 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ रहे हो क्योंकि तुम ने उन चमत्कारिक कामों को देखा था जो मैंने किए थे। बजाए इसके, {तुम मुझे केवल इसलिए ढूँढ़ रहे हो} क्योंकि तुम ने तब तक खाया था जब तक कि तुम उन रोटियों से तृप्त नहीं हो गए थे जो मैंने तुम को दी थीं।

27 ऐसे भोजन के लिए काम करना बंद करो जो शीघ्र ही खराब हो जाएगा! बजाए इसके, ऐसे भोजन के लिए काम करो जो तुम्हारे लिए {स्वर्ग में} सदा का जीवन लेकर आए! {वह भोजन} ऐसी रोटी है जो मैं, अर्थात मनुष्य का पुत्र, तुम को दूँगा। {केवल मैं ही तुम को यह दे सकता हूँ} क्योंकि परमेश्वर मेरा पिता मेरा अनुमोदन करता है।"

28 तब भीड़ ने यीशु से पूछा, "परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें कौन से कामों को करना चाहिए?"

29 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "जो काम परमेश्वर चाहता है कि तुम करो वह यह है: मुझ पर भरोसा करो, अर्थात उस पर जिसे उसने भेजा है।"

30 भीड़ ने उससे पूछा, "फिर तू कौन सा चमत्कार करेगा ताकि हम उसे देखें और तुझ पर भरोसा करें? तू हमारे लिए क्या करेगा

31 हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया {जब वे मूसा के साथ भटक रहे थे}, जैसा कि भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है: 'परमेश्वर ने उनको खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।'"

32 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: वह मूसा नहीं था जिसने तुम्हारे पूर्वजों को स्वर्ग से वह रोटी दी थी। नहीं, वह तो मेरा पिता था, जो अब तुम को स्वर्ग से सच्ची रोटी दे रहा है।

33 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि परमेश्वर की ओर से सच्ची रोटी स्वर्ग से उतरी है और संसार के लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करती है।"

34 {भीड़ को समझ नहीं आया कि उसके कहने का क्या अर्थ था}, इसलिए उन्होंने यीशु से पूछा, "हे महोदय, कृपया हर समय हमें यही रोटी दिया कर।"

35 यीशु उस भीड़ से बोला, "{जैसे भोजन शारीरिक जीवन को बनाए रखता है}, मैं वह रोटी हूँ जो अनन्त जीवन प्रदान करती है। {खाने या पीने के विपरीत}, जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह निश्चय ही सदा के लिए संतुष्ट होगा।

36 फिर भी, मैंने तुम को पहले से ही बता दिया है कि भले ही तुम मुझे देखते हो, तुम अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं करते।

37 वे सब लोग जिनको मेरा पिता मुझे देता है वे आएँगे {और मेरे चेले बन जाएँगे}, और मैं निश्चय ही उनमें से किसी को भी कभी नहीं निकालूँगा।

38 {मैं ऐसा कभी भी इसलिए नहीं करूँगा} क्योंकि मैं स्वर्ग से नीचे इसलिए नहीं उतरा कि वह करूँ जो मैं चाहता हूँ। बजाए इसके, {मैं नीचे इसलिए उतरा हूँ} ताकि वह करूँ जो मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, चाहता है कि मैं करूँ।

39 मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, वह यही चाहता है: {वह मुझ से चाहता है} उन सब की सुरक्षा करना जिनको उसने मुझे दिया है। {वह यह भी चाहता है} कि अंतिम दिन में इनको मैं फिर से जीवित करूँगा {जब मैं सब का न्याय करूँगा }।

40 {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि यह भी है जो मेरा पिता चाहता है: {और वह चाहता है} कि जो पहचानता है कि मैं, अर्थात पुत्र, कौन हूँ, और मुझ पर भरोसा करता है तो वह हर एक जन {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मैं इन्हें अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का न्याय करूंगा}।"

41 तब यहूदी अगुवों ने यीशु के विषय में बड़बड़ाना आरम्भ कर दिया, क्योंकि उसने कहा था कि वह सच्ची रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरी थी।

42 उन्होंने कहा, "यह तो केवल यूसुफ का पुत्र, यीशु है! हम जानते हैं कि इसके माता-पिता कौन हैं। सम्भवतः वह स्वर्ग से नहीं उतर सकता जैसा कि वह दावा करता है!"

43 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "{जो मैंने अभी कहा उसके विषय में} आपस में बड़बड़ाना बंद करो।

44 केवल वे ही जिनको मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, आने के लिए {और मेरे चेले बनने के लिए} प्रेरित करता है ऐसा करने में सक्षम होते हैं। मैं स्वयं उन लोगों को {जो मेरे पास आते हैं} अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का न्याय करूंगा}।"

45 भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था कि परमेश्वर हर एक जन को शिक्षा देगा। हर एक जन जो उसकी सुनता है और मेरे पिता से सीखता है वह आएगा {और मेरा चेला बनेगा}।

46 मेरे अलावा किसी ने भी परमेश्वर मेरे पिता को नहीं देखा है। मैं ही हूँ जो परमेश्वर के पास से आया है। केवल मैंने ही उसे देखा है।

47 मै तुम से सच कह रहा हूँ: कि जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा।

48 वह सच्ची रोटी मैं हूँ जो अनन्त जीवन प्रदान करती है।

49 तुम्हारे पूर्वजों ने {मूसा के साथ} जंगल में {भटकते हुए} मन्ना खाया, परन्तु फिर भी वे मर गए।

50 {परन्तु} यह रोटी जिसके विषय में मैं बात कर रहा हूँ स्वर्ग से उतरी है ताकि कोई उसे खाए और उस व्यक्ति का आत्मा कभी न मरे।

51 यह रोटी जो अनन्त जीवन प्रदान करती है और स्वर्ग से उतरी है वास्तव में मैं हूँ। जो कोई भी इस रोटी को खाएगा वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मेरी देह भी यह रोटी है। इस संसार में रहने वाले हर एक जन के अनन्त जीवन की खातिर मैं अपनी देह का त्याग कर दूँगा।"

52 तब यहूदी अगुवों ने एक-दूसरे से बहस करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने कहा, "यह मनुष्य वास्तव में अपनी देह हमें नहीं दे सकता ताकि हम उसे खा लें!"

53 अतः यीशु ने उनको बता दिया: "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: तुम को मुझ, अर्थात मनुष्य के पुत्र के मांस को खाना चाहिए, और मेरे लहू पीना चाहिए। {यदि तुम इन कामों को नहीं करते, तो} तुम को अनन्त जीवन कभी प्राप्त नहीं होगा।

54 जो कोई भी मेरा मांस खाता है और मेरा लहू पीता है वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा। मैं भी उस व्यक्ति को अंतिम दिन में फिर से जीवित कर दूंगा {जब मैं सभी का न्याय करूंगा}।

55 {ऐसा इसलिए है} क्योंकि मेरा मांस सच्चा आत्मिक भोजन है, और मेरा लहू सच्चा {आत्मिक} पेय है।

56 जो मेरा मांस खाते हैं और मेरा लहू पीते हैं वे मेरे साथ जुड़े रहेंगे, और मैं उनके साथ जुड़ा रहूँगा।

57 मेरा पिता सब को जीवित रखता है। उसी ने मुझे यहाँ भेजा है, और मैं लोगों को इसलिए जीवित कर सकता हूँ क्योंकि उसने मुझे ऐसा करने के लिए सक्षम किया है। इसी रीति से, जो मुझ से खाते हैं वे सदा तक उसके कारण जो मैं उनके लिए करूँगा जीवित रहेंगे।

58 वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। {यह रोटी} {उस रोटी} के समान नहीं है जिसे इस्राएलियों के पूर्वजों ने {जंगल में} खाया था परन्तु अंत में मर गए। जो कोई भी मुझे खाता है—अर्थात इस रोटी को—वह {मेरे साथ स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहेगा।"

59 यीशु ने यह कथन {यहूदी अगुवों से} आराधनालय में कहे थे जिस समय वह कफरनहूम नगर में शिक्षा दे रहा था।

60 {जो उसने कहा था} उन्होंने सुना उसके बाद, यीशु के बहुत से चेलों ने कहा, "जो वह सिखा रहा है उसे स्वीकार करना कठिन है। सच में, कोई भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता है!"

61 {यद्यपि किसी ने भी उससे नहीं कहा}, यीशु जानता था कि उसके चेले उस बारे में बड़बड़ा रहे थे जो उसने कहा था। {इसलिए} उसने उनसे पूछा, "क्या मेरी शिक्षा से तुम को ठेस पहुँचती है?

62 {यदि इस शिक्षा से तुम को ठेस पहुँची,} तब यदि तुम मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग पर चढ़ते देखो जहाँ मैं पहले था {तब भी तुम को ठेस पहुँचेगी}?

63 केवल पवित्र आत्मा ही है जो किसी को भी अनन्त जीवन दे सकता है। इस मामले में मानवीय स्वभाव अनुपयोगी है। जो मैंने तुम को सिखाया वह पवित्र आत्मा की ओर से है और अनन्त जीवन प्रदान करता है।

64 फिर भी, तुम में से कुछ उन बातों पर विश्वास नहीं करते जो मैंने कही हैं।" (यीशु ने यह इसलिए कहा क्योंकि जिस समय से उसने अपना काम आरम्भ किया था तब से वह जानता था कि कौन उसका विश्वास नहीं करेगा और कौन अंत में उसे धोखा देगा।)

65 फिर यीशु ने कहा, "क्योंकि {तुम में से कुछ मुझ पर विश्वास नहीं करते}, मैंने तुम को पहले ही बता दिया था कि जिनको परमेश्वर पिता ने आने की {और मेरे चेले बनने की} क्षमता प्रदान की है केवल वे ही ऐसा करने में सक्षम होंगे।"

66 यीशु के इन बातों को कहने के बाद, उसके बहुत से चेले {उससे मिलने से पहले जो वे कर रहे थे वही करने के लिए} वापस चले गए और उसके चेले होने से हट गए।

67 क्योंकि {बहुतों ने उसे छोड़ दिया इसलिए} यीशु ने अपने बारह चेलों से पूछा, "निश्चित रूप से तुम भी मुझे छोड़ना नहीं चाहते हो, क्या ऐसा चाहते हो?"

68 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, {यदि हम तुझे छोड़ दें}, तो ऐसा कोई भी नहीं है जिसके पास हम जा सकें! केवल तू ही वह सन्देश सिखाता है जो हमें {स्वर्ग में} सदा तक का जीवन जीने की {अनुमति प्रदान करता है}!

69 हम तुझ पर भरोसा करते हैं, और निश्चित रूप से हम जानते हैं कि तू ही वह पवित्र जन है जो परमेश्वर की ओर से आया है!"

70 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "निश्चय ही मैंने तुम बारह मनुष्यों को चुना है, परन्तु तुम में से एक शैतान के नियंत्रण में है!"

71 ({जब यीशु ने यह कहा} तो वह शमौन इस्करियोती के पुत्र, यहूदा के विषय में बात कर रहा था, क्योंकि बारह चेलों में से वही एक था जो बाद में यीशु को धोखा देगा।)

John 7:1

1 उन बातों के घटित होने के बाद, यीशु गलील प्रान्त के आसपास इसलिए फिरता रहा क्योंकि वह यहूदिया प्रान्त के आसपास भी जाना नहीं चाहता था। {वह यहूदिया से दूर इसलिए रहा} क्योंकि वहाँ यहूदी अगुवे उसकी हत्या करने का कोई उपाय ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे थे।

2 (अब उस समय पर यहूदियों का झोंपड़ियों का पर्व आने वाला था।)

John 7:1

3 यीशु के भाई उससे बोले, “यहाँ से निकल जा और यहूदिया
प्रान्त को चला जा जिससे कि तेरे चेले भी तुझे चमत्कारिक
कामों को करते हुए देख सकें।

4 {अपने चमत्कारिक कामों को यहूदिया में करना} क्योंकि
जो कोई भी प्रसिद्ध होना चाहता है वह कुछ भी गुप्त रूप से
नहीं करता। चूँकि तू इन सब चमत्कारों को कर रहा है, तो
{चमत्कारिक कामों को करने के द्वारा} सब लोगों पर उसे
प्रकट कर जो तू {होने का दावा} करता है!”

5 {यीशु के भाइयों ने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि उन्होंने भी
विश्वास नहीं किया था कि वह मसीह था।

6 क्योंकि {उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया था इसलिए,}
यीशु उनसे बोला, “यह मेरे लिए {यरूशलेम जाने का} सही
समय नहीं है, परन्तु तुम जब चाहो वहाँ जा सकते हो।

7 संसार में ऐसा कोई भी नहीं है जो तुम से घृणा कर सके।
हालाँकि, हर एक जन मुझ से इसलिए घृणा करता है क्योंकि
मैं घोषणा करता हूँ कि वे बुरे काम करते हैं।

8 तुम पर्व मनाने के लिए {यरूशलेम को} जाओ। मैं अभी पर्व
मनाने के लिए नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि अभी मेरे जाने का सही
समय नहीं है।”

9 अपने भाइयों से ऐसा कहने के बाद, यीशु गलील प्रान्त में
थोड़े समय और रहा।

10 हालाँकि, कुछ दिनों के बाद उसके भाई पर्व मनाने के लिए
चले गए, वह भी गया, परन्तु उसने गुप्त रूप से ऐसा किया।

11 क्योंकि यहूदी अगुवों ने पर्व में {यीशु के होने की आशा में
की थी}, उन्होंने उसे ढूँढ़ने का प्रयास भी किया। उन्होंने लोगों
से पूछा, “वह मनुष्य कहाँ है?”

12 भीड़ के लोग गुपचुप तरीके से यीशु के बारे में बहुत बातें
कर रहे थे। कुछ लोगों ने कहा, “वह एक भला मनुष्य है!”
परन्तु अन्यों ने कहा, “नहीं! वह भीड़ को बहकाता है!”

13 फिर भी, वे लोग यहूदी अगुवों से डरते थे, इसलिए उन्होंने
यीशु के बारे में सार्वजनिक रूप से बातें नहीं कीं।

14 झोंपड़ियों का पर्व मनाने का लगभग आधा समय बीतने पर,
यीशु ने मंदिर {के आँगन} में प्रवेश किया और वहाँ लोगों को
शिक्षा देना आरम्भ कर दिया।

15 यहूदी अगुवे {उसकी शिक्षा पर} चकित हो गए थे। उन्होंने
कहा, “इस मनुष्य ने तो कोई धार्मिक शिक्षा नहीं ली। वह
सम्भवतः पवित्रशास्त्र को इतने अच्छे से नहीं जान सकता!”

16 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, “जो मैं सिखाता हूँ वह मेरे
भीतर से नहीं आता। इसके विपरीत, यह परमेश्वर की ओर से
आता है, जिसने मुझे भेजा है।

17 यदि कोई जन वह करना चाहता है जो परमेश्वर चाहता है,
तो वह व्यक्ति यह जान जाएगा कि जो मैं सिखा रहा हूँ वह
परमेश्वर की ओर से आया है और वह मेरे स्वयं के अधिकार
के द्वारा नहीं है।

18 जो कोई भी अपने स्वयं के अधिकार से बोलता है वह केवल
अपनी महिमा करना चाहता है। हालाँकि, जो कोई भी उस
व्यक्ति की महिमा करना चाहता है जिसने उसे भेजा है तो वह
सत्य बोलता है और धार्मिकतापूर्ण कार्य करता है।

19 मूसा ने सचमुच तुम को {परमेश्वर की ओर से} व्यवस्था
प्रदान की थी। तुम में से कोई भी उस व्यवस्था का पूर्णरूप से
पालन नहीं करता। {चूँकि यह सत्य है,} तो तुम मेरी हत्या
करने का प्रयास क्यों कर रहे हो {क्योंकि जिसका तुम पालन
नहीं करते यह उस व्यवस्था की अवज्ञा ही माना जाता है}?”

20 भीड़ में से कुछ लोगों ने प्रतिउत्तर दिया, “कोई दुष्टात्मा तुझे
नियंत्रित कर रहा है! कोई भी तेरी हत्या करने का प्रयास नहीं
कर रहा है!”

21 यीशु ने भीड़ को प्रतिउत्तर दिया, “{क्योंकि} मैंने विश्रामदिन
में एक चमत्कारिक चंगाई की, इसलिए तुम सब चकित हो
गए।

22 क्योंकि {चंगाई जैसे कुछ काम विश्रामदिन में होंगे},
इसलिए मूसा ने तुम को खतने के विषय में व्यवस्था दी। {वह

व्यवस्था बताती है कि तुम को अपने पुत्र का उसके जन्म लेने के ठीक सात दिन बाद खतना करना चाहिए।} ({खतना} वास्तव में मूसा से आरम्भ नहीं हुआ था, परन्तु {यह संस्कार} तुम्हारे पूर्वजों {अब्राहम, इसहाक, और याकूब} से आरम्भ हुआ था।) {इस व्यवस्था के कारण,} कभी-कभी तुम को विश्रामदिन में अपने नर बच्चे का खतना करने के द्वारा काम करना पड़ता है।

23 चूँकि कभी-कभी तुम मूसा की व्यवस्था की अवज्ञा करने से बचने के लिए विश्रामदिन में किसी व्यक्ति का खतना कर देते हो, तो उस दिन में किसी व्यक्ति को चंगा करने {के समान भला काम करने} के कारण तुम को मुझ पर भी क्रोधित नहीं होना चाहिए!

24 जो तुम ने देखा उसके अनुसार मेरा न्याय करना बंद करो! बजाए इसके, मेरा न्याय उसके अनुसार करो जिसके लिए परमेश्वर कहता है कि सही है।"

25 तब भीड़ में से कुछ लोगों ने जो यरूशलेम में निवास करते थे कहा, "यह तो वह मनुष्य है जिसकी हत्या करने का प्रयास हमारे अगुवे कर रहे हैं!

26 देखो! यह तो इन बातों को सार्वजनिक रूप से कह रहा है, परन्तु हमारे अगुवे उसके विरोध में कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि हमारे अगुवे वास्तव में जानते हों कि यही मसीह है?

27 परन्तु {यह मनुष्य मसीह नहीं हो सकता!} हम जानते हैं कि यह मनुष्य कहाँ से आया है, परन्तु जब मसीह आएगा, तो कोई भी नहीं जान पाएगा कि वह कहाँ से आया है।"

28 जिस समय वह मंदिर {के आँगन} में शिक्षा दे रहा था तब यीशु ऊँची आवाज में बोल उठा। उसने कहा, "हाँ, तुम मुझे जानते हो, और तुम यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से आया हूँ। परन्तु मैं यहाँ स्वयं के अधिकार से नहीं आया हूँ। बजाए इसके, जिसने मुझे भेजा वह सच्चा परमेश्वर है, और तुम उसे नहीं जानते।

29 मैं उसे इसलिए जानता हूँ क्योंकि मैं उसके पास से आया हूँ। वही है जिसने मुझे भेजा है।"

30 क्योंकि {यीशु ने इन बातों को कहा इसलिए}, यहूदी अगुवे उसे बंदी बनाना चाहते थे, परन्तु कोई भी उसे इसलिए पकड़ नहीं सका, क्योंकि {मरने के लिए} यह अभी उसका सही समय नहीं था।

31 {यहूदी अगुवों} के अलावा , भीड़ में से बहुत से लोगों ने यीशु पर भरोसा किया। वे लगातार कहते रहे, "जब मसीह आएगा, तो वह निश्चय ही इस मनुष्य की तुलना में अधिक चमत्कारिक चिन्ह प्रकट करने में सक्षम नहीं होगा!"

32 कुछ फरीसियों ने उनको यीशु के बारे में इन बातों को गुपचुप तरीके से कहते हुए सुना। तब उन्होंने और शासकीय याजकों ने उसे बंदी बनाने के लिए मंदिर के पहरुओं को भेजा।

33 क्योंकि {उन्होंने ऐसा किया, इसलिए} यीशु ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ केवल थोड़े समय और रहूँगा। शीघ्र ही मैं परमेश्वर के पास वापस चला जाऊँगा, जिसने मुझे भेजा है।

34 तुम मुझे खोजोगे, परन्तु ढूँढ़ नहीं पाओगे। जहाँ मैं होऊँगा उस स्थान पर तुम नहीं आ पाओगे।"

35 इसलिए उन यहूदी अगुवों ने एक दूसरे से कहा, "यह मनुष्य कहाँ जा सकता है जहाँ हम उसे ढूँढ़ नहीं सकते? क्या यह वास्तव में उन यहूदियों के पास जाएगा जो इस्राएल के बाहर सारे संसार में फैल गए हैं? क्या यह वहाँ के उन लोगों को भी शिक्षा देगा जो यहूदी नहीं हैं?

36 जब उसने कहा कि हम उसे खोजेंगे, परन्तु ढूँढ़ नहीं पाएँगे, और जहाँ वह होगा उस स्थान पर हम नहीं आ पाएँगे तो उसके कहने का अर्थ क्या था?"

37 अब {झोंपड़ियों के} पर्व के अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिन में, यीशु {मंदिर के आँगन में खड़ा हुआ} और ऊँची आवाज में बोला। उसने कहा, "जो कोई भी प्यासा है वह मेरे पास आए और {जो मैं उनको दूँगा} वह पीए!

38 यही है जो भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में उस व्यक्ति के बारे में लिखा है जो मुझ पर भरोसा करता है: 'वह पानी जो अनन्त जीवन प्रदान करता है उस व्यक्ति के अंदर से बहुतायत से बहेगा।'"

39 (अब यीशु ने यह पवित्र आत्मा के बारे में कहा था, जिसे परमेश्वर उनको देने जा रहा था जिन्होंने यीशु पर भरोसा किया था। {उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि {उस समय तक परमेश्वर ने} पवित्र आत्मा {नहीं भेजा था कि उनमें वास करे जिन्होंने उस पर भरोसा किया था}, क्योंकि यीशु को अभी तक {उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्ग में वापस आने के द्वारा} सम्मान नहीं मिला था}।)

40 जो यीशु ने कहा था जब भीड़ में से कुछ लोगों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, "सचमुच यह वही भविष्यद्वक्ता है {जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि वह आएगा}!"

41 भीड़ में से कुछ अन्य लोगों ने कहा, "यह तो मसीह है!" हालाँकि, अन्यों ने {जिन्होंने भूल से सोचा था कि यीशु ने गलील में जन्म लिया था,} कहा, "परन्तु सम्भवतः मसीह गलील प्रान्त से नहीं आ सकता।

42 भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में लिखा है कि मसीह को दाऊद के वंश से आना है और उसे बैतलहम गाँव से {आना है}, जहाँ से दाऊद आया था!"

43 इस प्रकार से भीड़ के लोग यीशु के कारण {विरोध करने वाले समूहों में} विभाजित हो गए।

44 (भीड़ में से कुछ लोग उसे बंदी बनाना चाहते थे। हालाँकि, उसे किसी ने भी नहीं पकड़ा।)

45 तब मंदिर के पहरुए शासकीय याजकों और फरीसियों के पास लौट आए, जिन्होंने उनसे पूछा, "तुम ने उसे बंदी क्यों नहीं बनाया और उसे यहाँ लेकर क्यों नहीं आए?"

46 मंदिर के पहरुओं ने उत्तर दिया, "किसी ने भी कभी ऐसे बात नहीं की है जैसे इस मनुष्य ने की है!"

47 क्योंकि {पहरुओं ने ऐसा कहा इसलिए,} फरीसियों ने पूछने के द्वारा प्रतिउत्तर दिया, "क्या ऐसा हो सकता है कि उसने तुम को भी बहका दिया है?

48 निश्चय ही, हमारे सर्वोच्च शासकीय परिषद के सदस्यों या हम फरीसियों में से किसी ने भी उस पर भरोसा नहीं किया है!

49 हालाँकि, लोगों की यह भीड़ परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं जानती, और परमेश्वर ने उनको श्राप दिया है!"

50 तब नीकुदेमुस बोला। (वह वही मनुष्य था जो अतीत में यीशु के पास {उससे बात करने के लिए रात में} आया था। {उसने ऐसा किया था} भले ही वह एक फरीसी था, {जो कि वह समूह था जिसने आमतौर पर यीशु का विरोध किया था}।) वह उन यहूदी धार्मिक अगुवों से बोला,

51 "हमारी यहूदी व्यवस्था निश्चय ही हमें किसी भी जन की बात सुने बिना और उसके द्वारा किये गये कार्यों के बारे में जाने बिना कि उसने क्या किया है दोष लगाने की अनुमति नहीं देती है।"

52 उन्होंने अपमानजनक रीति से उसे प्रतिउत्तर दिया, "निश्चय ही, तू भी गलील प्रान्त से तो नहीं है! क्या तू है? पवित्रशास्त्र को ध्यान से पढ़ ले! {यदि तू ऐसा करे,} तो तू देखेगा कि गलील से कोई भी भविष्यद्वक्ता नहीं आता है।"

53 [फिर वे सब चल दिए और अपने-अपने घरों को चले गए।

John 8:1

1 यीशु जैतून के पहाड़ पर गया {और उस रात वहीं पास में रहा}।

2 अगली सुबह भोर में, यीशु मंदिर {के आँगन} में लौटा और बहुत से लोग उसके पास आए।

3 व्यवस्था के कुछ शिक्षक और फरीसी उसके पास एक स्त्री को लेकर आए। उन्होंने उसे तब पकड़ा था जब वह व्यभिचार कर रही थी। उन्होंने उस समूह के बीच में उसे खड़ा कर दिया।

4 याजक यीशु को परखना चाहते थे ताकि उस पर {मूसा की व्यवस्था को तोड़ने के बारे में सर्वोच्च यहूदी प्रशासनिक परिषद के सम्मुख} दोष लगाने में सक्षम हों। इसलिए उन्होंने उससे कहा, "हे गुरु, हम ने इस स्त्री को तब पकड़ा जब वह व्यभिचार कर रही थी, जो अपने आप में एक घृणित कार्य है!

5 अब मूसा ने तो व्यवस्था में हमें आदेश दिया है कि हमें इस प्रकार की स्त्रियों को पत्थरवाह करके मार देना चाहिए। फिर भी, तू क्या कहता है कि हमें क्या करना चाहिए?"

6 हालाँकि, यीशु नीचे की ओर झुका और अपनी उंगली से भूमि पर कुछ लिखने लगा।

7 जब वे उससे लगातार प्रश्न करते ही रहे, तो वह उठा और उनसे बोला, "तुम में से वह व्यक्ति जिसने कभी पाप नहीं किया उस पर पहला पत्थर फेंके {और उसकी हत्या करने में बाकियों की अगुवाई करे}!"

8 तब यीशु फिर से नीचे झुका और अपनी उंगली से भूमि पर कुछ लिखने लगा।

9 {उसके ऐसा करने के बाद,} उन यहूदी अगुवों ने {जो उससे प्रश्न कर रहे थे} एक के बाद एक करके वहाँ से चले जाना आरम्भ कर दिया। बूढ़े लोग पहले चले गए और उसके बाद जवान लोग। फिर वहाँ लोगों के बीच में से उस स्त्री के साथ केवल यीशु रह गया।

10 यीशु खड़ा हुआ और उससे पूछा, "वे लोग कहाँ हैं {जो तुझ पर दोष लगा रहे थे}? क्या किसी ने भी तुझे {दंडित करने के लिए} दंड नहीं दिया?"

11 उस स्त्री ने प्रतिउत्तर दिया, "हे महोदय, ऐसा कोई नहीं है।" तब यीशु ने कहा, "मैं भी तुझे {दंडित करने के लिए} दंड नहीं देता। चली जा, और अब से ऐसा पाप फिर मत करना!"]

12 यीशु ने फिर से लोगों से बात की। उसने कहा, "मैं वही हूँ जो संसार में रहने वाले लोगों को परमेश्वर की भली और सच्ची ज्योति प्रदान करता है। जो कोई भी मेरा चेला बन जाता है वह {फिर} कभी {पापमय} अंधकार में नहीं चलेगा। बजाए इसके, उस व्यक्ति को परमेश्वर की भली और सच्ची ज्योति प्राप्त होगी जो अनन्त जीवन प्रदान करती है।

13 तब उन फरीसियों ने उससे कहा, "तेरे विषय में केवल तू ही गवाह है! {चूँकि मूसा की व्यवस्था को कम से कम दो गवाहों की आवश्यकता होती है,} इसलिए जो तू कहता है वह सत्य नहीं हो सकता!"

14 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यहाँ तक कि यदि अपने विषय में केवल मैं ही गवाह हूँ, तो जो मैं कहता हूँ वह अभी भी सत्य है क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और {मैं जानता हूँ कि} मैं कहाँ जा रहा हूँ। फिर भी तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और {तुम नहीं जानते कि} मैं कहाँ जा रहा हूँ।

15 मानवीय मानकों के अनुसार तुम मनुष्यों का न्याय करते हो। {हालाँकि,} मैं {उस तरीके से} मैं किसी का न्याय करने के लिए नहीं आया हूँ।

16 यहाँ तक कि जब मैं लोगों का न्याय करूँगा, तो मैं उनका न्याय सच्चे मानकों के अनुसार करूँगा, क्योंकि मैं लोगों का न्याय अपने आप से नहीं करता। बजाए इसके, मैं और मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है, {एक साथ लोगों का न्याय करेंगे}।

17 मूसा ने भी तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि जब कम से कम दो गवाह एक ही बात को कहें, तो जो वे कहते हैं वह सत्य है।

18 मैं अपना स्वयं का गवाह हूँ, परन्तु मेरा पिता जिसने मुझे भेजा है वह भी मेरा गवाह है। {इसलिए, जो मैं कहता हूँ वह सत्य है}।"

19 क्योंकि {यीशु ने कहा था कि उसका पिता उसके लिए गवाह है,} इसलिए फरीसियों ने उससे पूछा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "तुम मुझे नहीं जानते, और तुम मेरे पिता को भी नहीं जानते। यदि तुम मुझे जानते, तो तुम मेरे पिता को भी जानते, {परन्तु तुम नहीं जानते हो}।"

20 अपने बारे में यह सब बातें उसने तब कहीं जब वह मंदिर {के आँगन} में शिक्षा दे रहा था। {उसने इन बातों को} {मंदिर के आँगन में} उस स्थान में कहा जहाँ लोग धन की भेंट लेकर आया करते थे। किसी ने भी उसे नहीं पकड़ा, क्योंकि अभी यह उसके मर जाने के लिए सही समय नहीं था।

21 तब यीशु ने फिर से लोगों से कहा, "मैं जा रहा हूँ, और तुम मेरी खोज करोगे, परन्तु चूँकि तुम ने पापपूर्ण रीति से मुझे अस्वीकार कर दिया, इसलिए परमेश्वर के द्वारा तुम को क्षमा किए बिना ही तुम मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ उस स्थान में तुम नहीं आ सकते।"

22 तब उन यहूदी अगुवों ने {आपस में} कहा, "सम्भवतः वह स्वयं को मार डालने की योजना बना रहा है, और इसलिए

{उसका अर्थ यही है} जब वह कहता है कि जहाँ वह जा रहा है उस स्थान में हम नहीं आ सकते।"

23 यीशु उनसे बोला, "तुम नीचे इस पृथ्वी के हो, परन्तु मैं ऊपर स्वर्ग का हूँ। तुम इस पापी संसार से सम्बन्ध रखते हो। मैं इस पापी संसार से सम्बन्ध नहीं रखता हूँ।

24 इसी कारण से मैंने तुम को बोला था कि परमेश्वर के द्वारा उन सारे पापों के लिए जिनको तुम ने किया है तुम को क्षमा किए बिना ही तुम मर जाओगे। यह निश्चय ही घटित होगा जब तक कि तुम भरोसा नहीं करते कि मैं ही {परमेश्वर हूँ, जैसा कि मैं कहता हूँ कि मैं हूँ}।"

25 क्योंकि {उसने ऐसा कहा था}, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "तू है कौन?" यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यही तो मैं तुम से एकदम आरम्भ से ही बोल रहा हूँ!

26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत सारी बातें कह सकता हूँ और तुम्हारा न्याय कर सकता हूँ, {परन्तु इस समय मैं उन कामों को नहीं करूँगा}। बजाए इसके, मैं संसार में रहने वाले लोगों को केवल वही बताऊँगा जो मैंने उससे सुना जिसने मुझे भेजा है। वह हमेशा सत्य ही बोलता है।"

27 (वे समझ नहीं पाए कि यीशु उनको {स्वर्ग में विराजमान} अपने पिता के बारे में बता रहा था।)

28 इसलिए यीशु उनसे बोला, "जब मेरी हत्या करने के लिए तुम मुझे, अर्थात मनुष्य के पुत्र को, ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो तुम जान लोगे कि मैं ही {परमेश्वर} हूँ, और {तुम जान लोगे} कि मैं अपने स्वयं के अधिकार से कुछ भी नहीं करता हूँ। बजाए इसके, मैं केवल वही कहता हूँ जो मेरे पिता ने मुझे कहने के लिए सिखाया है।

29 मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, हमेशा मेरे साथ है। उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा केवल उन कामों को करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।"

30 जब यीशु इन बातों को कह रहा था, तो बहुत सारे लोगों ने विश्वास किया कि वही मसीह है।

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने विश्वास किया था कह दिया कि वही मसीह है, "यदि तुम उसका पालन करो जो मैं सिखाता हूँ, तो तुम मेरे सच्चे चेले हो।

32 {इसके अलावा,} तुम परमेश्वर के सत्य को जानोगे, और उस सत्य पर {विश्वास करना} तुम को उससे स्वतंत्र करेगा {जिसने तुम को दास बना रखा है}।"

33 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "हम तो अब्राहम के वंशज हैं। हम तो कभी भी किसी के दास नहीं हुए हैं! तो तू क्यों कहता है कि हमें स्वतंत्र होने की आवश्यकता है?

34 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: हर कोई जो पाप करता है {वह अपनी पापी इच्छाओं के द्वारा नियंत्रित होता है} जैसे कोई दास {अपने स्वामी के द्वारा नियंत्रित किया जाता है}।

35 दास {अपने स्वामी के परिवार के सदस्यों} के जैसे सदा बना नहीं रहता, {परन्तु शायद स्वतंत्र कर दिया जाए या बेच दिया जाए}। {हालाँकि,} एक पुत्र ही सदा तक उस परिवार का सदस्य होता है।

36 इसलिए यदि पुत्र तुम को {पाप के दास होने से} स्वतंत्र करता है, तो तुम पूर्णरूप से {पाप करने से} दूर होने में सक्षम हो पाओगे।

37 मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के शारीरिक वंशज हो। हालाँकि, तुम मेरी हत्या करने का प्रयास इसलिए कर रहे हो क्योंकि तुम उस बात पर भरोसा करने से इन्कार करते हो जो मैं कहता हूँ।

38 मैं तुम से उन बातों के बारे में कह रहा हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाई हैं। इसलिए, {मैं कहता हूँ कि} तुम वही करो जो तुम्हारे पिता ने तुम से करने के लिए कहा है।"

39 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "हमारा पिता अब्राहम है।" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अब्राहम के वंशज होते, तो तुम उन्हीं कामों को कर रहे होते जिनको उसने किया था।

40 मैं तुम को वह सच्ची बातें बता रहा हूँ जो परमेश्वर ने मुझे
बताई हैं, परन्तु तुम मेरी हत्या करने का प्रयास कर रहे हो।
अब्राहम ने इस प्रकार का कुछ भी नहीं किया था।

41 तुम बिलकुल वैसे ही कामों को कर रहे हो जैसे तुम्हारे
असली पिता ने किए थे।" वे उससे बोले, "हम अवैध संतान
नहीं हैं, {जैसे कि तू है}! हमारा केवल एक ही पिता है, और वह
परमेश्वर है।"

42 यीशु उनसे बोला, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, जो कि
है नहीं, तो तुम मुझ से प्रेम करते क्योंकि मैं उसी की ओर से
आया हूँ और मैं इस संसार के पास आया हूँ। {यह इसलिए
सत्य है} क्योंकि मैं अपने स्वयं के अधिकार से नहीं आया।
बजाए इसके, मैं इसलिए आया क्योंकि परमेश्वर ने मुझे भेजा
है।

43 क्या तुम जानते हो कि जो मैं कहता हूँ तुम उसे क्यों नहीं
समझते? ऐसा इसलिए है क्योंकि जो मैंने तुम से कहा तुम उसे
स्वीकार नहीं करते {और उसका पालन नहीं करते}!

44 तुम तुम्हारे पिता, शैतान से सम्बन्धित हो और तुम वही
करने की इच्छा करते हो जो वह इच्छा करता है। वह उस
समय से लोगों की हत्या कर रहा है जब लोगों ने पहली बार
{पाप किया था}। जो सत्य है उसे उसने इसलिए अस्वीकार
कर दिया, क्योंकि वह कभी भी उन सत्य बातों को नहीं
बोलता। जब कभी भी वह झूठ बोलता है, तो वह वही कर रहा
होता है जो उसके लिए स्वभाव के अनुसार है, क्योंकि वह तो
झूठा है। यहाँ तक कि वह तो झूठ बोलने का मूल है।

45 अभी भी तुम मुझ पर इसलिए विश्वास नहीं करते, क्योंकि
मैंने तुम को वह बता दिया जो सत्य है!

46 {चूँकि मैंने कभी पाप नहीं किया,} इसलिए तुम में से कोई
भी साबित नहीं कर सकता कि मैंने किया है। चूँकि जो सत्य है
मैं तुम को वही बताता हूँ, इसलिए ऐसा कोई भी भला कारण
तुम्हारे पास नहीं है कि उस पर विश्वास न करो जो मैं कहता
हूँ!

47 जो परमेश्वर से सम्बन्धित हैं वे उसे स्वीकार करते हैं {और
उसका पालन करते हैं} जो उसने कहा है। चूँकि {यह सत्य
है,} इसलिए तुम स्वीकार नहीं करते {और पालन नहीं करते}
जो परमेश्वर ने कहा है, क्योंकि तुम परमेश्वर से सम्बन्धित नहीं
हो।"

48 यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने उसे प्रतिउत्तर दिया,
"हम निश्चित रूप से सही हैं जब हम कहते हैं कि तू सामरियों
में से एक है, {जिनसे हम घृणा करते हैं,} और यह कि कोई
दुष्टात्मा तुझे नियंत्रित कर रही है!"

49 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "मुझे कोई दुष्टात्मा नियंत्रित नहीं
कर रही है! इसके विपरीत, मैं {स्वर्ग में विराजमान} अपने
पिता का सम्मान करता हूँ, और तुम मेरा अपमान करते हो!

50 मैं लोगों के पीछे पड़ने की इच्छा नहीं करता कि वे मेरी
बड़ाई करें। कोई और है जो ऐसा करने की इच्छा करता है
और न्याय करता है {चाहे तुम या फिर मैं सच बोल रहे हों}।

51 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई मेरी शिक्षा का पालन
करता है वह निश्चय ही कभी न मरेगा!"

52 यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने उससे कहा, "अब
हमें निश्चय है कि कोई दुष्टात्मा तुझे नियंत्रित कर रहा है!
अब्राहम और भविष्यद्वक्ता तो बहुत पहले मर गए! तौभी तू
कहता है कि जो कोई तेरी शिक्षा का पालन करता है वह निश्चय
ही कभी न मरेगा!

53 तू निश्चय ही हमारे पिता अब्राहम से बढ़कर नहीं है! वह मर
गया और सारे भविष्यद्वक्ता भी मर गए। {इसलिए} तू क्या
सोचता है कि तू कौन है?"

54 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यदि मैं लोगों के पीछे पड़ूँ कि वे
मेरी बड़ाई करें, तो वह बड़ाई बेकार होगी। वह मेरा पिता ही
है जो मेरी बड़ाई करता है। वही है जिसे तुम कहते हो कि वह
तुम्हारा परमेश्वर है।

55 यद्यपि तुम परमेश्वर को जानते नहीं, मैं उसे जानता हूँ। यदि
मैंने कहा कि मैं उसे नहीं जानता, तो तुम में से हर एक के
समान मैं भी झूठा ठहरता। तुम्हारे विपरीत, मैं उसे जानता हूँ,
और जो वह कहता है मैं हमेशा उस बात का पालन करता हूँ।

56 तुम्हारा पिता अब्राहम {यह सोच कर} अति आनन्दित था
कि वह मुझे संसार में आता हुआ देखने पाएगा। {परमेश्वर ने
उसे अनुमति दी} कि मुझे आता हुआ देखे, और वह प्रसन्न
था।"

57 क्योंकि {यीशु ने ऐसा कहा}, इसलिए उसका विरोध करने वाले यहूदियों ने उससे कहा, "{अब्राहम तो बहुत समय पहले ही मर गया, और} तू तो पचास वर्ष की आयु का भी नहीं है! तो तूने अब्राहम को कैसे देख लिया?"

58 यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: अब्राहम के जन्म लेने से पहले मैं {परमेश्वर} था!"

59 क्योंकि {वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा था,} इसलिए यीशु का विरोध करने वाले यहूदियों ने {उसकी हत्या करने के लिए} उस पर फेंकने के लिए पत्थर उठा लिए। परन्तु यीशु {भीड़ में} छिपकर मंदिर {के आँगन} में से निकल गया।

John 9:1

1 जब यीशु मार्ग से होकर जा रहा था, तो उसने एक मनुष्य को देखा जो तब से अंधा था जिस दिन वह जन्मा था।

2 उसके चेलों ने उससे पूछा, "हे गुरु, किसके पाप ने इस मनुष्य को तब अंधा कर दिया जब इसने जन्म लिया था? क्या इस मनुष्य के या इसके माता-पिता के पाप ने?"

3 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यह न तो इस मनुष्य का पाप था और न ही इसके माता-पिता का पाप था {जिसने इसे तब अंधा कर दिया जब इसने जन्म लिया था}। बजाए इसके, {जब इसने जन्म लिया तो यह अंधा था} ताकि मैं लोगों पर उन चमत्कारिक कामों को प्रकट करूँ जिनको परमेश्वर उसमें करेगा।

4 जबकि मैं अभी तक तुम्हारे साथ हूँ, तो हमें उन चमत्कारिक कामों को करना अवश्य है जिनको मेरा पिता जिसने मुझे भेजा चाहता है कि हम करें। जिस प्रकार से दिन के बाद रात होती है, जिसमें लोग काम नहीं कर सकते, वैसे ही एक समय आएगा जब वह करने के लिए हमें बहुत देर हो चुकी होगी जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें।

5 जबकि मैं अभी भी इस संसार में रह रहा हूँ, तो मैं वही हूँ जो इस संसार में रहने वाले लोगों को परमेश्वर की भली और सच्ची ज्योति प्रदान करता है।

6 जब उसने यह कहा, तो उसने मिट्टी पर थूका और अपनी लार को {मिट्टी के साथ} मिलाकर गारा बनाया। फिर उसने उस गारे को उस अंधे मनुष्य की आँखों पर लगा दिया।

7 फिर यीशु ने उस अंधे मनुष्य से कहा, "जा और {गारे} को शिलोह के कुंड में धो ले!" ({अरामी भाषा में} 'शिलोह' का अर्थ 'भेजा हुआ' होता है)। अतः वह मनुष्य चला गया और {कुंड में गारे को} धो लिया। जब वह देख पाने में सक्षम हो गया तो फिर वह {घर} चला गया।

8 उस मनुष्य के पड़ोसियों और अन्यों ने जिन्होंने उसे अतीत में देखा था और जानते थे कि वह एक भिखारी था और कहा, "निश्चय ही यह वही मनुष्य है जो यहाँ बैठता था और भीख माँगता था!"

9 कुछ लोगों ने कहा, "हाँ, यह वही मनुष्य है।" अन्य लोगों ने कहा, "नहीं, परन्तु यह तो बस उस मनुष्य की तरह दिखता है।" हालाँकि, उस मनुष्य ने स्वयं ही कहा, "हाँ, मैं वही मनुष्य हूँ जो अंधा था!"

10 इसलिए उन्होंने उससे पूछा, "तो ऐसा कैसे हुआ कि तू अब देख सकता है?"

11 उसने प्रतिउत्तर दिया, "वह मनुष्य जिसे लोग यीशु कहते हैं उसने {मिट्टी और लार से} गारा बनाया और उसे मेरी आँखों पर लगा दिया। फिर उसने मुझ से शिलोह के कुंड में जाकर {गारे को} धो लेने के लिए कहा। अतः मैं वहाँ गया और {गारे को} धो लिया। तब मैं {पहली बार} देख पाने में सक्षम हो गया।"

12 उन्होंने उससे पूछा, "वह मनुष्य कहाँ है?" उसने प्रतिउत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है।"

13 {वहाँ के कुछ लोग} उस मनुष्य को जो पहले अंधा था कुछ फरीसियों के पास ले गए।

14 (अब जिस दिन यीशु ने {अपनी लार से} गारा बनाया था और उस मनुष्य को देख पाने में सक्षम किया था वह यहूदियों का विश्रामदिन था।)

John 9:1

15 तब उन फरीसियों ने उस मनुष्य से दूसरी बार प्रश्न किए। {इस बार} भी, उन्होंने उससे इस बारे में पूछा कि वह देख पाने में सक्षम कैसे हुआ। उसने उनसे कहा, "उस मनुष्य ने मेरी आँखों पर गारा लगाया, और मैंने {उसे} धो लिया, और अब मैं {पहली बार} देख पाने में {सक्षम हूँ}।"

16 तब फरीसियों में से कुछ ने कहा, "{हम जानते हैं कि} यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं आया है, क्योंकि वह यहूदियों के विश्रामदिन के नियमों का पालन नहीं करता है।" कुछ अन्य फरीसियों ने कहा, "निश्चय ही कोई पापी मनुष्य इस प्रकार के चमत्कारिक चिन्हों को नहीं कर सकता जो यह मनुष्य करता है!" इसलिए वे फरीसी {इस बारे में कि यीशु कौन था} एक-दूसरे से असहमत हो गए।

17 इसलिए फरीसियों ने उस अंधे मनुष्य से एक बार फिर से पूछा, "उस मनुष्य के बारे में तू क्या कहता है, चूँकि तू कहता है कि वही है जिसने तुझे देख पाने में सक्षम किया?" उस मनुष्य ने कहा, "वह अवश्य ही एक भविष्यद्वक्ता है।"

18 क्योंकि {उस मनुष्य ने यह विश्वास किया कि यीशु एक भविष्यद्वक्ता था}, इसलिए यहूदी अगुवों ने विश्वास नहीं किया कि यह मनुष्य अंधा था और फिर देख पाने में सक्षम हो गया जब तक कि उन्होंने उस मनुष्य के माता-पिता को बुला नहीं लिया {ताकि उनसे प्रश्न करें}।

19 उन्होंने उस मनुष्य के माता-पिता से पूछा, "क्या यह मनुष्य तुम्हारा पुत्र है? क्या तुम यह कहते हो कि जब यह जन्मा तो यह अंधा था? {यदि ऐसा है तो,} फिर इस समय यह देख पाने में सक्षम कैसे है?"

20 उसके माता-पिता ने प्रतिउत्तर दिया, "हमें निश्चय है कि यह मनुष्य हमारा ही पुत्र है। हमें यह भी निश्चय है कि जब यह जन्मा तो यह अंधा था।

21 फिर भी, हम नहीं जानते कि इस समय वह देख पाने में सक्षम कैसे है। हम यह भी नहीं जानते कि उसे देख पाने में किसने सक्षम किया। उसी से पूछो। वह अपने पक्ष में बोलने के लिए पर्याप्त आयु का है।"

22 (यहूदी अगुवों ने पहले से ही आपस में इस बात की सहमति कर ली थी कि जो भी यह घोषणा करेगा कि यीशु ही मसीह है वे उसे यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर देंगे। इस कारण से, उस मनुष्य के माता-पिता उनसे डरे हुए थे और उनसे इन बातों को बोला था।)

23 इस कारण से भी उन्होंने यहूदी अगुवों से कहा था कि "उसी से पूछो। वह पर्याप्त आयु का है।"

24 इसलिए यहूदी अगुवों ने दूसरी बार उस मनुष्य को बुलाया जो पहले अंधा था। उन्होंने उससे कहा, "{केवल सत्य कहने के द्वारा} परमेश्वर की महिमा कर! हमें स्वयं भी निश्चय है कि वह मनुष्य {जिसके लिए तू कहता है कि उसने तुझे चंगा किया} पापी है।"

25 उस मनुष्य ने जिसे यीशु ने चंगा किया था प्रतिउत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं। मैं तो एक बात जानता हूँ जो यह है कि मैं पहले अंधा था, परन्तु अब मैं देख सकता हूँ।"

26 फिर उन्होंने उससे पूछा, "उसने {तुझे चंगा करने के लिए} तेरे साथ क्या किया? उसने तुझे देख पाने में कैसे सक्षम किया?"

27 उसने प्रतिउत्तर दिया, "मैं तुम को पहले ही उन प्रश्नों के उत्तर बता चुका हूँ, परन्तु जो मैंने कहा तुम ने वह सुना नहीं। तुम क्यों चाहते हो कि मैं तुम को फिर से बताऊँ? क्या ऐसा हो सकता है कि तुम भी उसके चेले बनने की इच्छा करते हो?"

28 तब उन्होंने अपमानजनक तरीके से उससे कहा: "तू ही उस मनुष्य का चेला है! जहाँ तक हमारी बात है, हम मूसा के चेले हैं!

29 हमें निश्चय है कि परमेश्वर ने {बहुत समय पहले} मूसा से बातें कीं। जहाँ तक इस मनुष्य की बात है, तो हम जानते भी नहीं कि वह कहाँ से आया है!"

30 उस मनुष्य ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं अचम्भित हूँ! तुम जानते भी नहीं कि वह कहाँ से आया है, परन्तु वही तो है जिसने मुझे देख पाने में सक्षम किया!

31 हमें निश्चय है कि परमेश्वर पापी लोगों {की प्रार्थनाओं} का उत्तर नहीं देता है। बजाए इसके, वह उन लोगों {की

प्रार्थनाओं} का उत्तर देता है जो उसकी आराधना करते हैं और जो वही करते हैं जो वह चाहता है कि वे करें।

32 पहले कभी भी किसी ने भी नहीं सुना कि किसी व्यक्ति ने ऐसे मनुष्य को देख पाने में सक्षम किया जो जब जन्मा था तब से ही अंधा था!

33 यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं आया होता, तो वह {इस प्रकार का चमत्कार} नहीं कर सकता था!"

34 यहूदी अगुवों ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "तू पूर्णरूप से {तेरे माता-पिता के} पापों के परिणामस्वरूप अंधा जन्मा था! तुझे हमें शिक्षा देने का साहस कैसे हुआ!" तब उन्होंने उसे यहूदी सभास्थल से प्रतिबंधित कर दिया।

35 यीशु ने सुना कि यहूदी अगुवों ने उस मनुष्य को यहूदी सभास्थल से प्रतिबंधित कर दिया जिसे उसने चंगा किया था। जब उसने {उसकी खोज की और} उसे ढूँढ़ लिया, तो उसने उससे पूछा, "क्या तू मनुष्य के पुत्र पर भरोसा करता है?"

36 उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "हे महोदय, वह कौन है? {कृपया मुझे बता दे,} ताकि मैं उस पर भरोसा करूँ।"

37 यीशु उससे बोला, "तूने उसे पहले ही देखा हुआ है। मैं वही हूँ जो तुझ से बातें कर रहा है।"

38 उस मनुष्य ने कहा, "हे प्रभु, मैं भरोसा करता हूँ {कि तू ही मनुष्य का पुत्र है}।" तब वह अपने घुटनों पर झुक गया और यीशु की आराधना की।

39 यीशु ने कहा, "मैं इस संसार में इसलिए आया हूँ ताकि इसके लोगों का न्याय करूँ। {इसका परिणाम होगा} कि वे लोग जो जानते हैं कि वे परमेश्वर के सत्य को नहीं समझते वे उसे ऐसे समझें, जैसे कोई अंधा व्यक्ति देख पाने में सक्षम हो रहा है। {दूसरा परिणाम ऐसा होगा कि} जो लोग सोचते हैं कि वे परमेश्वर के सत्य को समझते हैं वे उसे नहीं समझेंगे, जैसे वह व्यक्ति जो देखता था और अंधा हो गया।"

40 कुछ फरीसियों ने जो यीशु के निकट थे जब उसे यह कहते सुना, तो उन्होंने उससे पूछा, "क्या तू ऐसा सोचता है कि हम भी अंधे लोगों के समान परमेश्वर के सत्य को नहीं समझ सकते?"

41 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम जानते हो कि तुम आत्मिक रूप से अंधे हो, तो तुम पाप के लिए दोषी नहीं ठहरोगे। हालाँकि, क्योंकि तुम किसी देखने वाले के समान परमेश्वर के सत्य को समझने का दावा करते हो, तो तुम अभी भी अपने पाप के लिए दोषी हो।

John 10:1

1 "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई भी भेड़शाला में बाड़े के द्वार के अलावा किसी दूसरे मार्ग से प्रवेश करता है वह चोर या डाकू है {जो भेड़ों को चुराने के लिए आया है}।

2 जो मनुष्य भेड़शाला में द्वार से होकर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है {जो देखभाल करने वाला है}।

3 {जब चरवाहा कहीं गया हो} तो वह व्यक्ति जो द्वार की रखवाली करने वाला है {जब वह आता है} चरवाहे के लिए द्वार को खोल देता है। भेड़ें चरवाहे की आवाज को सुनती हैं। वह भेड़ों में से {प्रत्येक को} जो उसकी हैं नाम लेकर बुलाता है और उनको बाड़े में से बाहर ले जाता है।

4 जब चरवाहा उन सब भेड़ों को बाड़े से बाहर ले जा चुका होता है जो उसकी हैं, तो वह उनके आगे-आगे चलता है। उसकी भेड़ें {पीछे-पीछे} उसका अनुसरण करती हैं क्योंकि वे उसकी वाणी को पहचानती हैं।

5 उसकी भेड़ें कभी भी किसी ऐसे जन के पीछे नहीं जातीं जिसको वे जानती नहीं। बजाए इसके, वे उसके पास से भाग जाएँगी क्योंकि वे उन लोगों की वाणी को नहीं पहचानतीं जिनको वे जानती नहीं।"

6 यीशु ने {चरवाहों द्वारा किए जाने वाले काम से लेकर} यह दृष्टांत फरीसियों को बताया। फिर भी वे समझे नहीं कि उस दृष्टांत का क्या अर्थ था।

7 इसलिए यीशु उनसे फिर से बोला, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ: मैं वह द्वार हूँ जिससे होकर भेड़ें भेड़शाला में प्रवेश करती हैं।

John 10:1

8 सारे ही अगुवे जो मुझ से पहले {परमेश्वर के अधिकार के
बिना} आए वे चोर और डाकू थे। हालाँकि, सच्ची भेड़ों ने
उनकी आज्ञा नहीं मानी।

9 मैं स्वयं ही {स्वर्ग का} द्वार हूँ। परमेश्वर उस व्यक्ति को
{अनन्त दंड से} बचाएगा जो मुझ पर भरोसा करने के द्वारा
उसके पास आता है। {जो कोई मुझ पर भरोसा करता है} वह
ऐसी भेड़ के समान होगा जो सुरक्षित होकर यहाँ-वहाँ फिरती
है और चारा पाती है।

10 तुम्हारे अगुवे चोरों के समान हैं जो केवल भेड़ों को चुराने,
हत्या करने, और नाश करने के लिए आते हैं। मैं भेड़ों को
अनन्त जीवन देने के लिए आया हूँ, जो {आशीषों से} भरपूर
होगा।

11 मैं स्वयं एक अच्छे चरवाहे के समान हूँ। अच्छा चरवाहा
अपनी भेड़ों को {सुरक्षित करने और बचाने के लिए} मर जाने
के लिए तैयार रहता है, {और वैसे ही मैं भी अपने चेलों के लिए
मर जाने हेतु तैयार हूँ।

12 {कल्पना करो कि} कोई जन एक ऐसे व्यक्ति को भाड़े पर
रखता है जो चरवाहा नहीं है उन भेड़ों की रखवाली के लिए
जो उस व्यक्ति की नहीं हैं। तो जब वह {भेड़ों को मार डालने
के लिए} भेड़िए को आता देखता है, तो वह भेड़ों को छोड़ कर
भाग जाता है, जिससे कि भेड़िया उनमें से कुछ को पकड़ लेता
है और बाकियों को तितर-बितर कर देता है।

13 {वह भाड़े पर रखा हुआ व्यक्ति इसलिए भाग जाता है}
क्योंकि वह {भेड़ों की सुरक्षा केवल} धन प्राप्त करने के लिए
कर रहा था। इसलिए भेड़ों के साथ जो घटित होता है वह उस
बारे में चिन्ता नहीं करता।

14 मैं स्वयं एक अच्छे चरवाहे के समान हूँ। {जिस प्रकार से
अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है और उसकी भेड़ें
उसे जानती हैं, वैसे ही} जो मेरी हैं मैं उनको जानता हूँ, और वे
मुझे जानती हैं।

15 उसी रीति से {हम एक-दूसरे को जानते हैं} जैसे मेरा पिता
और मैं एक-दूसरे को जानते हैं। मैं उन भेड़ों के लाभ के लिए
{जो मेरी हैं} मर मिटने को भी तैयार हूँ।

16 ऐसी भेडें भी हैं जो मेरी हैं परन्तु किसी दूसरी भेड़शाला की
हैं {वे ऐसे लोग हैं जो यहूदी नहीं हैं।} मुझे उनको भी मेरे पास
लेकर आना है। जो मैं कहता हूँ वे उसका उत्तर देंगी, और जो
मेरी हैं वे सब एक झुंड के जैसे एकजुट हो जाएँगी, और मैं
उनका एक ही चरवाहा होऊँगा।

17 मेरा पिता मुझ से इसलिए प्रेम करता है क्योंकि मैं मरने के
लिए तैयार हूँ जिससे कि मैं स्वयं को फिर से जीवित कर सकूँ।

18 कोई भी मुझ पर मरने के लिए दबाव नहीं डाल रहा है।
बजाए इसके, मैंने स्वयं ही मरने का चुनाव किया है मेरे पास
स्वेच्छा से मरने का अधिकार है और मेरे पास स्वयं को फिर
से जीवित करने का अधिकार भी है। यही वह काम है जिसे
करने की आज्ञा मुझे मेरे पिता ने दी है।"

19 जो यीशु ने कहा था उसके विषय में यदूही अगुवे {विरोध
करने वाले समूहों में} फिर से विभाजित हो गए।

20 बहुत से यहूदी अगुवों ने कहा, "उसे कोई दुष्टात्मा नियंत्रित
कर रहा है, और वह पागल है! उसकी मत सुनो!"

21 कुछ अन्य लोगों ने कहा, "जो वह कह रहा है वह ऐसा कुछ
नहीं है जो कोई दुष्टात्मा से नियंत्रित मनुष्य कभी कहेगा।
निश्चय ही कोई दुष्टात्मा सम्भवतः किसी अंधे व्यक्ति को देख
पाने में सक्षम नहीं कर सकता।!"

22 फिर यरूशलेम में मंदिर की स्थापना का उत्सव मनाने के
पर्व का समय आ गया।

23 यीशु मंदिर के आँगन में उस स्थान में टहल रहा था जो
सुलैमान का ओसारा कहलाता था।

24 यहूदी अगुवे यीशु के चारों ओर जमा हो गए और कहा, "तू
हमें कब तक इस बारे में आश्चर्य में रखेगा कि तू कौन है? यदि
तू ही मसीह है, तो स्पष्ट रूप से हम से कह दे {जिससे कि हम
जान लें}।"

25 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैंने तुम को बता दिया था,
परन्तु अभी भी तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। जिन
चमत्कारी कामों को मैं मेरे पिता के अधिकार से करता हूँ वे

John 11:1

ही तुम को बता देंगे जो तुम को मेरे बारे में जानने की आवश्यकता है।

26 हालाँकि, तुम लोग अभी भी मुझ पर इसलिए विश्वास नहीं करते, क्योंकि तुम मुझ से सम्बन्धित नहीं हो। तुम ऐसी भेड़ों के समान हो जो मेरे झुंड का भाग नहीं हैं।

27 {जिस प्रकार से भेड़ें अपने चरवाहे की वाणी का पालन करती हैं,} वैसे ही जो मैं कहता हूँ मेरे लोग उसका उत्तर देते हैं। मैं उनको जानता हूँ, और वे मेरे ही चेले हैं।

28 मैं उनको सदा तक {स्वर्ग में परमेश्वर के साथ} जीने के लिए समक्ष करता हूँ। कोई भी उनको नाश नहीं कर सकता, और {कोई भी कभी भी} उनको मेरे पास से नहीं ले जा सकता।

29 मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है। वह सबसे बढ़कर है, और कोई भी उनको उसके पास से ले लेने में समक्ष नहीं है।

30 मेरा पिता और मैं एक परमेश्वर हैं।"

31 उन यहूदी अगुवों ने फिर से पत्थर उठा लिए ताकि उस पर फेंके और उसे मार डालें।

32 यीशु ने उनसे कहा, "तुम ने मुझे उन बहुत से चमत्कारी भले कामों को करते हुए देखा जिनको मेरे पिता ने मुझे करने के लिए कहा था। उनमें से किसके लिए तुम पत्थरों से मेरी हत्या करने जा रहे हो?"

33 उन यहूदी अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, "हम पत्थरों से तेरी हत्या करना इसलिए नहीं चाहते क्योंकि तूने भले कामों को किया था। बजाए इसके, {हम तेरी हत्या इसलिए करना चाहते हैं} क्योंकि तूने परमेश्वर होने का दावा करने के द्वारा परमेश्वर की निन्दा की, यद्यपि तू तो एक मनुष्य ही है।!"

34 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "पुराने नियम में एक भविष्यद्वक्ता ने लिखा कि परमेश्वर ने कहा, 'मैंने कहा था कि तुम ईश्वर हो।'

35 चूँकि परमेश्वर ने उनको बुलाया जिनको उसने 'ईश्वर' कहा और कोई भी यह साबित नहीं कर सका कि पवित्रशास्त्र झूठा है,

36 तो तुम क्यों कहते हो कि मैं परमेश्वर की निन्दा कर रहा हूँ क्योंकि मैंने कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ? वह मैं ही हूँ जिसे मेरे पिता ने विशेष रूप से {उसका होने के लिए} चुना और इस संसार में भेजा।

37 यदि मैं उन चमत्कारी कामों को नहीं कर रहा हूँ जिनको मेरा पिता चाहता है कि मैं करूँ, तो फिर तुम को मुझ पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

38 हालाँकि, क्योंकि मैं इन {चमत्कारी} कामों को कर रहा हूँ, तो भले ही तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते, तो {जो} इन कामों ने {मेरे बारे में प्रकट किया है} उस पर तुम को भरोसा करना चाहिए। {तुम को यह इसलिए करना चाहिए} ताकि सीखो और समझो कि मेरा पिता और मैं पूर्णरूप से एकजुट हैं।"

39 क्योंकि {उसने इन बातों को कहा}, इसलिए यहूदी अगुवों ने फिर से यीशु को बंदी बनाने का प्रयास किया, परन्तु वह उनके पास से निकल गया।

40 तब यीशु यरदन नदी {की पूर्वी दिशा} के पार वापस चला गया। वह उस स्थान में गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला {अपनी सेवकाई के} आरम्भ में लोगों को बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ कुछ समय के लिए रहा।

41 बहुत से लोग वहाँ यीशु के पास आए। उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने तो कभी भी कोई चमत्कारी चिन्ह प्रकट नहीं किया, परन्तु यूहन्ना ने जो कुछ भी इस मनुष्य के बारे में कहा वह सत्य है!"

42 उस स्थान में बहुत से लोगों ने उस पर भरोसा किया।

John 11:1

1 लाज़र नाम का एक मनुष्य बहुत बीमार हो गया। वह बैतनिय्याह के गाँव में रहता था जहाँ उसकी बहनें मरियम और मार्था भी रहती थीं।

2 यह वही मरियम है जो बाद में प्रभु पर इत्र उंडेलेगी और अपने बालों से उसके पाँवों से {तेल} पोंछेगी। वह उसका भाई लाज़र था जो बीमार था।

John 11:1

3 इसलिए उन दो बहनों ने किसी को यीशु के पास लाज़र के
बारे में बताने के लिए भेजा। उन्होंने कहा, "हे प्रभु, जिससे तू
प्रेम करता है वह बहुत बीमार है। {कृपया आ जा!}"

4 जब यीशु ने लाज़र की बीमारी के बारे में सुना, तो उसने कहा,
"यह बीमारी लाज़र की मृत्यु में समाप्त नहीं होगी। बजाए
इसके, इस बीमारी का उद्देश्य यह प्रकट करना है कि परमेश्वर
कितना महान है। लाज़र इसलिए बीमार हुआ ताकि यह
बीमारी प्रकट करे कि मैं, परमेश्वर का पुत्र, कितना महान हूँ।"

5 (यीशु मार्था से, उसकी बहन मरियम से, और लाज़र से प्रेम
करता था।)

6 इसलिए जब यीशु ने सुना कि लाज़र बीमार था, तो वह
जानबूझ कर दो दिन तक और वहीं रह गया जहाँ वह था।

7 फिर {उन दो दिनों के} बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा,
"आओ वापस यहूदिया प्रान्त में चलें।"

8 उसके चेलों ने कहा, "हे गुरु, इस समय पर {यहूदिया में}
यहूदी अगुवे तुझे पत्थरों से मार डालना चाहते हैं! निश्चय ही
तुझे फिर से वहाँ नहीं लौटना चाहिए!"

9 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "तुम जानते हो कि दिन के समय में
12 घंटे होते हैं। जो व्यक्ति दिन के समय में चलता है वह
इसलिए सुरक्षित चलेगा क्योंकि ज्योति उसे यह देख पाने में
योग्य बनाती है कि वह कहाँ जा रहा है।

10 हालाँकि, जब कोई व्यक्ति रात के समय में चलता है, तो वह
इसलिए ठोकर खाएगा क्योंकि वहाँ ज्योति नहीं है जो उसे यह
देख पाने में योग्य बनाए कि वह कहाँ जा रहा है।"

11 इन बातों को कहने के बाद, उसने उनसे कहा, "हमारा मित्र
लाज़र सो रहा है, परन्तु मैं वहाँ उसे जगाने के लिए जाऊँगा।"

12 इसलिए उसके चेलों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो
रहा है, तो फिर वह स्वस्थ हो जाएगा।"

13 (यीशु वास्तव में लाज़र की मृत्यु के बारे में कह रहा था,
परन्तु उसके चेलों ने सोचा कि वह वास्तविक नींद के बारे में
बात कर रहा है।)

14 इसलिए यीशु ने उनको स्पष्ट रूप से बता दिया, "लाज़र मर
गया है।

15 और मैं आनन्दित हूँ कि {जब वह मरा} मैं वहाँ पर नहीं था।
{मैंने इसे इसलिए घटित होने दिया} ताकि तुम मुझ पर भरोसा
कर सको। {यह} तुम्हारे लाभ के लिए ही है। यहाँ पर रुके
रहने के बजाए, आओ वहाँ चलें जहाँ वह है।"

16 अतः थोमा ने, जिसे वे 'जुड़वाँ' कहते थे, बाकी के चेलों से
कहा, "आओ हम भी गुरु के साथ चलें ताकि हम भी उसके
साथ मरें।"

17 अतः जब यीशु {बैतनिय्याह गाँव में} पहुँचा, तो उसे मालूम
हुआ कि लोगों ने उस समय से चार दिन पहले ही लाज़र के
मृत शरीर को एक कब्र में रख दिया था।

18 (बैतनिय्याह गाँव से यरूशलेम केवल लगभग तीन
किलोमीटर की दूरी पर था।)

19 बहुत से यहूदी लोग मार्था और मरियम के पास उनके भाई
लाज़र की मृत्यु के विषय में उन दोनों को सांत्वना देने के लिए
{बैतनिय्याह में} आए थे।

20 जब मार्था ने {किसी को कहते} सुना कि यीशु आ रहा है, तो
वह उससे मिलने के लिए बाहर निकल गई। मरियम {उसके
साथ नहीं गई} परन्तु घर में ही रह गई।

21 जब मार्था यीशु से मिली, तो उसने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि
तू यहाँ पर थोड़ा और जल्दी आ गया होता, तो मेरा भाई न
मरता!

22 हालाँकि, अभी भी {जबकि वह मर गया है} मुझे निश्चय है
कि जो कुछ भी तू उससे करने के लिए कहे परमेश्वर उसे तेरे
लिए करेगा।"

23 यीशु उससे बोला, "तेरा भाई फिर से जीवित हो जाएगा।"

24 मार्था उससे बोली, “मुझे निश्चय है कि मेरा भाई उस समय
फिर से जीवित हो जाएगा जब परमेश्वर सब मरे हुए लोगों को
अंतिम दिन में जीवित करेगा {जब वह हर एक जन का न्याय
करेगा}।”

25 यीशु उससे बोला, “मैं ही हूँ जो मरे हुए लोगों को फिर से
जीवित करता है। मैं ही हूँ जो लोगों को अनन्त जीवन देता है।
जो कोई भी मुझ पर भरोसा करता है वह सदा तक जीवित
रहेगा, यहाँ तक कि यदि उसका शरीर मर भी जाए।

26 वे सब जो अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं और मुझ पर भरोसा
करते हैं वे निश्चय ही सदा तक जीवित रहेंगे। क्या तू विश्वास
करती है कि यह बात सत्य है?”

27 मार्था उससे बोली, “हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ! मैं सच
में विश्वास करती हूँ कि तू ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह हैI {तू}
वही है जिसके इस संसार में आने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की
थी।”

28 ऐसा कहने के बाद, वह {घर} लौट गई और चुपके से अपनी
बहन मरियम को बुलाया। वह उससे बोली, “गुरु आ पहुँचा है,
और वह तुझे बुला रहा है।”

29 जब मरियम ने यह सुना जो उसकी बहन ने कहा था, तो वह
तुरन्त उठी और यीशु से मिलने के लिए बाहर चली गई।

30 (उस समय तक यीशु ने बैतनिय्याह गाँव में प्रवेश नहीं किया
था। बजाए इसके, वह उसी स्थान में था जहाँ मार्था उससे मिली
थी।)

31 उन यहूदी लोगों ने जो मरियम को उसके घर में सांत्वना दे
रहे थे उसे तुरन्त उठ कर बाहर जाते देखा, तो वे भी उसे पीछे-
पीछे गए। उन्होंने सोचा कि वह कब्र पर जा रही है {जहाँ
उन्होंने लाज़र को गाड़ा था} कि शोक मनाए।

32 जब मरियम उस स्थान में पहुँची जहाँ यीशु ने मार्था से बात
की थी और उसे देखा, तो वह उसके पाँवों के आगे भूमि पर
लेट गई। वह उससे बोली, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ पर थोड़ा और
जल्दी आ गया होता, तो मेरा भाई न मरता!”

33 जब यीशु ने उसे शोक मनाते देखा, और वे यहूदी लोग भी
शोक मना रहे थे जो उसके साथ थे, तो वह अत्यन्त उत्तेजित
हो गया।

34 उसने पूछा, “तुम ने उसके शरीर को कहाँ गाड़ा है?” वे
उससे बोले, “हे प्रभु, आकर देख ले {कि वह कहाँ है}।”

35 यीशु रोने लगा।

36 इसलिए वे यहूदी लोग {जो मरियम के साथ थे} आपस में
कहने लगे, “देखो वह लाज़र से कितना प्रेम करता था!”

37 हालाँकि, उनके बीच में से दूसरों ने कहा, “इसने अंधे मनुष्य
को देख पाने में समक्ष किया। परन्तु शायद इसके पास इस
मनुष्य को मरने से रोकने के लिए पर्याप्त शक्ति न हो!”

38 जब वह कब्र पर पहुँचा तब यीशु फिर से भावनात्मक रूप
से उत्तेजित हो गया। (यह एक गुफा थी, और एक बड़ी चट्टान
से उसका प्रवेशद्वार ढँपा हुआ था।)

39 यीशु ने कहा, “गुफा के प्रवेशद्वार से चट्टान को हटा दो।”
{हालाँकि,} लाज़र की बहन मार्था उससे बोली, “हे प्रभु, इस
समय तो उसका शरीर बुरी गंध देता होगा क्योंकि वह चार
दिन पहले मरा था।”

40 यीशु उससे बोला, “मैंने निश्चय ही तुझे बोला था कि यदि तू
मुझ पर भरोसा करे, तो तू देखने पाएगी कि परमेश्वर कितना
महान है!”

41 इसलिए कुछ लोगों ने गुफा के प्रवेशद्वार से चट्टान को हटा
दिया। यीशु ने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा और कहा, “हे पिता,
मेरी सुन लेने के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ।

42 मैं जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है। फिर भी, मैंने यहाँ
खड़े लोगों की खातिर ऐसा कहा। मैंने यह इसलिए कहा ताकि
ये आश्वस्त हो जाएँ कि तू ही ने मुझे भेजा है।”

43 उसके इस प्रार्थना को कहने के बाद, वह ऊँचे स्वर में
चिल्लाया, “हे लाज़र, कब्र से बाहर आ जा!”

John 12:1

44 वह मनुष्य जो मर गया था कब्र से बाहर आ गया! {जिन लोगों ने उसे गाड़े जाने के लिए तैयार किया था} उन्होंने उसके पाँवों और हाथों को कपड़े की पट्टियों से लपेट दिया था और उसके मुँह के चारों ओर भी एक कपड़ा लपेट दिया था। {इसलिए} यीशु वहाँ खड़े लोगों से बोला, "कपड़े की उन लीरों को हटा दो जिससे वह बंधा हुआ है, और उसे जाने दो।"

45 इसके परिणामस्वरूप, यहूदी लोगों में से उन बहुतों ने उस पर भरोसा किया जो मरियम को सांत्वना देने आए थे और जो उस बात के गवाह थे जो यीशु ने किया था।

46 फिर भी, वहाँ के कुछ लोग फरीसियों के पास चले गए और जो यीशु ने किया था उनको उसकी खबर दी।

47 इसलिए शासकीय याजकों और फरीसियों ने सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद के सदस्यों को एक साथ इकट्ठा किया। वे एक-दूसरे से कह रहे थे, "हम इस मनुष्य के बारे में क्या करने जा रहे हैं? वह बहुत से चमत्कारी चिन्हों को प्रकट कर रहा है।

48 यदि हम ने उसे इन चमत्कारी कामों को करते रहने की अनुमति दी, तो सब लोग उस पर भरोसा कर लेंगे {और उसे उनका राजा बना देंगे}। फिर रोमी सेना आएगी और हमारे मंदिर तथा हमारे लोग दोनों को नष्ट कर देगी!"

49 कैफा इस परिषद का एक सदस्य था। वह उस वर्ष का महायाजक भी था। वह उनसे बोला, "तुम लोग कुछ भी नहीं जानते!

50 तुम यह नहीं सोचते कि रोमियों के द्वारा सारे यहूदी लोगों को मार डालने की तुलना में लोगों की ओर से एक व्यक्ति का मरना तुम्हारे लिए अत्यधिक बेहतर होगा।"

51 (कैफा ने यह इसलिए नहीं कहा क्योंकि यह उसने स्वयं से सोचा था। बजाए इसके, चूँकि वह उस वर्ष का महायाजक था, इसलिए वह भविष्यद्वाणी कर रहा था कि यहूदी लोगों की ओर से यीशु मरेगा।

52 {वह यह भविष्यद्वाणी भी कर रहा था कि,} यीशु न केवल यहूदी लोगों के लिए मरेगा, परन्तु यह भी कि परमेश्वर की सारी संतानों को एक प्रजा के रूप में इकट्ठा करने के लिए, जिनको परमेश्वर ने सम्पूर्ण संसार में फैलाया हुआ है।)

53 इसलिए जब कैफा ने भविष्यद्वाणी की तो उस दिन के बाद आने वाले दिनों में, यहूदी परिषद ने यीशु की हत्या करने की योजनाएँ बनाईं।

54 इस कारण से, यीशु ने अपने यहूदी विरोधियों के बीच सार्वजनिक रूप से फिर यात्रा नहीं की। बजाए इसके, वह यरूशलेम को छोड़ कर एप्रैम नामक एक नगर में चला गया, जो निर्जन क्षेत्र के पास है। वह वहाँ अपने शिष्यों के साथ {थोड़े समय के लिए} रहा।

55 उस समय यहूदियों का फसह का पर्व आने वाला था। उस क्षेत्र से बहुत से लोग ऊपर यरूशलेम को गए। वे फसह के पर्व के आरम्भ होने से पहले {पर्व में भाग लेने के लिए यहूदी नियमों के अनुसार} स्वयं को शुद्ध करने के लिए आए थे।

56 जो लोग {फसह पर्व के लिए यरूशलेम आए थे} वे यीशु को खोज रहे थे। जब वे मंदिर {के आँगन} में खड़े थे, तो उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, "तुम क्या सोचते हो? निश्चय ही वह फसह के पर्व में नहीं आएगा!"

57 {कुछ समय पहले ही} यहूदी शासकीय याजकों और फरीसियों ने एक आदेश दिया था कि जिस किसी को भी यह पता चले कि यीशु कहाँ है, उसे उसके स्थान की खबर देनी होगी ताकि वे उसे बंदी बना सकें।

John 12:1

1 यहूदियों के फसह का पर्व आरम्भ होने से छः दिन पहले ही यीशु बैतनिय्याह गाँव में पहुँच गया। {बैतनिय्याह वही गाँव था} जहाँ पर लाज़र निवास करता था। वह वही मनुष्य था जिसे यीशु ने उसके मर जाने के बाद फिर से जीवित कर दिया था।

2 वहाँ बैतनिय्याह में, यीशु के कुछ मित्रों ने यीशु के सम्मान में रात्रिभोज दिया। मार्था ने मेहमानों को भोजन परोसा, और लाज़र उन लोगों में से एक था जो एक साथ बैठे हुए थे और यीशु के साथ खा रहे थे।

3 फिर मरियम एक शीशी लेकर आई जिसमें लगभग आधा लीटर बहुत मूल्यवान इत्र भरा था, जो जटामांसी के पौधों से निकाला हुआ शुद्ध तेल था, और उसने उसे यीशु के पाँवों पर उंडेल दिया और फिर अपने बालों से उसके पाँवों को पोंछा। उस इत्र की मनमोहक सुगंध ने सम्पूर्ण घर को भर दिया।

4 हालाँकि, यहूदा इस्करियोती {ने आपत्ति की}। (वह यीशु के चेलों में से एक था जो शीघ्र ही यीशु को बंदी बनाने में यहूदी अगुवों की सहायता करेगा।) उसने कहा,

5 "हमें इस इत्र को उतने धन में बेच देना चाहिए था जिसे कोई मनुष्य 300 दिन काम करके कमा सकता है। फिर हम उस धन को निर्धन लोगों को दे सकते थे!"

6 (यहूदा ने यह इसलिए नहीं कहा क्योंकि उसे निर्धन लोगों के बारे में चिन्ता थी। बजाए इसके, {उसने ऐसा इसलिए कहा} क्योंकि वह एक चोर था। वह उस थैली की रखवाली करता था जिसमें उनका धन होता था, परन्तु वह उस धन को चुरा लेता था जो लोगों ने उसे थैली में रखने के लिए दिया था।)

7 इसलिए यीशु ने कहा, "उसे अकेला छोड़ दो! उसने इस इत्र को इसलिए सहेज कर रखा था ताकि वह मुझे उस समय के लिए तैयार कर सके जब मैं {मरूँ और} गाड़ा जाऊँ।

8 {उसने सही काम किया है} क्योंकि निर्धन लोग तो तुम्हारे बीच में हमेशा होंगे {जिनकी तुम सहायता कर सकते हो}, परन्तु मैं तुम्हारे साथ अधिक समय तक नहीं रहूँगा।"

9 तब यहूदियों की एक बड़ी भीड़ ने सुना कि यीशु {बैतनिय्याह में} था, इसलिए वे वहाँ गए। वे न केवल इसलिए {आए} क्योंकि यीशु वहाँ था, परन्तु इसलिए भी क्योंकि वे लाज़र को देखना चाहते थे। वह वही मनुष्य था जिसे यीशु ने उसके मर जाने के बाद फिर से जीवित कर दिया था।

10 इसके विपरीत, शासकीय याजकों ने यीशु के साथ लाज़र की भी हत्या करने की योजनाएँ बनाई थीं।

11 {शासकीय याजक लाज़र की हत्या इसलिए करना चाहते थे} क्योंकि जो वे सिखा रहे थे उस पर बहुत से यहूदी विश्वास नहीं कर रहे थे और बजाए इसके वे यीशु पर भरोसा कर रहे थे, और इसका कारण वही था।

12 अगले दिन लोगों की बड़ी भीड़ को जो {यरूशलेम में} फसह का पर्व {मनाने} आई थी मालूम हुआ कि यीशु भी वहाँ आने के लिए अपने मार्ग में था।

13 इसलिए उन्होंने खजूर के पेड़ों के शाखाओं को काट लिया और {जब वह नगर में आया तो} उसका स्वागत करने के लिए सड़क पर निकल गए। वे चिल्ला रहे थे, "स्तुति हो, हमें बचाने के लिए! परमेश्वर उसे आशीष दे जो उसके अधिकार के साथ आता है। वही इस्राएल का राजा है!"

14 जब यीशु यरूशलेम के निकट आया, तो उसे एक जवान गदहा मिला और वह {सवार होकर नगर में जाने के लिए} उस पर बैठ गया। {ऐसा करने के द्वारा,} उसने वह बात पूरी की जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्रशास्त्र में लिखी थी:

15 "तुम जो यरूशलेम में रहे हो, मत डरो। देखो! तुम्हारा राजा आ रहा है। वह एक गदहे के बच्चे पर सवार है।!"

16 जब यह बातें घटित हुईं, तो उसके चेले नहीं समझे कि ये उन बातों का पूरा होना था जो उन भविष्यद्वक्ताओं ने लिखी थीं। हालाँकि, जब परमेश्वर ने यीशु की महिमा{उसे जीवन में वापस लेकर आने के द्वारा}, बाद में उनको वे बातें स्मरण आईं जो भविष्यद्वक्ताओं ने उसके बारे में लिखी थीं और यह कि लोगों ने उसके साथ इन बातों को किया था।

17 लोगों की भीड़ जो यीशु के पीछे चल रही थी वह दूसरों से कहती रही कि उन्होंने यीशु को लाज़र को कब्र से बाहर आने के लिए बुलाते हुए देखा था और उसके मरने के बाद यीशु को उसे फिर से जीवित करते देखा था।

18 लोगों की कोई दूसरी भीड़ यीशु से मिलने के लिए नगर के द्वार के बाहर गई। {उन्होंने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि उन्होंने सुना था कि उसने {लाज़र को फिर से जीवित करके} चमत्कारी चिन्ह को प्रकट किया था।

19 अतः फरीसियों ने एक-दूसरे से कहा, "ध्यान दो! हम उसे रोक पाने में असफल हो रहे हैं। देखो! हर एक जन उसका चेला बन रहा है!"

20 कुछ लोग जो यहूदी नहीं थे उन लोगों के बीच में थे जो {यरूशलेम को} गए थे ताकि फसह के पर्व में परमेश्वर की आराधना करें।

21 वे फिलिप्पुस के पास आए, जो उस बैतसैदा नगर का रहने वाला था, जो गलील प्रान्त में है। उन्होंने उससे पूछा, "हे महोदय, क्या तू हमें यीशु से मिला देगा?"

John 12:1

22 तब फिलिप्पुस ने यह अन्द्रियास को बताया, और वे दोनों
गये और {उन यूनानियों के बारे में} यीशु को बताया।

23 यीशु ने फिलिप्पुस और अन्द्रियास को उत्तर दिया, "अब
यह समय आ गया है कि परमेश्वर सब पर प्रकट करे कि मैं,
मनुष्य का पुत्र, कितना महान हूँ।

24 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: {मेरा जीवन एक बीज के समान
है।} जब तक गेहूँ का बीज भूमि में बोया नहीं जाता और मर
नहीं जाता, वह केवल एक बीज ही रहेगा। परन्तु यदि वह भूमि
में मर जाता है, तब वह उन्नति करेगा और बहुत सारे गेहूँ
उत्पन्न करेगा।

25 जो कोई भी {मेरा चेला होने से} बढ़कर जीवित रहना
चाहता है वह मरेगा, परन्तु जो कोई भी इस पापी संसार में
जीवित रहने से बढ़कर {मेरा चेला होना} चाहता है वह अपने
जीवन की सदा के लिए रक्षा करेगा।

26 जो कोई भी मेरी सेवा करना चाहता है उसे मेरा चेला बनना
अवश्य है। मेरा सेवक मेरे साथ {स्वर्ग में} रहेगा। जो कोई मेरी
सेवा करता है मेरा पिता उसका सम्मान करेगा।

27 इस क्षण मैं अत्यन्त व्यथित महसूस कर रहा हूँ। मुझे निश्चच
ही यह नहीं कहना चाहिए, 'हे पिता, इस समय को अनुभव
करने से मुझे बचा ले {जब मैं पीड़ित होऊँगा और मर
जाऊँगा!}' नहीं, {मैं ऐसा इसलिए नहीं करूँगा,} क्योंकि यही
तो वह कारण है जिससे मैं इस समय तक जीवित रहा {जब मैं
पीड़ित होऊँगा और मर जाऊँगा}।

28 हे पिता, प्रकट कर कि तू कितना महान है!" तब परमेश्वर
स्वर्ग से बोला, "मैंने पहले ही प्रकट कर दिया है कि मैं कितना
महान हूँ; मैं यह फिर से करूँगा!"

29 लोगों की भीड़ ने भी जो वहाँ खड़ी थी परमेश्वर की वाणी को
सुना। उनमें से कुछ ने कहा कि यह तो सिर्फ बादल गरजने
की आवाज है। कुछ अन्य लोगों ने कहा कि एक स्वर्गदूत ने
यीशु से बात की है।

30 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "जो वाणी तुम ने सुनी वह
परमेश्वर की वाणी थी। वह मेरे लाभ के लिए नहीं, परन्तु तुम्हारे
लाभ के लिए {बोला}!

31 अब इस संसार में रहने वाले लोगों का न्याय करने का
परमेश्वर का समय आ गया है। अब वह समय आ गया है जब
वह {शैतान को, जो} इस संसार पर राज्य करता है, बाहर
निकाल देगा।

32 जहाँ तक मेरी बात है, जब लोग मुझे {क्रूस पर} ऊँचे पर
चढ़ाएँगे, तो मैं सब लोगों को मेरे पास आने के लिए प्रेरित
करूँगा।"

33 (उसने यह इसलिए कहा ताकि लोग उस तरीके को जान
लें जिससे वह शीघ्र ही मरेगा।)

34 तब लोगों की भीड़ ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हम ने
पवित्रशास्त्र से मालूम किया है कि मसीह सदा तक जीवित
रहेगा। तो तू क्यों कहता है कि मनुष्य का पुत्र {क्रूस पर मरने
के लिए} ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा? यह 'मनुष्य का पुत्र' कौन है
जिसके बारे में तू बोल रहा है?"

35 यीशु उनसे बोला, "मैं वह ज्योति हूँ {जो परमेश्वर की सच्चाई
और अच्छाई को प्रकट करती है}। मैं केवल थोड़े और समय
तक तुम्हारे साथ रहूँगा। मेरे उदाहरण के अनुसार जीवन
व्यतीत करो जबकि मैं अभी यहाँ पर हूँ ताकि अंधकार
{अर्थात पाप और बुराई} को तुम पर नियंत्रण करने से रोकूँ।
जो पापी जीवन व्यतीत करते हैं वे उन लोगों के समान हैं जो
अंधकार में यहाँ-वहाँ भटकते रहते हैं, और जानते नहीं कि वे
कहाँ जा रहे हैं!

36 जबकि मैं अभी भी तुम्हारे साथ हूँ, तो मुझ पर, अर्थात ज्योति
पर भरोसा करो {जो परमेश्वर की सच्चाई और अच्छाई को
प्रकट करती है}। परमेश्वर के लोग बनने के लिए {ऐसा करो},
{अर्थात वे लोग जो उसकी सच्चाई और अच्छाई को जानते
हैं}।" इन बातों को कहने के बाद, यीशु उनको छोड़ कर चला
गया और स्वयं को लोगों से छिपा लिया।

37 भले ही यीशु ने लोगों के सामने बहुत से चमत्कारी चिन्हों
को प्रकट किया था, उनमें से बहुतों ने उस पर भरोसा नहीं
किया।

38 यशायाह भविष्यवक्ता ने जो {बहुत पहले} लिखा था उसे
सच करने के लिए उनका अविश्वास घटित हुआ: "हे प्रभु, जो
हम ने कहा उस पर किसी ने भी विश्वास नहीं किया! {ऐसा

John 13:1

लगता है कि जैसे} किसी ने भी उस शक्ति को नहीं देखा जिसे परमेश्वर ने प्रकट किया था!"

39 इस कारण से वे यीशु पर भरोसा नहीं कर पाए: यशायाह ने यह भी लिखा था,

40 "जो वे देखते हैं प्रभु ने उनको उसे समझने में अयोग्य कर दिया, और उसने उनको हठीला बना दिया है। {उसने ऐसा इसलिए किया है} ताकि जो वे देखते हैं वे उसे न समझें, और वास्तव में बूझ न सकें, और पाप से परमेश्वर की ओर न मुड़ जाएँ, और मैं उनको क्षमा न कर दूँ।"

41 यशायाह ने {बहुत पहले} यह इसलिए लिखा, क्योंकि उसने देखा था कि यीशु कितना महान है और उसके विषय में बोला।

42 यद्यपि यह सच था, इसलिए सर्वोच्च यहूदी शासकीय परिषद के कई सदस्यों ने यीशु पर भरोसा किया। फिर भी, उन्होंने दूसरों को यह नहीं बताया {कि उन्होंने यीशु पर भरोसा किया}, क्योंकि उनको डर था कि फरीसी उनको यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर देंगे।

43 {वे इससे इसलिए डरते थे} क्योंकि वे चाहते थे कि दूसरे लोग उनका सम्मान करें, बजाए इसके कि परमेश्वर उनका सम्मान करे।

44 यीशु {लोगों की भीड़ से} ऊँचे स्वर में बोला, "जो मुझ पर भरोसा करते हैं वे न केवल मुझ पर भरोसा कर रहे हैं परन्तु {मेरे पिता पर भी भरोसा कर रहे हैं}, जिसने मुझे भेजा है।

45 जो मुझे देखते हैं वे मेरे पिता को भी, जिसने मुझे भेजा, देख रहे हैं।

46 मैं इस संसार में ज्योति के रूप में आया था जो संसार में रहने वाले सभी लोगों पर {परमेश्वर की सच्चाई और अच्छाई को प्रकट करती है} ताकि जो कोई मुझ पर भरोसा करता है वह उस अंधकार में नहीं रहेगा {जो कि पाप और बुराई है}।

47 मैं किसी ऐसे व्यक्ति को दोषी नहीं ठहराता जो मेरी शिक्षाओं को सुनता है, परन्तु उनका पालन करने से इन्कार करता है, क्योंकि मैं इस संसार में इसलिए नहीं आया कि इस संसार में रहने वाले लोगों को दोषी ठहराऊँ। बजाए इसके, मैं इस संसार में इसलिए आया हूँ ताकि उनको {उनके पापों का दंड मिलने से} बचा सकूँ।

48 जो कोई मुझे अस्वीकार करता और मेरी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं करता (और उनका पालन नहीं करता) उसे उन्हीं शिक्षाओं के अनुसार दोषी ठहराया जाएगा जो मैंने बताई हैं। अंतिम दिन में {जब परमेश्वर सभी का न्याय करेगा,} तो परमेश्वर मेरी शिक्षाओं के आधार पर उस व्यक्ति का न्याय करेगा।

49 {ऐसा इसलिए घटित होगा} क्योंकि मैं अपने अधिकार से नहीं बोलता हूँ। बजाए इसके, मुझे क्या कहना चाहिए और मुझे उसे कैसे कहना है, स्वयं मेरे पिता ने, जिसने मुझे भेजा, मुझे इसके विषय में आज्ञा दी है।

50 मुझे निश्चय है कि जो मेरे पिता ने मुझे कहने की आज्ञा दी है वही है जिस पर लोगों को {स्वर्ग में} सदा तक जीवित रहने के लिए विश्वास करना है। इसलिए मैं बिलकुल वही कहता हूँ जो मेरे पिता ने मुझ से कहने के लिए बोला है।"

John 13:1

1 फसह का पर्व आरम्भ होने से एक दिन पहले, यीशु जानता था कि यह उसके लिए इस संसार को छोड़ने और अपने पिता के पास लौट जाने का समय है। उसने हमेशा अपने चेलों से प्रेम किया जो इस संसार में उसके साथ थे, और उसने उनसे सम्पूर्ण प्रेम किया था।

2 जिस समय यीशु और उसके चेले अपना शाम का भोजन खा रहे थे, तो शमौन इस्करियोती के पुत्र, यहूदा को शैतान पहले ही यह सोचने के लिए प्रेरित कर चुका था कि उसे यीशु को बंदी बनाने में यहूदी अगुवों की सहायता करनी चाहिए।

3 यीशु जानता था कि उसके पिता ने उसे हर चीज पर सम्पूर्ण शक्ति और अधिकार प्रदान कर दिया है, और वह यह भी जानता था कि वह परमेश्वर के पास से आया था और शीघ्र ही परमेश्वर के पास लौट जाएगा।

4 {क्योंकि वह उन बातों को जानता था इसलिए,} यीशु उस मेज से उठा जहाँ शाम को वे भोजन खा रहे थे, उसने अपने बाहरी कपड़ों को उतार दिया, और अपनी कमर के चारों ओर एक अंगोछा लपेट लिया।

John 13:1

5 उसने एक बड़े कटोरे में थोड़ा पानी भरा और अपने चेलों के
पाँवों को धोना आरम्भ कर दिया और उनको उस अंगोछे से
पोंछ कर सुखाने लगा जिसे उसने अपनी कमर के चारों ओर
लपेटा हुआ था।

6 जब वह शमौन पतरस के पास {उसके पाँवों को धोने के
लिए} आया, तो पतरस उससे बोला "हे प्रभु, तुझे मेरे पाँव नहीं
धोने चाहिए!"

7 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "इस समय तो तू नहीं समझता
कि मैं क्या कर रहा हूँ, परन्तु बाद में तू समझेगा।"

8 पतरस ने कहा, "तू वास्तव में मेरे पाँवों को कभी नहीं धोने
पाएगा!" यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो
तू मेरे साथ परमेश्वर की आशीषों का वारिस नहीं होगा।"

9 शमौन पतरस उससे बोला, "हे प्रभु, केवल मेरे पाँवों को ही
मत धो! मेरे हाथों को और मेरे सिर को भी धो दे!"

10 यीशु उससे बोला, "जिसे किसी ने धो दिया है उसे केवल
उसके पाँवों को ही धोने की आवश्यकता है। उसका बाकी
शरीर शुद्ध है। तुम चेले शुद्ध हो, परन्तु {तुम सब शुद्ध} नहीं
हो।"

11 ({यीशु ने यह बात आत्मिक रूप से शुद्ध होने के बारे में
कही,} क्योंकि वह जानता था कि कौन उसे बंदी बनाने के लिए
यहूदी अगुवों की सहायता करने जा रहा था। इसी कारण से
उसने कहा, "तुम में से सब शुद्ध नहीं।")

12 जब वह उनके पाँवों को धोना समाप्त कर चुका, तो उसने
अपने बाहरी कपड़ों को पहन लिया। तब वह फिर से मेज पर
बैठ गया और उनसे बोला, "तुम को अवश्य ही समझना
चाहिए कि मैंने अभी तुम्हारे लिए क्या किया है!

13 तुम मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' बिलकुल ठीक ही कहते हो,
क्योंकि मैं वही हूँ।

14 चूँकि मैं, तुम्हारे गुरु और प्रभु, ने तुम्हारे पाँवों को धोने {के
द्वारा विनम्रतापूर्वक तुम्हारी सेवा की}, इसलिए तुम को भी
एक-दूसरे के पाँवों को धोने {के द्वारा विनम्रतापूर्वक एक-
दूसरे की सेवा} करनी चाहिए।

15 {तुम्हारे पाँवों को धोने के द्वारा} मैंने तुम को अनुसरण करने
के लिए एक उदाहरण प्रदान किया है जिससे कि तुम को
{विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा} करनी चाहिए जिस
प्रकार से मैंने {विनम्रतापूर्वक} तुम्हारी सेवा की।

16 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जिस प्रकार से एक सेवक अपने
स्वामी की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, और न
संदेशवाहक उस व्यक्ति की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है
जिसने उसे भेजा है, {वैसे ही तुम मेरी तुलना में अधिक
महत्वपूर्ण नहीं हो}।

17 चूँकि अब तुम जानते हो {कि तुम को विनम्रतापूर्वक एक-
दूसरे की सेवा करनी चाहिए}, इसलिए यदि तुम ऐसा करते हो
तो परमेश्वर तुम को आशीष देगा।

18 मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम में से सब के सब आशीषित
होंगे। मैं उन लोगों को अच्छी तरह से जानता हूँ जिनको मैंने
{मेरे चेले होने के लिए} चुना है। हालाँकि, जो घटित होने वाला
है उसे घटित होना चाहिए ताकि भविष्यद्वक्ता ने पवित्रशास्त्र
में जो बात लिखी वह सच हो सके: 'जिसने मेरे साथ एक मित्र
के समान भोजन किया उसी ने मेरा विरोध किया।'

19 अब से मैं तुम को उसके घटित होने से पहले ही बता रहा हूँ
कि क्या घटित होगा जिससे कि, जब वह घटित हो, तो तुम
भरोसा करो कि मैं ही {परमेश्वर} हूँ।

20 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई भी उसे स्वीकार करता
है जिसे मैं बाहर भेजता हूँ वह मुझे भी स्वीकार करता है; और
जो कोई भी मुझे स्वीकार करता है वह मेरे पिता को भी
स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है।"

21 जब यीशु ने ऐसा कहा, तो उसने व्याकुल महसूस किया।
उसने गम्भीरतापूर्वक घोषणा की, "मैं तुम से सच कह रहा हूँ:
तुम में से एक मुझे {मेरे विरोधियों को} सौंपने जा रहा है।"

22 उसके चेले एक-दूसरे को देखने लगे और आश्चर्य करने लगे
कि उनके बीच में कौन है जिसके बारे में वह बोल रहा था।

John 14:1

23 उसके चेलों में से एक, {यूहन्ना} जिससे यीशु प्रेम करता था,
मेज पर यीशु के बगल में बैठा हुआ था।

24 शमौन पतरस ने उसको यह संकेत करने के लिए एक
इशारा किया कि वह यीशु से पूछे कि वह किस चेले के बारे में
बोल रहा था।

25 अतः यूहन्ना यीशु की तरफ पलट कर झुका और {झट से}
उससे पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है जो तुझे धोखा देगा?"

26 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "यह वही मनुष्य है जिसे मैं यह रोटी
का टुकड़ा कटोरे में डुबोने के बाद दूँगा।" फिर उसने रोटी
को कटोरे में डुबोया और उसे शमौन इस्करियोती के पुत्र,
यहूदा को दे दिया।

27 जैसे ही यहूदा ने यीशु से उस रोटी के टुकड़े को लिया, वैसे
ही शैतान ने उस पर नियंत्रण कर लिया। तब यीशु उससे
बोला, "जो करने की योजना तूने बनाई है उसे तुरन्त कर।"

28 (मेज पर बैठे हुओं में से अन्य कोई भी नहीं जानता था कि
यीशु ने यहूदा से ऐसा क्यों कहा था।

29 उनमें से कुछ ने सोचा कि यीशु उससे जाकर कुछ सामान
खरीदने के लिए जिनकी उनको फसह का पर्व मनाने के लिए
आवश्यकता थी या निर्धनों को कुछ धन देने के लिए कह रहा
था। {उन्होंने ऐसा इसलिए सोचा} क्योंकि यहूदा के पास वह
थैली रहती थी जिसमें उनका धन रखा होता था।)

30 अतः यीशु से यहूदा के रोटी ले लेने के बाद, वह तुरन्त बाहर
चला गया। (यह रात का समय था।)

31 अतः यहूदा के चले जाने के बाद, यीशु ने कहा, "अब
परमेश्वर ने लोगों पर प्रकट किया है कि मैं, मनुष्य का पुत्र,
कितना महान हूँ। मैंने भी लोगों पर प्रकट किया है कि परमेश्वर
कितना महान है।

32 परमेश्वर स्वयं {लोगों पर} प्रकट करेगा कि मैं, मनुष्य का
पुत्र, कितना महान हूँ, और वह इसे अभी करेगा।

33 {तुम जिनको मैंने ऐसे प्रेम किया जैसे कि तुम मेरी ही}
संतान हो, मैं केवल थोड़े और समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा।
फिर तुम मुझे खोजोगे, परन्तु यह बिलकुल वैसे ही होगा जैसे
मैंने यहूदी अगुवों से बोला था और अब मैं तुम से बोल रहा हूँ:
जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम उस स्थान में आने में सक्षम नहीं हो
पाओगे।

34 अब मैं तुम को यह नई आज्ञा देता हूँ कि तुम एक-दूसरे से
प्रेम करो: तुम को एक-दूसरे से उस रीति से प्रेम करना चाहिए
जैसे मैंने तुम से प्रेम किया था।

35 यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो, तो हर एक जन {जो
उस प्रेम को देखे} वह जान जाएगा कि तुम मेरे ही चेले हो।"

36 शमौन पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?"
यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ तू मेरे साथ उस
स्थान में अभी तो नहीं जा सकता, परन्तु बाद में तू वहाँ
जाएगा।"

37 पतरस उससे बोला, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ अभी क्यों नहीं जा
सकता? मैं तो तेरे लिए मरने को भी तैयार हूँ!"

38 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "तू वास्तव में मेरे लिए मरने को
तैयार नहीं है! मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: तू वास्तव में तीन बार
कहेगा कि तू मुझे नहीं जानता इससे पहले कि {सुबह होने
पर} मुर्गा बाँग दे!"

John 14:1

1 "व्यथित न हो। परमेश्वर पर भरोसा रखो। मुझ पर भी भरोसा
रखो।

2 जहाँ मेरा पिता निवास करता है वहाँ लोगों के निवास करने
के लिए बहुत से स्थान हैं। यदि यह सत्य नहीं होता, तो मैंने तुम
को बता दिया होता, क्योंकि मैं वहाँ तुम्हारे निवास करने के
लिए स्थान तैयार करने के लिए जाऊँगा।

3 और जब मैं वहाँ तुम्हारे निवास करने के लिए स्थान तैयार
करने के लिए जाता हूँ, तो मैं वापस आकर मेरे साथ रहने के
लिए तुम को भी ले जाऊँगा, ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी मेरे
साथ रहो।

4 जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम जानते हो कि उस स्थान में कैसे जाना
है।"

5 थोमा ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें नहीं पता कि तू कहाँ जा
रहा है! हम सम्भवतः नहीं जान सकते कि वहाँ कैसे जाना है!"

6 यीशु उससे बोला, "मैं ही हूँ जिससे लोग वहाँ जा सकते हैं।
वह मैं ही हूँ जो प्रकट करता है कि परमेश्वर के बारे में सत्य
क्या है, और वह जो लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करता है।
मुझ पर भरोसा करना ही एकमात्र मार्ग है जिसके द्वारा लोग
मेरे पिता के पास आ सकते हैं।

7 चूँकि तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ, इसलिए तुम मेरे पिता को
भी जानते हो। इस समय के बाद से, तुम उसे जानते हो, और
ऐसा लगता है कि तुम ने उसे देख भी लिया है।"

8 फिलिप्पुस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमें पिता को दिखा दे
और उससे हमें संतुष्टि मिलेगी!"

9 यीशु ने उससे कहा, "मैं इतने लम्बे समय से तुम सब के साथ
हूँ। तो हे फिलिप्पुस, निश्चय ही तू मुझे जानता है! जिन्होंने मुझे
देखा है वे उन लोगों के समान हैं जिन्होंने मेरे पिता को देखा
है। इसलिए तुम्हारे पास यह कहने का कोई कारण नहीं है कि
'हमें पिता को दिखा दे'!

10 तुम को निश्चय ही यह विश्वास करना चाहिए कि मैं और मेरा
पिता पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं! जो कुछ मैंने तुम से बोला वह सब
मैंने अपनी ओर से नहीं बोला। बजाए इसके, मेरा पिता जो मेरे
साथ जुड़ा हुआ है वह अपने चमत्कारी कामों को मेरे माध्यम
से कर रहा है।

11 जब मैं कहता हूँ कि मैं और मेरा पिता पूर्णरूप से जुड़े हुए
हैं तो मुझ पर भरोसा करो! अन्यथा, जो मैं कहता हूँ यदि तुम
उस पर भरोसा नहीं करने जा रहे हो, तो कम से कम उन सारे
चमत्कारी कामों के विषय में ही मुझ पर भरोसा करो {जिनको
तुम ने मुझे करते हुए देखा था}।

12 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: जो कोई मुझ पर भरोसा करता
है वह भी उन चमत्कारी कामों को करेगा जिनको मैं करता
हूँ। यहाँ तक कि वह उनसे भी बढ़कर चमत्कारी कामों को
करेगा जिनको मैं करता हूँ, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा
रहा हूँ।

13 मेरे प्रतिनिधि के रूप में तुम जो कुछ भी निवेदन करोगे मैं
उसे करूँगा। मैं उसे इसलिए करूँगा ताकि मैं, उसका पुत्र,
यह प्रकट करे कि मेरा पिता कितना महान है।

14 मेरे प्रतिनिधि के रूप में मुझ से तुम जो कुछ भी निवेदन
करोगे मैं उसे करूँगा।

15 यदि तुम मुझ से वास्तव में प्रेम करते हो, तो तुम उन सब
बातों का पालन करोगे जिनकी मैंने तुम को आज्ञा दी है।

16 तब मैं अपने पिता से निवेदन करूँगा, और वह मुझे उत्तर
देगा कि तुम्हारी सहायता करने के लिए तुम्हें एक और
सहायक दे ताकि वह तुम्हारे साथ सदा तक रहे।

17 {वह} पवित्र आत्मा है जो उन बातों की घोषणा करता है जो
परमेश्वर के विषय में सत्य हैं। संसार में रहने वाले अविश्वासी
लोग उसे ग्रहण नहीं कर सकते, क्योंकि उन्होंने न ही उसे
देखा है और न ही उसे जानते हैं। तुम जो चेले हो उस आत्मा
को इसलिए जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ वास करता है,
और बाद में वह तुम्हारे भीतर वास करेगा।

18 मैं तुम्हारी देखभाल करने के लिए किसी के बिना तुम्हें नहीं
छोड़ूँगा। मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास लौट आऊँगा।

19 थोड़ी देर में संसार के अविश्वासी लोग फिर मुझे नहीं देखेंगे,
परन्तु तुम स्वयं ही मुझे फिर से देखोगे। क्योंकि मैं शीघ्र ही
फिर से जीवित हो जाऊँगा, और तुम भी फिर से जीवित हो
जाओगे।

20 जब तुम फिर से मुझे देखोगे, तो तुम जान जाओगे कि मैं
अपने पिता के साथ जुड़ा हुआ हूँ और यह कि तुम और मैं भी
पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं।

21 जो आज्ञा मैं देता हूँ जो कोई भी उसे जानता और उसका
पालन करता है वह मुझ से वास्तव में प्रेम करता है। और जो
कोई मुझ से प्रेम करता है मेरा पिता उससे प्रेम करता है। और
मैं भी उस व्यक्ति से प्रेम करूँगा, और मैं स्वयं को उस व्यक्ति
पर प्रकट करूँगा।"

22 यहूदा ने (जो इस्करियोती नहीं था, {परन्तु उसी नाम का
दूसरा चेला था}) यीशु से बोला। {उसने कहा,} "हे प्रभु, ऐसा
क्या बदल गया है जिसके कारण तू स्वयं को केवल हम पर
प्रकट करता है और संसार में रहने वाले सब लोगों पर नहीं?"

23 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "जो कोई भी मुझ से प्रेम करता
है वह मेरी शिक्षा का पालन करेगा। मेरा पिता भी उस व्यक्ति
से प्रेम करेगा। वह और मैं उस व्यक्ति के पास आएँगे और
उस व्यक्ति के भीतर वास करेंगे।

24 जो कोई मुझ से प्रेम नहीं करता वह मेरी शिक्षाओं का पालन
भी नहीं करता। जो तुम ने मुझे अभी कहते हुए सुना वह मैं
अपनी ओर से नहीं कहता। बजाए इसके, {जो मैंने कहा वह}
मेरे पिता की ओर से आया है, जिसने मुझे भेजा है।

25 मैंने यह बातें तुम से तब कहीं जबकि मैं अभी तुम्हारे साथ
ही हूँ।

26 परन्तु मेरा पिता मेरे स्थान में पवित्र आत्मा को भेजेगा। वही
है जो तुम्हारी सहायता करेगा। वह तुम को {परमेश्वर के सारे
सत्य जिनको तुम को जानने की आवश्यकता है} सिखाएगा।
वह तुम को उन सारी बातों को स्मरण करने के लिए प्रेरित
करेगा जो मैंने तुम से बोली थीं।

27 जब मैं तुम को छोड़कर जा रहा हूँ तो मैं तुम को शान्तिपूर्ण
अनुभूति प्रदान करता हूँ। यह मेरी शान्तिपूर्ण अनुभूति है जो
मैं तुम को प्रदान कर रहा हूँ। संसार के लोगों से अलग तरीके
से मैं तुम को {एक शान्तिपूर्ण अनुभूति} प्रदान करता हूँ।
व्यथित न हो या डरो मत।

28 तुम ने मुझे तुम से कहते सुना कि मैं जा रहा हूँ और बाद में
तुम्हारे पास वापस आऊँगा। यदि तुम मुझ से वास्तव में प्रेम
करते हो, तो तुम आनन्दित होओगे कि मैं {स्वर्ग में
विराजमान} मेरे पिता के पास लौट रहा हूँ, क्योंकि वह मुझ से
श्रेष्ठ है।

29 इन बातों के घटित होने से पहले ही मैं ने ये बातें तुम को बता
दी हैं जिससे कि जब वे घटित होंगी तब तुम मुझ पर भरोसा
करते रहोगे।

30 मैं तुम से अधिक देर तक बात करने में सक्षम नहीं होऊँगा,
क्योंकि {शैतान,} जो इस संसार पर राज्य करता है, वह आ
रहा है। परन्तु उसका मुझ पर कोई नियंत्रण नहीं है।

31 परन्तु यह इसलिए होगा कि संसार के लोग जान लें कि मैं
अपने पिता से प्रेम रखता हूँ, और ठीक वैसा ही करूँगा जैसा
मेरे पिता ने मुझे करने की आज्ञा दी है। उठो, आओ हम इस
स्थान को छोड़ दें।"

John 15:1

1 "मैं एक सच्ची दाखलता के समान हूँ {जिसमें फल लगते हैं}।
मेरा पिता एक माली के समान है {जो उसकी देखभाल करता
है}।

2 मेरा पिता हर उस शाखा को काट डालता है और हटा देता
है जो मेरे भाग के जैसे दिखती तो हैं परन्तु फल उत्पन्न नहीं
करतीं। जहाँ तक हर उस शाखा की बात है जो फल उत्पन्न
करती हैं, तो वह उसकी छँटाई करने के द्वारा साफ करता है
ताकि वह और भी अधिक फल उत्पन्न करे।

3 तुम उन शाखाओं के समान हो जिनको उस शिक्षा के कारण
जो मैंने तुम को पहले बताई थी छँटाई किए जाने के द्वारा पहले
से ही साफ कर दिया गया है।

4 मुझ से जुड़े रहो, और मैं तुम से जुड़ा रहूँगा। जिस प्रकार से
शाखायें तब तक कोई फल उत्पन्न नहीं कर सकतीं जब तक
वे दाखलता से जुड़ी न रहें, वैसे ही तुम भी तब तक आत्मिक
फल उत्पन्न नहीं कर सकते जब तक कि तुम मुझ से जुड़े न
रहो।

5 मैं दाखलता के समान हूँ; तुम शाखाओं के समान हो। यदि
तुम मुझ से जुड़े रहते हो और मैं तुम से जुड़ा रहता हूँ, तो तुम
बहुत सारा फल उत्पन्न करोगे। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि
तुम बिना मेरी सहायता के कुछ नहीं कर सकते।

6 जहाँ तक उसकी बात है जो मुझ से जुड़ा नहीं रहता, वह
व्यक्ति एक ऐसी शाखा के समान है जिसे माली काटकर फेंक
देता है। जब ऐसी शाखाएँ सूख जाती हैं, तो माली के कर्मचारी
उनको उठाकर आग में झोंक देते हैं और उनको जला देते हैं।

John 15:1

7 यदि तुम मुझ से जुड़े रहो और जो मैंने तुम को सिखाया
उसका पालन करो, तो तुम परमेश्वर से कुछ भी निवेदन कर
सकते हो जो तुम चाहते हो, और वह तुम्हारे निवेदन को मंजूर
करेगा।

8 तुम बहुत से फल उत्पन्न करने और मेरे चेले होने के द्वारा
लोगों पर यह प्रकट करते हो कि मेरा पिता कितना महान है।

9 जैसे मेरे पिता ने मुझ से प्रेम किया उसी रीति से मैंने तुम से
प्रेम किया। अब उस रीति से जीवन व्यतीत करते रहो जो
उनके लिए उपयुक्त है जिनसे मैं प्रेम करता हूँ।

10 जो आज्ञा मैंने तुम को दी है यदि तुम उसका पालन करो, तो
तुम उस रीति से कार्य कर रहे होगे जो उनके लिए उपयुक्त है
जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, जैसे कि मैंने उसका पालन किया जो
आज्ञा मेरे पिता ने मुझे दी थी, और मैं उस रीति से कार्य करता
हूँ जो उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है जिससे वह प्रेम करता
है।

11 मैंने यह बातें तुम से इसलिए कहीं ताकि तुम भी उतने ही
आनन्दित हो जाओ जितना मैं हूँ और {जिससे कि} तुम
अधिकतम स्तर तक आनन्दित रहो।

12 जो काम करने की आज्ञा मैं तुम को दे रहा हूँ वह यह है:
जैसा मैंने तुम से प्रेम किया उसी रीति से एक-दूसरे से प्रेम
करो।

13 उस व्यक्ति से बढ़कर प्रेम किसी का नहीं जो अपने मित्रों
के लिए मरने को भी तैयार है।

14 जिन बातों की मैंने तुम को आज्ञा दी है यदि तुम उनको
करते रहो तो तुम वास्तव में मेरे मित्र हो।

15 मैं अब से तुम को अपना सेवक नहीं कहूँगा, क्योंकि सेवक
नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है। अब से मैं तुम
को मित्र कहूँगा, क्योंकि मैंने तुम को वह सब समझा दिया है
जो मेरे पिता ने मुझ से कहा था।

16 तुम ने {मेरे चेले बनने का} चुनाव नहीं किया। बजाए इसके,
मैंने {मेरे चेले बनने के लिए} तुम्हारा चुनाव किया और तुम को
{इस भूमिका के लिए} नियुक्त किया ताकि तुम बाहर जाओ
और आत्मिक फल उत्पन्न करो और {ताकि) जो फल तुम
उत्पन्न करो वह सदा तक बना रहे। {मैंने तुम को इसलिए भी
चुना है} ताकि मेरा पिता तुम को वह सब कुछ दे जिसका तुम
उस से मेरे प्रतिनिधियों के रूप में निवेदन करते हो।

17 मैं तुम को इन बातों को करने की आज्ञा इसलिए देता हूँ
ताकि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो।

18 चूँकि वे लोग जो संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं वे
तुम से भी बैर करते हैं, तुम को यह मालूम होना चाहिए कि
उन्होंने पहले मुझ से बैर किया था।

19 यदि तुम उन लोगों की ओर होते जो संसार में परमेश्वर का
विरोध करते हैं, तो वे अविश्वासी तुम से वैसा ही प्रेम करते जैसा
वे स्वयं से प्रेम करते हैं। हालाँकि, मैंने उनके बीच में से निकल
आने के लिए तुम्हारा चुनाव किया। वे लोग जो संसार में
परमेश्वर का विरोध करते हैं वे तुम से इसलिए बैर करते हैं
क्योंकि तुम उनका भाग नहीं हो।

20 स्मरण करो कि मैंने तुम से बोला था कि अपने स्वामी की
तुलना में सेवक अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता है। चूँकि उन्होंने
मुझे पीड़ित किया, तो निश्चय ही वे तुम को भी पीड़ित करेंगे।
यदि उनमें से किसी ने भी मेरी शिक्षा का पालन किया, तो वे
उसका भी पालन करेंगे जो तुम सिखाओगे।

21 तौभी इस संसार में रहने वाले अविश्वासी तुम्हारे साथ इन
सब द्वेषपूर्ण बातों को इसलिए करेंगे क्योंकि तुम मेरा
अनुशरण करते हो {और इसलिए} क्योंकि वे मेरे पिता को
नहीं जानते जिसने मुझे यहाँ भेजा है।

22 यदि मैं आया नहीं होता और उनको {परमेश्वर का सत्य}
सिखाया नहीं होता, तो वे {मुझे और मेरे संदेश को अस्वीकार
करने के} दोषी नहीं ठहरते। हालाँकि, {चूँकि मैं आया और
उनको सिखाया इसलिए}, अब उनके पास उनके पाप के लिए
कोई बहाना नहीं है।

23 जो कोई भी मुझ से बैर करता है वह मेरे पिता से भी बैर
करता है।

24 यदि मैंने उनके बीच में उन चमत्कारी कामों को प्रकट नहीं
किया होता जो कभी भी किसी ने भी नहीं किए, तो वे पाप के
दोषी नहीं ठहरते। तौभी, जैसा कि यह है, उन्होंने उन कामों

John 16:1

को देखा और मुझ से बैर रखा। उन्होंने मेरे पिता से भी बैर रखा।

25 हालाँकि, यह इसलिए घटित हुआ ताकि यह बातें पूरी हो जाएँ जो भविष्यद्वक्ता ने उनके पवित्रशास्त्र में लिखी हैं: 'उन्होंने बिना किसी कारण के मुझ से घृणा की।'

26 जब मैं मेरे पिता के पास से उसे तुम्हारे पास भेजूँगा जो तुम्हारी सहायता करेगा, तो वह लोगों को बताएगा कि मैं कौन हूँ। वह पवित्र आत्मा है, जो घोषणा करता है कि परमेश्वर के विषय में क्या सत्य है और वह मेरे पिता की ओर से निकलता है।

27 तुम को भी सबको मेरे बारे में इसलिए बताना है, क्योंकि तुम उस पहले दिन से ही मेरे साथ रहे हो जब मैंने अपना काम आरम्भ किया था।"

John 16:1

1 मैंने तुम को इन बातों के बारे में बता दिया जो घटित होंगी ताकि {जब वे घटित हों तो} तुम मुझ पर भरोसा करते रहो।

2 जो यहूदी मेरा विरोध करते हैं वे यहूदी सभास्थल में प्रवेश करने से तुम को प्रतिबंधित कर देंगे। तौभी {इससे भी बुरा कुछ घटित होगा।} वह समय आ रहा है जब जो तुम्हारी हत्या करेंगे वे सब लोग सोचेंगे कि ऐसा करने के द्वारा वे परमेश्वर को प्रसन्न कर रहे हैं।

3 वे ऐसे कामों को इसलिए करेंगे क्योंकि उन्होंने कभी नहीं जाना कि मैं वास्तव में कौन हूँ, और न यह कि मेरा पिता कौन है।

4 मैंने तुम को इन बातों के बारे में बता दिया जो घटित होंगी ताकि जब वे घटित हों, तो तुम स्मरण करो कि मैंने तुम को बता दिया था कि वे घटित होंगी। मैंने तुम को इनके बारे में उन आरम्भिक दिनों में नहीं बताया जब मैंने अपने काम को आरम्भ किया था, क्योंकि तब मैं तुम्हारे साथ ही था।

5 "अब मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तौभी अब तुम में से कोई भी मुझ से पूछ नहीं रहा है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ!

6 तुम बहुत उदास इसलिए हो क्योंकि मैंने तुम को ये बातें बता दीं।

7 फिर भी, अब मैं तुम को सच्ची जानकारी बताता हूँ: तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि मैं चला जाऊँ {उसकी तुलना में कि मैं ठहरा रहूँ}। {यह इसलिए सत्य है} क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह तुम्हारे पास नहीं आएगा जो तुम्हारी सहायता करेगा। हालाँकि, यदि मैं चला जाऊँ, तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।

8 जब वह आएगा जो सहायता करेगा, तो वह संसार में रहने वाले लोगों को उन पापों के विषय में {जो उन्होंने किए हैं} दोषी ठहराएगा। धर्मी नहीं होने के विषय में {वह उनको दोषी ठहराएगा}, और वह उनको {दोषी ठहराएगा} ताकि परमेश्वर उनका न्याय करे।

9 उनके पापों के विषय में {वह लोगों को इसलिए दोषी ठहराएगा}, क्योंकि उन्होंने मुझ पर भरोसा नहीं करने के द्वारा पाप किया।

10 धर्मी नहीं होने के विषय में {वह लोगों को इसलिए दोषी ठहराएगा}, क्योंकि मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा हूँ, और {उस उदाहरण के रूप में कि धर्मी कैसे बनना है} तुम मुझे फिर देख नहीं पाओगे।

11 {वह लोगों को दोषी ठहराएगा} कि परमेश्वर उनका न्याय करे, क्योंकि उसने {शैतान को, जो} इस संसार पर राज्य करता है, दंड दिया है।

12 मैं तुम को और बहुत सारी बातें बताना चाहता हूँ। हालाँकि, यदि मैं तुम को अभी बताऊँ, तो तुम उनको ग्रहण नहीं कर पाओगे।

13 जब पवित्र आत्मा आएगा, जो उन बातों की घोषणा करता है जो परमेश्वर के बारे में सत्य है, तो वह तुम को वह सारे सत्य समझने में सक्षम करेगा {जिसे जानने की तुम को आवश्यकता है}। {वह ऐसा इसलिए कर सकता है} क्योंकि वह अपने अधिकार से नहीं बोलेगा। बजाए इसके, वह वही बोलेगा जो भी वह परमेश्वर की ओर से सुनेगा, और वह तुम को समय से पहले ही उन बातों के बारे में बता देगा जो घटित होंगीं।

14 पवित्र आत्मा ने जो मुझ से सुना तुम को वही बताने के द्वारा
वह प्रकट करेगा कि मैं कितना महान हूँ।

15 जो कुछ मेरे पिता के पास है वह मेरा है। इसी कारण से मैंने
कहा कि पवित्र आत्मा तुम को वह बताएगा जो उसने मुझ से
सुना है।

16 थोड़े समय के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय
के बाद, तुम मुझे फिर से देखोगे"

17 तब उसके कुछ चेलों ने एक-दूसरे से पूछा, "यीशु के कहने
का क्या अर्थ है जब वह हम से कहता है कि 'थोड़े समय के
बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय के बाद, तुम मुझे
फिर से देखोगे'? और {उसके कहने का क्या अर्थ है जब वह
कहता है कि}, 'क्योंकि मैं अपने पिता के पास वापस जा रहा
हूँ'?"

18 इसलिए वे पूछते ही रहे कि "'थोड़े समय के बाद' का क्या
अर्थ है? हमें समझ नहीं आ रहा कि वह क्या कह रहा है।"

19 यीशु जान गया कि उसके चेले उससे और भी प्रश्न पूछना
चाहते थे। इसलिए उसने उनसे कहा, "तुम एक-दूसरे से पूछ
रहे हो कि मेरे कहने का क्या अर्थ था जब मैंने कहा कि 'थोड़े
समय के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, और थोड़े समय के बाद,
तुम मुझे फिर से देखोगे।'

20 मैं तुम से सच कह रहा हूँ: तुम रोओगे और विलाप करोगे,
परन्तु जो लोग संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं वे आनन्द
मनाएँगे। तुम अत्यन्त उदास रहोगे, परन्तु तुम उदास होने से
आनन्दित होने में परिवर्तित हो जाओगे।

21 एक स्त्री उस समय पीड़ा का अनुभव करती है जब वह एक
बालक को जन्म देती है, क्योंकि यह उसके लिए जन्म देने का
समय है। तौभी, वह बालक को जन्म देने के बाद भूल जाती है
कि उसने कष्ट सहा, क्योंकि वह इस बात के बारे में आनन्दित
है कि वह एक मानव को संसार में लेकर आई है।

22 इसी रीति से, यद्यपि तुम इस समय पर उदास हो, मैं तुम से
फिर से मिलूँगा, और तुम आनन्द करोगे, और कोई भी तुम को
आनन्द करने से रोकेगा नहीं।

23 जब तुम मुझ से फिर से मिलोगे, तो तुम मुझ से कुछ भी नहीं
पूछोगे। मैं तुम से सच कह रहा हूँ: मेरे प्रतिनिधियों के रूप में
तुम जो कुछ भी उससे निवेदन करोगे मेरा पिता तुम को देगा।

24 अब तक तुम ने मेरे प्रतिनिधियों के रूप में {मेरे पिता से}
कुछ भी निवेदन नहीं किया है। {मेरे पिता से कुछ भी} निवेदन
करो और तुम {जो भी निवेदन करोगे} वह प्राप्त करोगे।
परमेश्वर तुम को वह देगा ताकि तुम अधिकतम स्तर तक
आनन्दित हो जाओ।

25 मैंने तुम से यह बातें दृष्टांत वाली भाषा का उपयोग करते
हुए कहीं, परन्तु शीघ्र ही ऐसा समय आएगा जब मैं तुम से बात
करने के लिए फिर इस प्रकार की भाषा का उपयोग नहीं
करूँगा। बजाए इसके, मैं ऐसी भाषा का उपयोग करते हुए
तुम को अपने पिता के बारे में बताऊँगा जिसे तुम आसानी से
समझ सकोगे।

26 जब तुम मुझ से फिर से मिलोगे, तो तुम मेरे प्रतिनिधियों के
रूप में {परमेश्वर से कुछ भी} निवेदन करोगे, और मुझे मेरे
पिता से तुम्हारी ओर से माँगना नहीं पड़ेगा

27 क्योंकि मेरा पिता स्वयं ही तुम से प्रेम करता है क्योंकि तुम
मुझ से प्रेम करते हो और भरोसा करते हो कि मैं परमेश्वर की
ओर से आया हूँ।

28 मैं अपने पिता (परमेश्वर) की ओर से आया हूँ और इस
संसार में प्रवेश किया। मैं तुम को फिर से बता रहा हूँ कि मैं
इस संसार को छोड़ दूंगा और अपने पिता के पास वापस चला
जाऊँगा।"

29 उसके चेलों ने उत्तर दिया, "अंततः! अब तू उस भाषा का
उपयोग कर रहा है जिसे हम आसानी से समझ सकते हैं और
दृष्टांत वाली भाषा का नहीं।

30 हम अब समझ गए हैं कि तू सब कुछ जानता है। किसी को
भी तुझ से प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं है {क्योंकि तू पहले
से ही जानता है कि वह व्यक्ति क्या पूछेगा}। इसी कारण से
हम भरोसा करते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से यहाँ आया है"

31 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "अंततः अब तुम मुझ पर
भरोसा करते हो!

32 ध्यान दो! शीघ्र ही ऐसा समय आएगा, और वह समय
अतिशीघ्र आएगा, जब दूसरे लोग तुम को सब स्थानों में तितर-
बितर कर देंगे। तुम में से प्रत्येक अपने घर चला जाएगा, और
तुम मुझे अकेला छोड़ दोगे। हालाँकि, मैं अकेला इसलिए नहीं
होऊँगा, क्योंकि मेरा पिता सदा मेरे साथ रहता है।

33 मैंने तुम को यह बातें बता दीं जो घटित होंगी ताकि तुम
इसलिए शान्तिपूर्ण महसूस करो {क्योंकि तुम मेरे साथ जुड़े
हुए हो}। इस संसार में तुम को पीड़ित किया जाएगा, परन्तु
साहसी बनो! मैंने उन लोगों को पराजित कर दिया है जो
संसार में परमेश्वर का विरोध करते हैं!"

John 17:1

1 जब यीशु ने अपने चेलों को इन बातों के बारे में बताया जो
घटित होंगी, तो उसने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा और कहा, "हे
पिता, अब वह समय आ गया है {कि मैं दुःख उठाऊँ और मर
जाऊँ}। सब लोगों पर प्रकट कर कि मैं, अर्थात तेरा पुत्र,
कितना महान हूँ ताकि मैं भी सब लोगों पर प्रकट करूँ कि तू
कितना महान है।

2 {कृपया ऐसा कर} क्योंकि तू ने मुझे सब लोगों पर अधिकार
दिया है ताकि मैं उन सभी को योग्य बना सकूँ जिनको तूने मेरे
पास आने के लिए चुना है कि हमेशा {मेरे साथ स्वर्ग में}रहें।

3 सदा तक जीवित रहने का अर्थ यह है: तुझको जानना, जो
एकमात्र सच्चा परमेश्वर है , और मुझे, अर्थात यीशु मसीह को
जानना, जिसे तू ही ने संसार में भेजा है।

4 जब मैं पृथ्वी पर था तो मैंने सब लोगों पर प्रकट कर दिया है
कि तू कितना महान है। मैंने उस काम को पूरा करने के द्वारा
{ऐसा किया} जो तूने मुझे करने के लिए सौंपा था।

5 हे पिता, इस समय तेरी उपस्थिति में प्रकट कर कि मैं कितना
महान हूँ, उसी महानता के साथ जो तेरी उपस्थिति में मेरी उस
समय से पहले थी जब हम ने संसार की रचना की थी।

6 तू वास्तव में कौन है इसे मैंने उन मनुष्यों पर प्रकट कर दिया
है जिनको तूने मुझे संसार के लोगों में से दिया था। वे तेरे हैं
और तू ही ने उनको मुझे दिया था। उन्होंने तेरी शिक्षा का
पालन किया है।

7 इस समय वे जानते हैं कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह
तेरी ओर से ही आया है।

8 {वे इसे इसलिए जानते हैं} क्योंकि मैंने उनको वे शिक्षाएँ बता
दी हैं जो तूने मुझे बताई थीं। उन्होंने स्वयं ही उन शिक्षाओं को
ग्रहण भी कर लिया और उनको निश्चय है कि मैं तेरी ओर से
आया हूँ, और वे विश्वास करते हैं कि तू ही ने यहाँ मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं उन लोगों के लिए
प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ जो संसार में तेरा विरोध करते हैं।
बजाए इसके, मैं उन लोगों के लिए {प्रार्थना कर रहा हूँ}
जिनको तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे ही हैं।

10 सब चेले जो मेरे हैं वे तेरे हैं, और {सब चेले} जो तेरे हैं वे मेरे
हैं। वे सब लोगों पर प्रकट करते हैं कि मैं कितना महान हूँ।

11 अब मैं इस पापी संसार में और नहीं रहूँगा। हालाँकि, मेरे
चेले इसमें रहेंगे। मैं शीघ्र तेरे पास लौट आऊँगा। हे मेरे पिता,
जो अलग किए गए हैं, उनको अपनी उसी शक्ति से सुरक्षित
रख जो तूने मुझे दी थी, ताकि वे भी उसी रीति से जुड़े रहें जैसे
हम जुड़े हुए हैं।

12 उस समय के दौरान जब मैं उनके साथ था, मैंने उनको तेरी
उसी शक्ति से सुरक्षित रखा जो तूने मुझे दी थी। मैंने उनकी
रखवाली की, और उनमें से केवल एक ही अनन्तकाल के लिए
नष्ट हो जाएगा। {वही है} जिसे तूने अनन्तकाल के लिए नष्ट
होने को ठहराया है ताकि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो जाए।

13 इस समय मैं तेरे पास लौटने वाला हूँ। जबकि मैं इस पापी
संसार में हूँ तो मैंने इन बातों को बोला ताकि मैं उनको अपना
पूर्ण आनन्द प्रदान करूँ।

14 मैंने उनको तेरी शिक्षा बता दी है। {उसी प्रकार से जो लोग
संसार में तेरा विरोध करते हैं} उन्होंने उनसे बैर किया है
क्योंकि मेरी तरह, वे भी उनमें से नहीं हैं जो तेरा विरोध करते
हैं।

15 मैं यह निवेदन नहीं कर रहा हूँ कि तू मेरे चेलों को इस पापी
संसार में से निकाल ले। बजाए इसके, {मैं यह निवेदन कर रहा
हूँ} कि तू उनको उस दुष्ट, शैतान द्वारा हानि पहुँचाए जाने से
सुरक्षित रख।

John 18:1

16 मेरी तरह, वे भी उन लोगों में से नहीं हैं जो संसार में तेरा
विरोध करते हैं।

17 जो सत्य है {उसे जानने और उसके अनुसार जीवन व्यतीत
करने में सक्षम} करने के द्वारा तेरी सेवा करने के लिए मेरे
चेलों को अलग कर। तेरी शिक्षा वही है जो सत्य है।

18 मैं उनको संसार के लोगों के बीच में उसी रीति से भेज रहा
हूँ जैसे तूने मुझे उनके बीच में भेजा था।

19 मैं स्वयं को उनकी ओर से बलिदान स्वरूप अलग करता
हूँ ताकि जो सत्य है {उसे जानने और उसके अनुसार जीवन
व्यतीत करने} के द्वारा वे भी तेरी सेवा करने के लिए अपने
आप को अलग करें।"

20 अब यहाँ मैं केवल इन चेलों के लिए ही प्रार्थना नहीं कर रहा
हूँ, परन्तु मैं उन लोगों के लिए भी {प्रार्थना कर रहा हूँ} जो मुझ
पर उसके माध्यम से भरोसा करेंगे जो मेरे चेले बोलते हैं।

21 {मैं प्रार्थना करता हूँ} कि वे सब उसी रीति से जुड़ जाएँ जैसे
तू, मेरा पिता, और हम पूर्णरूप से जुड़े हुए हैं। {मैं प्रार्थना
करता हूँ} कि वे भी हम से जुड़ जाएँ ताकि संसार के लोग जान
लें कि तूने यहाँ मुझे भेजा है।

22 जिस प्रकार से तूने मेरा सम्मान किया है वैसे ही मैंने भी उन
लोगों का सम्मान किया है जो मुझ पर भरोसा करते हैं, जिससे
कि वे उसी रीति से जुड़ जाएँ जैसे हम जुड़े हुए हैं।

23 {इसका अर्थ है कि} मैं उनसे जुड़ा हुआ हूँ, और तू मुझ से
जुड़ा हुआ है। {मैंने ऐसा इसलिए किया है} ताकि वे पूर्णरूप
से एक साथ जुड़ जाएँ जिससे कि संसार के लोग जान लें कि
तूने यहाँ मुझे भेजा है और यह कि जिस प्रकार से तू मुझ से
प्रेम करता है उसी रीति से तू उन लोगों से भी प्रेम करता है जो
मुझ पर भरोसा करते हैं।

24 "हे मेरे पिता, मैं चाहता हूँ कि ये लोग जिनको तूने मुझे दिया
है मेरे साथ वहाँ रहें जहाँ मैं स्वर्ग में रहूँगा ताकि वे देख सकें
कि मैं कितना महिमामय हूँ। तूने मुझे महिमामय इसलिए
बनाया है क्योंकि तूने मुझ से उस समय से पहले ही प्रेम किया
था जब हम ने जगत की रचना की थी।

25 हे मेरे पिता, तू सदा वही करता है जो सही है, ये लोग जो
संसार में तेरा विरोध करते हैं जानते नहीं कि तू कौन है, परन्तु
मैं जानता हूँ कि तू कौन है। ये लोग जो मुझ पर भरोसा करते
हैं जानते हैं कि तूने यहाँ मुझे भेजा है।

26 मैंने उनको बता दिया है कि तू कौन है। मैं ऐसा ही करता
रहूँगा ताकि वे दूसरों से वैसे ही प्रेम करें जैसे तू मुझ से प्रेम
करता है और जिससे कि मैं उनके साथ जुड़ जाऊँ।"

John 18:1

1 यीशु के प्रार्थना करना समाप्त करने के बाद, वह अपने चेलों
के साथ किद्रोन नाले के पार चला गया। नाले के दूसरी तरफ
उन्होंने {जैतून के पेड़ों के} एक बगीचे में प्रवेश किया।

2 वह यहूदा ही था जो यीशु के विरोधियों की उसे बंदी बनाने
में सहायता करने वाला था। जहाँ यीशु था वह उस स्थान को
जानता था क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ अक्सर गया
था।

3 इसलिए रोमी सैनिकों और मंदिर के कुछ पहरुओं के समूह
को जिनको शासकीय याजकों और फरीसियों की ओर से
भेजा गया था यहूदा बगीचे में लेकर आया। उनके पास मशालें,
दीपक, और हथियार थे।

4 क्योंकि यीशु जानता था कि उसके साथ क्या घटित होने जा
रहा है, इसलिए वह आगे बढ़ा और सैनिकों तथा मंदिर के
पहरुओं से पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?"

5 उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, "नासरत के यीशु को।" यीशु
उनसे बोला, "मैं {वही व्यक्ति} हूँ।" (यहूदा उनके साथ में ही
खड़ा हुआ था। वही था जो यीशु के विरोधियों की उसे बंदी
बनाने में सहायता कर रहा था।)

6 जब यीशु ने उनसे कहा, "मैं {वही व्यक्ति} हूँ," तो वे पीछे हट
गए और अनायास ही भूमि पर गिर पड़े।

7 तब यीशु ने उनसे फिर से पूछा, "तुम किसे ढूँढ़ रहे हो?"
उन्होंने उत्तर दिया, "नासरत के यीशु को।"

8 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, “मैंने तुम से कह दिया कि मैं {वही व्यक्ति} हूँ। चूँकि मैं वही हूँ जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो, तो इन मनुष्यों को जाने दो।

9 (यह इसलिए घटित हुआ ताकि वे बातें जो उसने पिता से कही थीं वह पूरी हो जाएँ: “जिनको तूने मुझे दिया था उनमें से मैंने एक को भी नहीं खोया।”)

10 शमौन पतरस के पास एक छोटी तलवार थी। उसकी म्यान में से उसने उसे बाहर निकाला और उससे महायाजक के सेवक पर प्रहार किया, और उसका दाहिना कान काट दिया। उस सेवक का नाम मलखुस था।

11 तब यीशु पतरस से बोला, “अपनी तलवार को उसकी म्यान में वापस रख! मुझे निश्चय ही उस रीति से पीड़ित होना अवश्य है जिससे {पीड़ित होने की} मेरे पिता ने मेरे लिए योजना बनाई है!”

12 रोमी सैनिकों के समूह ने, यहूदी अगुवों की ओर से आए उनके अगुवों और मंदिर के कुछ पहरुओं के साथ, यीशु को पकड़ लिया और उसके हाथों को बाँध दिया।

13 तब वे पहले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह कैफा का ससुर था, और कैफा उस वर्ष का महायाजक था।

14 (वह कैफा ही था जिसने अन्य यहूदी अगुवों को सुझाव दिया था कि यह {रोमियों को उनको मारने देने की तुलना में} लोगों की ओर से एक मनुष्य का मरना बहुत बेहतर होगा।)

15 शमौन पतरस यीशु के पीछे-पीछे गया, और वैसा ही एक अन्य चेले ने भी किया। हन्ना महायाजक दूसरे चेले को जानता था, इसलिए {जब सैनिक और पहरुए} यीशु को वहाँ लेकर आए, तो उसे महायाजक के आँगन में प्रवेश करने दिया गया।

16 हालाँकि, पतरस को बाहर द्वार के पास रुकना पड़ा। इसलिए, वह चेला जो महायाजक को जानता था फिर से बाहर गया और उस दासी से बात की जो द्वार की रखवाली कर रही थी। तब उसे पतरस को लेकर {आँगन} में आने दिया गया।

17 वह दासी जो द्वार की रखवाली कर रही थी फिर पतरस से बोली, “तू निश्चय ही उस मनुष्य के चेलों में से एक है {जिसे उन्होंने बंदी बनाया है}!” उसने प्रतिउत्तर दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ!”

18 (यह ठंड का समय था, इसलिए महायाजक के सेवकों और मंदिर के पहरुओं ने आग जलाई हुई थी और उसके चारों ओर खड़े होकर अपने आप को गर्म कर रहे थे। पतरस भी वहाँ उनके साथ खड़ा होकर अपने आप को गर्म कर रहा था।)

19 तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के और वह उनको क्या शिक्षा दे रहा था इस बारे में प्रश्न किया।

20 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “मैंने सार्वजनिक रूप से उस हर एक जन से बात की {जो सुनेगा}। मैंने हमेशा यहूदी सभास्थलों और मंदिर में शिक्षा दी। {मैंने उन स्थानों में भी शिक्षा दी} जहाँ बहुत से यहूदी इकट्ठा होते हैं। मैंने कभी भी कुछ भी गुप्त रूप से नहीं कहा।

21 तुझे मुझ से नहीं पूछना चाहिए! उन लोगों से पूछ जिन्होंने वह सुना जो मैंने उनको सिखाया। वे निश्चित रूप से जानते हैं कि मैंने क्या कहा था।”

22 यीशु के यह कहने के बाद, मंदिर के पहरुओं में से एक ने जो उसके पास ही में खड़ा था उसे थप्पड़ मारा। उसने कहा, “तुझे महायाजक को इस तरह से उत्तर नहीं देना चाहिए!”

23 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “यदि जो मैंने कहा वह गलत था, तो मुझे बता कि वह क्या था। हालाँकि, यदि जो मैंने कहा वह सही था, तो तुझे मुझे थप्पड़ नहीं मारना चाहिए।”

24 तब हन्ना ने यीशु को कैफा, अर्थात दूसरे महायाजक के पास भेज दिया, जबकि यीशु के हाथ अभी भी बंधे हुए थे।

25 इसी बीच, शमौन पतरस अभी भी {आँगन में} खड़ा हुआ था और अपने आप को गर्म कर रहा था, जब किसी ने उससे कहा, “तू भी निश्चय ही उस मनुष्य के चेलों में से एक है जिसे उन्होंने बंदी बनाया है!” पतरस ने इसका इन्कार करते हुए कहा, “नहीं, मैं नहीं हूँ!”

26 महायाजक के सेवकों में से एक उस मनुष्य का सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काट दिया था। उसने पतरस से कहा,

John 19:1

"निश्चय ही मैंने तुझे {जैतून के पेड़ों के} बगीचे में उस मनुष्य के साथ देखा था जिसे उन्होंने बंदी बनाया है!"

27 तब पतरस ने फिर से इन्कार कर दिया {कि वह यीशु के साथ था}। {उसके ऐसा करने के बाद} तत्काल एक मुर्गे ने बाँग दी।

28 तब यहूदी अगुवे यीशु को कैफा के घर से रोमी राज्यपाल, पिलातुस के मुख्यालय में लेकर आए। (यह सुबह में भोर का समय था। यहूदी अगुवों ने पिलातुस के मुख्यालय में प्रवेश नहीं किया {क्योंकि पिलातुस यहूदी नहीं था। वे सोचते थे कि} यदि उन्होंने किसी गैर-यहूदी के घर में प्रवेश कर लिया, तो वे अपने आप को अशुद्ध कर लेंगे और फसह के पर्व के भोजन को खाने के लिए अयोग्य ठहरेंगे।)

29 इसलिए उनसे बात करने के लिए पिलातुस बाहर आया। उसने उनसे पूछा, "तुम इस मनुष्य पर क्या करने का दोष लगा रहे हो?"

30 यहूदी अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, "यदि यह मनुष्य एक अपराधी न होता, तो हम उसे तेरे पास लेकर नहीं आते!"

31 इसलिए पिलातुस उनसे बोला, "तुम स्वयं ही उसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था के द्वारा उसका न्याय करो।" यहूदी अगुवों ने प्रतिउत्तर दिया, "हम उसे मृत्युदंड देना चाहते हैं, परन्तु तेरा रोमी कानून हमें ऐसा करने से रोकता है।"

32 (ऐसा इसलिए घटित हुआ जिससे कि जो यीशु ने कहा था वह पूरा हो कि वह शीघ्र ही कैसे मरेगा।)

33 तब पिलातुस अपने मुख्यालय में भीतर चला गया। उसने सैनिकों को यीशु को उसके पास लेकर आने का आदेश दिया, और उसने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

34 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "क्या तू यह प्रश्न मुझ से इसलिए पूछ रहा है क्योंकि तू स्वयं से ऐसा सोचता है, या दूसरों ने तुझ से मेरे विषय में ऐसा कहा है?"

35 पिलातुस ने प्रतिउत्तर दिया, "मैं कोई यहूदी नहीं हूँ! तेरे ही देशवासी और शासकीय याजक तुझे मेरे पास लेकर आए हैं। तूने क्या गलत किया है?"

36 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "जिस राज्य पर मैं शासन करता हूँ वह इस पापी संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो यहूदी अगुवों को मुझे बंदी बनाने से रोकने के लिए मेरे सेवक लड़ते। परन्तु, जैसा कि यह है, जिस राज्य पर मैं शासन करता हूँ वह इस पापी संसार का नहीं है।"

37 तब पिलातुस ने उससे पूछा, "तो तू एक राजा है?" यीशु ने प्रतिउत्तर दिया, "तू स्वयं ही ऐसा कहता है। मैं इस संसार में इसीलिए जन्मा: और मैं इसलिए आया ताकि लोगों को वह बताऊँ जो परमेश्वर के बारे में सत्य है। हर एक जन जो उस पर विश्वास करता है जो परमेश्वर के बारे में सत्य है वह जो मैं कहता हूँ उसे स्वीकार करता है और उसका पालन भी करता है।"

38 पिलातुस ने उससे कहा, "कोई भी नहीं जानता कि वास्तव में सत्य क्या है!" पिलातुस के ऐसा कहने के बाद, वह बाहर चला गया और फिर से यहूदी अगुवों से बात की। उसने उनको बताया, "मैंने ऐसा कोई सबूत नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई नियम तोड़ा है।

39 हालाँकि, तुम यहूदियों की एक रीति है: फसह के पर्व के दौरान प्रत्येक वर्ष तुम मुझ से कहो, और मैं तुम्हारे लिए किसी को स्वतंत्र कर देता हूँ जो बंदीगृह में है। इसलिए क्या तुम मुझ से चाहते हो कि तुम्हारे लिए तुम्हारे राजा को स्वतंत्र कर दूँ?"

40 तब यहूदी अगुवे फिर से चिल्लाने लगे, "नहीं, इस मनुष्य को स्वतंत्र मत कर, परन्तु बरअब्बा को स्वतंत्र कर!" (बरअब्बा एक क्रांतिकारी था।)

John 19:1

1 अतः उस समय पिलातुस ने {अपने सैनिकों को आदेश दिया कि} यीशु को ले जाएँ और कोड़ों से उसकी पिटाई करें।

2 सैनिकों ने कुछ शाखाएँ भी ले लीं जिन पर काँटें थे और उनको एक साथ बुन दिया कि कुछ मुकुट जैसा बनाएँ। फिर उन्होंने उसे यीशु के सिर पर रख दिया और उसे एक बैंगनी बागा पहना दिया {ताकि उसका ठठ्ठा करें}।

3 वे लगातार उसके पास जा-जाकर और यह कह-कहकर
उसका उपहास करते रहे, "हे यहूदियों के राजा, हम तुझे
प्रणाम करते हैं!" और उसके मुँह पर थप्पड़ मारते रहे।

4 पिलातुस फिर से बाहर आया और यहूदी अगुवों से कहा,
"देखो, मैं उसे तुम्हारे लिए बाहर लाने पर हूँ ताकि तुम जान
सको कि मैंने ऐसा कोई सबूत नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई
नियम तोड़ा है।"

5 अतः यीशु बाहर आ गया। वह काँटों वाली शाखाओं से बने
उस मुकुट और बैंगनी बागे को पहने हुए था। पिलातुस ने
यहूदी अगुवों से कहा, "देखो, वह मनुष्य यहाँ है!"

6 जब शासकीय याजकों और मंदिर के पहरुओं ने यीशु को
देखा, तो वे चिल्लाए, "उसे क्रूस पर चढ़ा! उसे क्रूस पर चढ़ा!"
पिलातुस उनसे बोला, "तुम स्वयं ही उसे ले जाओ और उसे
क्रूस पर चढ़ा दो! जहाँ तक मेरी बात है, मैंने ऐसा कोई सबूत
नहीं पाया कि इस मनुष्य ने कोई नियम तोड़ा है।"

7 यहूदी अगुवों ने पिलातुस को प्रतिउत्तर दिया, "हमारी निश्चित
व्यवस्था है जो कहती है कि उसे मर जाना चाहिए, क्योंकि
उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था।"

8 जब पिलातुस ने यह सुना, तो वह पहले से भी और अधिक
डर गया {कि उसके साथ क्या घटित होगा यदि वह यीशु को
मरने का दंड दे}।

9 उसने फिर एक बार अपने मुख्यालय में प्रवेश किया {और
सैनिकों को यीशु को पीछे की तरफ भीतर लेकर आने का
आदेश दिया। तब} उसने यीशु से पूछा, "तू कहाँ से आया है?"
हालाँकि, यीशु ने उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

10 इसलिए पिलातुस ने उससे कहा, "तुझे मुझे उत्तर देना
चाहिए! तू निश्चय ही जानता है कि मेरे पास तुझे स्वतंत्र करने
का अधिकार है, और मेरे पास तुझे क्रूस पर चढ़ा देने का
अधिकार भी है!"

11 यीशु ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "जो एकमात्र अधिकार तेरे
पास मुझ पर है वह वही अधिकार है जो तुझे परमेश्वर ने प्रदान
किया है। इसलिए जो मनुष्य मुझे तेरे पास लेकर आया है
उसने जो तू कर रहा है उसकी तुलना में और भी बुरा पाप
किया है।"

12 उसी क्षण से, पिलातुस यीशु को स्वतंत्र करने का प्रयास
करता रहा। हालाँकि, यहूदी अगुवे चिल्लाने लगे, "यदि तू इस
मनुष्य को छोड़ दे, तो तू कैसर के प्रति वफादार नहीं! जो कोई
भी राजा होने का दावा करता है वह कैसर का विरोध करता
है।"

13 इसलिए जब पिलातुस ने यह सुना, तो उसने यीशु को बाहर
लाने के लिए {अपने सैनिकों को आदेश दिया}। फिर
पिलातुस {निर्णय की घोषणा करने के लिए} उस सिंहासन पर
बैठ गया जहाँ से वह आमतौर पर निर्णयों की घोषणा किया
करता था। यह वह स्थान था जिसे लोग "चबूतरा" कहते थे, जो
यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा में "गब्बता" था।

14 (अब यह {फसह के पर्व से पहले वाला दिन था, जो कि} वह
दिन था जब यहूदी लोग पर्व के लिए तैयारी करते थे। यह
लगभग दोपहर का समय था।) पिलातुस ने यहूदी अगुवों से
कहा, "देखो, तुम्हारा राजा यहाँ है!"

15 वे चिल्लाए, "उसकी हत्या कर! उसकी हत्या कर! उसे क्रूस
पर चढ़ा दे!" पिलातुस ने यह कहने के द्वारा उनका {उपहास
किया}, "क्या तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाने के लिए मुझे
{मेरे सैनिकों को आदेश देना} चाहिए?" शासकीय याजकों ने
प्रतिउत्तर दिया, "कैसर ही हमारा एकमात्र राजा है!"

16 फिर, जो उन्होंने कहा था उसके कारण, पिलातुस ने यीशु
को क्रूस पर चढ़ा देने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दे
दिया। फिर वे सैनिक यीशु को ले गए {ताकि उसे क्रूस पर
चढ़ा दें}।

17 यीशु अपने क्रूस को स्वयं ही उठाए हुए, उस स्थान को जाने
के लिए बाहर निकला जिसे लोग "खोपड़ी का स्थान" कहते
हैं, जो यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा में "गुलगुता"
था।"

18 उस स्थान में सैनिकों ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। उन्होंने दो
अन्य मनुष्यों को भी उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया। यीशु की
दोनों तरफ एक-एक मनुष्य था, इसलिए यीशु उनके बीच में
था।

19 पिलातुस ने एक सूचना लिखने के लिए भी {किसी को
आदेश दिया} और उसे यीशु के क्रूस पर बाँध दिया। {उस

John 19:1

व्यक्ति ने} उस पर लिखा, 'नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।'

20 बहुत से यहूदियों ने उस सूचना को पढ़ा क्योंकि जहाँ सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था वह स्थान यरूशलेम नगर के समीप था और {क्योंकि} किसी ने सूचना को तीन भाषाओं में लिखा था, जो कि यहूदियों, रोमियों, और यूनानियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ थीं।

21 शासकीय यहूदी याजकों ने पिलातुस के पास लौट कर कहा, "तुझे उस सूचना में यह नहीं लिखना चाहिए था, 'यहूदियों का राजा।' बजाए इसके, {तुझे लिखना चाहिए था,} 'इस मनुष्य ने कहा था कि वह यहूदियों का राजा है'।"

22 पिलातुस ने प्रतिउत्तर दिया, "जो मैंने सूचना में लिखने के लिए {सैनिकों को आदेश दिया था} वह वही है जो उन्होंने लिखा है। {मैं इसे बदलूँगा नहीं।}"

23 सैनिकों द्वारा यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिए जाने के बाद, उन्होंने उसके कपड़े ले लिए और उनको चार बराबर भागों में बाँट लिया, अर्थात प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग। {हालाँकि, उन्होंने उसके} कुर्ते को {अलग रखा}। बुनाई करने वाले ने उस कुर्ते को ऊपर से लेकर नीचे तक कपड़े के एक टुकड़े से बुना था जिसमें कोई सिलाई नहीं थी।

24 इसलिए सैनिकों ने एक-दूसरे से कहा, "आओ हम इस कुर्ते को फाड़ें नहीं। बजाए इसके, आओ हम जुआ खेलने के द्वारा निर्धारित करें कि इसको कौन रखेगा {और जीतने वाले को इसे दे दें}।" यह इसलिए घटित हुआ ताकि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो: "उन्होंने मेरे कपड़ों को आपस में बाँट लिया। मेरे कपड़ों के लिए उन्होंने जुआ खेला।" इसी कारण से सैनिकों ने इन कामों को किया।

25 यीशु की माता, उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी ये सब उस क्रूस के पास खड़े हुए थे जिस पर वह लटका हुआ था।

26 जब यीशु ने अपनी माँ को {वहाँ खड़े हुए} देखा और चेले यूहन्ना को जिससे यीशु प्रेम करता था उसके पास खड़े हुए देखा, तो वह अपनी माँ से बोला, "हे महोदया, यहाँ वह है जो तेरी देखभाल वैसे ही करेगा जैसे कोई पुत्र करे।"

27 आगे, उसने यूहन्ना से कहा, "यहाँ वह है जिसकी देखभाल तुझे अपनी माँ की तरह करनी है!" उसी क्षण से, यूहन्ना उसे अपने घर में रहने के लिए ले गया।

28 थोड़ी देर के बाद, क्योंकि यीशु जानता था कि वह सब कुछ पहले से ही कर चुका है जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे भेजा था, {और} पवित्रशास्त्र {की एक और भविष्यद्वाणी} को पूरा करने के लिए उसने कहा, "मैं प्यासा हूँ!"

29 किसी ने वहाँ ओछे दाखरस से भरा मर्तबान रखा हुआ था {और यीशु को प्यास लगी थी}। इसलिए सैनिकों ने जूफा के पौधे से सरकंडा लिया और उस पर एक पनसोख्ता रख दिया। {तब उन्होंने उस पनसोख्ते को} ओछे दाखरस में डुबोया और उसे यीशु के मुँह के पास कर दिया।

30 अतः यीशु ने ओछे दाखरस को पिया और फिर कहा, "मैंने {वह सब कुछ जो मैं यहाँ करने आया था} पूरा कर लिया!" और उसने अपना सिर झुकाया और स्वेच्छा से मर गया।

31 तब यहूदी अगुवों ने पिलातुस से विनती की {कि अपने सैनिकों को आदेश दे कि} क्रूसों पर लटके हुए तीनों मनुष्यों की टाँगों को तोड़ दें {जिससे वे मनुष्य और भी जल्दी मर जाएँगे} और उनके शवों को उतार दें ताकि यहूदियों के विश्रामदिन में वे शव क्रूसों पर ही न टंगे रहें। {उन्होंने यह विनती इसलिए की} क्योंकि यह वह दिन था जब यहूदी लोग फसह के पर्व के लिए और विश्रामदिन की तैयारी करते थे {और उन दिनों में मृत शवों को क्रूसों पर छोड़ देना यहूदी व्यवस्था का उल्लंघन करता था}। (चूँकि अगला दिन भी विश्राम का दिन था, इसलिए वह एक बहुत महत्वपूर्ण दिन था।)

32 इसलिए सैनिक आए और उस पहले मनुष्य की टाँगों को तोड़ दिया, जिसे यीशु के समय में ही क्रूस पर चढ़ाया गया था। फिर उन्होंने दूसरे मनुष्य की {टाँगों को तोड़ दिया}।

33 हालाँकि, जब वे यीशु के पास आए, तो उन्होंने देखा कि वह पहले से ही मर चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगों को नहीं तोड़ा।

34 बजाए इसके, सैनिकों में से एक ने यीशु की बगल में भाला घोंप दिया, और उसी समय {घाव में से} लहू और पानी निकल पड़ा।

John 20:1

35 (मैं, यूहन्ना, ही वह व्यक्ति हूँ जिसने यह घटित होते हुए देखा
और इसके बारे में गवाही दी और जो गवाही मैंने दी वह सत्य
है। मुझे निश्चय है कि जो मैं कह रहा हूँ वह सत्य है; मैं यह
इसलिए कहता हूँ ताकि तुम भी यीशु पर भरोसा करो।)

36 {यीशु के शव के साथ} यह बातें घटित हुईं जिससे कि
पवित्रशास्त्र की {यह भविष्यद्वाणी} पूरी हो जाए: "कोई भी
उसकी हड्डियों में से किसी को नहीं तोड़ने पायेगा।"

37 {उन्होंने} भी पवित्रशास्त्र {की दूसरी भविष्यद्वाणी} को
{पूरा किया}। यह कहती है: "जिसे उन्होंने बेधा उसी मनुष्य
पर वे दृष्टि करेंगे।"

38 इन बातों के घटित होने के बाद, यूसुफ ने, जो वास्तविक
रूप से अरमतिया नगर का रहने वाला मनुष्य था, पिलातुस से
यीशु के शव को उसे लेकर जाने की अनुमति देने के लिए
विनती की। {उसने ऐसा इसलिए किया} क्योंकि वह यीशु का
चेला था। हालाँकि, उसने किसी को यह नहीं बताया था,
क्योंकि वह अन्य यहूदी अगुवों से डरता था। पिलातुस ने
यूसुफ को यीशु के शव को लेकर जाने की अनुमति दे दी,
इसलिए यूसुफ ने जाकर वैसा ही किया।

39 नीकुदेमुस भी आया। {वह वही मनुष्य था} जो एक बार रात
के समय आया था और यीशु से {बातें की थीं}। वह लोहबान
और एलवा मसालों का मिश्रण लेकर आया {ताकि यीशु के
शव को गाड़ने के लिए तैयार करें}। उन मसालों को वजन
लगभग 33 किलोग्राम था।

40 उन्होंने यीशु के शव को लेकर मलमल के कपड़े की पट्टियों
को उसके चारों ओर लपेट दिया और {लोहबान और एलवा
के} मसालों को {कपड़े की पट्टियों के नीचे} लगा दिया।
{उन्होंने ऐसा} शवों को गाड़ने की यहूदियों की रीति के
अनुसार किया।

41 (जहाँ सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था वहाँ उस
स्थान के निकट ही एक वाटिका थी। उस वाटिका में एक नई
बनी हुई गाड़ने की गुफा थी। किसी ने भी अभी तक उस गुफा
में किसी को भी नहीं गाड़ा था।)

42 इसलिए उन्होंने यीशु के शव को उस कब्र में रख दिया
क्योंकि वह निकट ही थी और क्योंकि वह वही दिन था जब
यहूदी लोग फसह के पर्व के लिए तैयारी करते थे {इसलिए
उनको सूर्य अस्त होने से पहले ही शव को गाड़ना पड़ा}।

John 20:1

1 रविवार की सुबह भोर में, जबकि अभी अंधेरा ही था, मरियम
मगदलीनी कब्र पर आई {जहाँ उन्होंने यीशु को गाड़ा था}।
उसने देखा कि किसी ने कब्र के प्रवेशद्वार से पत्थर को हटा
दिया था।

2 इसलिए वह उस ओर भागी जहाँ शमौन पतरस और दूसरा
चेला, यूहन्ना, जिससे यीशु प्रेम करता था, {रह रहे थे} उसने
उनको बताया, "कुछ लोगों ने प्रभु यीशु के शव को कब्र में से
हटा दिया है, और हम नहीं जानते कि उन्होंने उसे कहाँ रखा
है!"

3 जब उन्होंने यह सुना, तो पतरस और यूहन्ना जहाँ पर रह रहे
थे वहाँ से निकलकर कब्र पर गए।

4 वे दोनों ही दौड़ रहे थे, परन्तु यूहन्ना पतरस से तेज दौड़कर
कब्र पर उससे पहले पहुँच गया।

5 जब यूहन्ना ने झुककर {कब्र के भीतर देखा}, तो उसने सनी
के कपड़े की उन पट्टियों को {जिनको उन्होंने यीशु के शव के
चारों ओर लपेटा था} वहाँ पड़े देखा जहाँ उसका शव रखा
गया था, परन्तु वह कब्र के भीतर नहीं गया।

6 यूहन्ना के पीछे-पीछे शमौन पतरस दौड़ रहा था। वह भी वहाँ
पहुँच गया और कब्र के भीतर गया। उसने भी सनी के कपड़े
की पट्टियों को वहाँ पड़े देखा जहाँ यीशु का शव रखा गया था।

7 पतरस ने उस कपड़े को भी देखा जिसे किसी ने यीशु के सिर
के चारों ओर लपेटा था। {वह} सनी के कपड़े की पट्टियों के
साथ नहीं पड़ा था। बजाए इसके, किसी ने उसे तह लगाकर
उनसे अलग कर दिया था।

8 तब यूहन्ना, वही अन्य चेला जो पतरस से पहले कब्र पर पहुँच
गया था, वह भी भीतर गया। उसने इन वस्तुओं को देखा और
विश्वास किया {कि यीशु फिर से जीवित हो गया है}।

John 20:1

9 (उस समय तो वे नहीं समझे जो बात भविष्यद्वक्ताओं ने उस
पवित्रशास्त्र में लिखी थी जो कहती है कि यीशु को मरना था
और फिर से जीवित होना था।)

10 फिर वे चेले उस स्थान में लौट गए जहाँ वे {यरूशलेम में}
रह रहे थे।

11 मरियम मगदलीनी कब्र के बाहर खड़ी होकर रोती रही।
जिस समय वह रो रही थी, तो उसने झुककर कब्र के भीतर
{देखा}।

12 उसने सफेद कपड़े पहने हुए दो स्वर्गदूतों को देखा। {वे}
उस स्थान में बैठे हुए थे जहाँ लोगों ने यीशु के शव को रखा
था। एक स्वर्गदूत उस स्थान में बैठा हुआ था जहाँ यीशु का
सिर था। दूसरा स्वर्गदूत उस स्थान में बैठा हुआ था जहाँ यीशु
के पाँव थे।

13 उन्होंने उससे पूछा, "हे महोदया, तू क्यों रो रही है?" वह
उनसे बोली, "{मैं इसलिए रो रही हूँ} क्योंकि कुछ लोगों ने मेरे
प्रभु यीशु के शव को {इस कब्र से} हटा दिया है, और मैं नहीं
जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है!"

14 उसके ऐसा कहने के बाद, उसने मुड़कर किसी को वहाँ
खड़े देखा। {वह यीशु था,} परन्तु वह उसे पहचान नहीं पाई।

15 उसने उससे पूछा, "हे महोदया, तू क्यों रो रही है? तू किसे
ढूँढ़ रही है?" उसने सोचा कि जो व्यक्ति उससे बात कर रहा
है वह माली है, इसलिए वह उससे बोली, "हे महोदय, यदि तू
ही यीशु के शव को उठाकर ले गया है, तो मुझे बता दे कि तूने
उसे कहाँ रखा है। मैं उसे ले लूँगी {और उसे फिर से गाड़
दूँगी}।"

16 यीशु ने यह कहकर {उसे उसके नाम से पुकारा}, "हे
मरियम!" वह {फिर से उसकी ओर मुड़ी और} उससे कहा,
"रब्बूनी!" (जिसका अर्थ यहूदियों के द्वारा बोली जाने वाली
भाषा में "गुरु" होता है)।

17 यीशु उससे बोला, "मेरे समीप आने से रुक जा, क्योंकि मैं
अभी तक मेरे पिता {के साथ रहने के लिए स्वर्ग} नहीं लौटा
हूँ। चेलों के पास, और मेरे भाइयों के पास जा, और उनको
बता कि मैं मेरे परमेश्वर और पिता {के साथ रहने के लिए
स्वर्ग} लौटने पर हूँ, जो तुम्हारा भी परमेश्वर और पिता है।"

18 मरियम मगदलीनी यीशु के चेलों के पास गयी और उनको
बताया, "मैंने प्रभु यीशु को देखा है!" {उसने} उनको वह भी
बताया जो यीशु ने उससे बोला था।।

19 उसी रविवार के दिन शाम को, चेलों ने उस स्थान के द्वारों
को बंद किया हुआ था जहाँ वे रह रहे थे, क्योंकि वे यहूदी
अगुवों से डरे हुए थे। अचानक यीशु आ पहुँचा और उनके
बीच में खड़ा हो गया। वह उनसे बोला, "परमेश्वर तुम को
शान्ति प्रदान करे!"

20 उसके ऐसा कहने के बाद, उसने अपने चेलों को वह घाव
दिखाए जो उसके हाथों में और बगल में थे। जब उन्होंने प्रभु
यीशु को देखा तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए!

21 तब यीशु दूसरी बार उनसे बोला, "परमेश्वर तुम को शान्ति
प्रदान करे! मैं तुम को {संसार में} भेज रहा हूँ जिस प्रकार से
मेरे पिता ने मुझे भेजा था।"

22 उसके ऐसा कहने के बाद, यीशु ने उन पर फूँका और कहा,
"पवित्र आत्मा ग्रहण करो।

23 यदि तुम किसी के पापों को क्षमा करते हो, तो परमेश्वर भी
उस व्यक्ति को उन पापों के लिए क्षमा कर देगा। यदि तुम
किसी के पापों को क्षमा न करो, तो परमेश्वर भी उस व्यक्ति
को उन पापों के लिए क्षमा नहीं करेगा।"

24 बारह चेलों में से एक, थोमा, जिसे वे 'जुड़वाँ' कहते थे,
उसके अन्य चेलों के बीच में तब वहाँ नहीं था जिस समय यीशु
उनके बीच में था।

25 अन्य चेलों ने थोमा को बताया, "हम ने प्रभु यीशु को देखा
है!" हालाँकि, वह उनसे बोला, "मैं तुम पर तभी विश्वास करूँगा
यदि मैं उसके हाथों में छेदों को देखूँ जो कीलों के कारण से
हुए थे और अपनी उँगलियाँ उनमें डालूँ और यदि मैं अपना
हाथ उसके बगल के घाव में डालूँ {जो भाले से किया गया
था}।"

26 आठ दिन के बाद, यीशु के चेले फिर से घर के भीतर थे,
और इस समय थोमा उनके साथ था। यद्यपि उन्होंने द्वारों को
बंद किया हुआ था, यीशु आया और उनके बीच में खड़ा हो
गया। उसने उनसे कहा, "परमेश्वर तुम को शान्ति प्रदान करे!"

John 21:1

27 फिर उसने थोमा से कहा, “अपनी उंगली को यहाँ छेदों में
डाल, और मेरे हाथों के छेदों को देख, और अपना हाथ
बढाकर मेरे बगल के घाव में डाल! संदेह करना बंद कर {कि
मैं फिर से जीवित हो गया हूँ}। बजाए इसके, विश्वास कर {कि
यह सत्य है}!”

28 थोमा ने प्रतिउत्तर दिया, “तू ही मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर
है!”

29 यीशु उससे बोला, “अब तू विश्वास करता है {कि मैं फिर से
जीवित हो गया हूँ} क्योंकि तू मुझे देखता है। परमेश्वर {निश्चय
ही} उनको आशीष देगा जिन्होंने मुझे नहीं देखा परन्तु तौभी
विश्वास करते हैं {कि मैं फिर से जीवित हो गया हूँ}”

30 उन दिनों यीशु ने और भी बहुत से चमत्कारी चिन्हों को
प्रकट किया जिस समय उसके चेले उसके साथ थे, {परन्तु}
मैंने उनके बारे में इस पुस्तक में नहीं लिखा।

31 फिर भी, मैंने इस पुस्तक में उन चिन्हों के बारे में लिखा है
जिससे कि तुम भरोसा करो कि यीशु ही मसीह, अर्थात
परमेश्वर का पुत्र है। {मैंने उन बातों के विषय में भी लिखा है}
ताकि, {यीशु ही मसीह है} इस पर भरोसा करने के द्वारा, तुम
को उसके माध्यम से अनन्त जीवन प्राप्त हो।

John 21:1

1 इन बातों के घटित होने के बाद, यीशु फिर से अपने चेलों पर
तिबिरियास झील के किनारे पर प्रकट हुआ, {जिसे गलील की
झील के नाम से भी जाना जाता है}। वह उन पर इस प्रकार से
प्रकट हुआ:

2 शमौन पतरस, थोमा (जिसे वे ‘जुड़वाँ’ कहते थे), नतनएल
(जो काना का रहने वाला था, जो गलील प्रान्त में एक नगर है),
जब्दी के पुत्र (याकूब और यूहन्ना), और यीशु के दो अन्य चेले
एक साथ थे।

3 शमौन पतरस अपने साथ के दूसरे चेलों से बोला, “मैं
मछलियाँ पकड़ने जा रहा हूँ।” वे उससे बोले, “हम भी तेरे साथ
जाएँगे।” वे जाकर नाव पर चढ़ गए {और मछली पकड़ने
लगे}, परन्तु उस रात वे कोई मछली नहीं पकड़ पाए।

4 अगली सुबह भोर में यीशु झील के किनारे पर खड़ा हो गया,
परन्तु चेले जो मछली पकड़ रहे थे नहीं जानते थे कि वह यीशु
था।

5 तब यीशु ने उनको पुकारा, “हे प्रिय मित्रों, क्या तुम्हारे पास
कोई मछली नहीं है, क्या तुम्हारे पास है?” उन्होंने प्रतिउत्तर
दिया, “हमारे पास नहीं है।”

6 वह उनसे बोला, “नाव की दाहिनी ओर अपना जाल डालो
और तुम को मछलियाँ मिलेंगी।” इसलिए उन्होंने वैसा ही
किया, और उन्होंने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं कि वे जाल
को {नाव पर} खींचने में सक्षम नहीं हुए।

7 मैं, वही चेला जिससे यीशु प्रेम करता था, तब पतरस से बोला,
“यह तो प्रभु यीशु है!” अतः जब शमौन पतरस ने यह सुना, तो
उसने अपना अंगरखा पहन लिया (जो उसने काम करने के
लिए उसे उतार दिया था) और {तैरकर किनारे पर जाने के
लिए} पानी में कूद गया।

8 बाकी के चेले भी जो मछलियाँ पकड़ रहे थे वे नाव से किनारे
पर आए, जबकि वे मछलियों से भरे हुए जाल को {नाव के
पीछे-पीछे} खींच रहे थे। (वे किनारे से दूर नहीं थे, केवल 90
मीटर दूर थे।)

9 जब वे किनारे पर पहुँचे, तो उन्होंने आग देखी {जो यीशु ने
तैयार की थी} और उस पर एक मछली पक रही थी। {वहाँ}
एक रोटी भी थी।

10 यीशु उनसे बोला, “{यहाँ} उन मछलियों में से कुछ लेकर
आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं!”

11 इसलिए शमौन पतरस {नाव पर} वापस गया और जाल को
किनारे पर खींच लाया। {वह} 153 बड़ी मछलियों से भरा
हुआ था। भले ही वहाँ बहुत सारी मछलियाँ थीं, तौभी जाल
नहीं फटा।

12 यीशु उनसे बोला, “{यहाँ} आओ और नाश्ता कर लो!” चेलों
में से कोई भी इतना साहसी नहीं था कि उससे पूछ ले कि वह
कौन था। वे जानते थे कि वह प्रभु यीशु था।

13 यीशु ने आकर रोटी ली और वह उनको दी। वैसा ही उसने
मछली के साथ भी किया।

14 (यह तीसरी बार था कि परमेश्वर द्वारा उसे फिर से जीवित
कर देने के बाद यीशु चेलों पर प्रकट हुआ था।)

15 जब उन्होंने नाश्ता करना समाप्त कर लिया, तो यीशु ने
शमौन पतरस से पूछा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ
से इनकी तुलना में अधिक प्रेम करता है {दूसरे लोग जो मुझ
से प्रेम करते हैं}?" पतरस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हाँ, हे प्रभु,
तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" यीशु उससे बोला,
"उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते हैं।"

16 यीशु ने उससे दूसरी बार पूछा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र,
क्या तू मुझ से प्रेम करता है?" उसने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हाँ,
हे प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" यीशु उससे
बोला, "उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते हैं।"

17 यीशु ने उससे तीसरी बार पूछा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र,
क्या तू मुझ से प्रेम करता है?" पतरस उदास हो गया क्योंकि
यीशु ने उससे तीसरी बार पूछा था कि यदि वह उससे प्रेम
करता था। पतरस ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हे प्रभु, तू तो सब
कुछ जानता है। तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" यीशु
उससे बोला, "उनकी देखभाल कर जो मुझ पर भरोसा करते
हैं।

18 मैं तुझ से सच कह रहा हूँ: जब तू जवान था, तो तू अपने
कपड़े स्वयं पहन लेता था, और जहाँ कहीं तू जाना चाहता था
वहाँ तू जाता था। हालाँकि, जब तू बूढ़ा हो जाएगा, तो तू अपने
हाथों को अपने शरीर से दूर बढ़ाएगा, और कोई अन्य तुझे
कपड़े पहनाएगा और तुझे वहाँ लेकर जाएगा जहाँ तू जाना
नहीं चाहेगा।"

19 (यीशु ने यह संकेत करने के लिए कहा कि पतरस कैसे
मरेगा जिससे कि लोगों पर प्रकट हो कि परमेश्वर कितना
महान है)। फिर यीशु उससे बोला, "आकर मेरा चेला बन!"

20 जब पतरस पीछे मुड़ा तो उसने यूहन्ना को देखा, वही चेला
जिससे यीशु प्रेम करता था, वह उनके पीछे-पीछे आ रहा था।
वह यूहन्ना ही था जो {यीशु के मरने से पहले} रात्रिभोज के
समय यीशु की ओर झुका था और पूछा था, "हे प्रभु, कौन तुझे
धोखा देने जा रहा है?"

21 इसलिए जब पतरस ने यूहन्ना को देखा, तो उसने यीशु से
पूछा, "हे प्रभु, इस मनुष्य के साथ क्या घटित होने जा रहा है?"

22 यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे लौटने तक
लगातार जीवित ही रहे, तो यह तेरी चिंता का विषय नहीं है!
जहाँ तक तेरी बात है, {लगातार} मेरा चेला बना रह!"

23 क्योंकि {यीशु ने ऐसा कहा था}, इसलिए यह अफवाह
विश्वासियों के बीच दोहराई गई थी कि चेला यूहन्ना नहीं मरेगा।
हालाँकि, यीशु ने पतरस से यह नहीं बोला था कि यूहन्ना नहीं
मरेगा। बजाए इसके, उसने कहा था, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे
लौटने तक लगातार जीवित ही रहे, तो यह तेरी चिंता का विषय
नहीं है!"

24 मैं, यूहन्ना, ही वह चेला हूँ जो इन सब बातों के बारे में गवाही
दे रहा है, और उनको मैंने इस पुस्तक में लिख दिया है। हम
जानते हैं कि जो गवाही मैंने दी है वह सच्ची है।

25 यीशु ने और भी बहुत से काम किए कि यदि लोग उनमें से
हर एक को लिख दें, तो मैं कल्पना करता हूँ कि सारा संसार
भी इतना पर्याप्त बड़ा नहीं होगा कि उन पुस्तकों को समाहित
कर सके जो वे लोग उनके बारे में लिखेंगे।